Semester –II: THEORY

Paper Name

Paper - 6 TEACHING APPROACHES AND STRATEGIES

Unit: - 1 Teaching principles and techniques (शिक्षण सिद्धांत और तकनीक)

Unit :– 1-1Stages of learning – Acquisition, maintenance, fluency and generalization (सीखने के चरण – अधिग्रहण (अर्जन) , रखरखाव, प्रवाह और सामान्यीकरण) :– क्रो एंड क्रो, 1975 – ''सीखना आदत, ज्ञान और अभिवृत्ति का अर्जन है।'' इसमें चीजों को करने के नए तरीके शामिल हैं और यह बाधाओं को दूर करने या नई स्थितियों के लिए व्यक्ति के प्रयास में संचालित होता है। यह व्यवहार में प्रगतिशील परिवर्तनों का प्रतिनिधित्व करता है और आगे व्यक्ति को लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए रुचि को संतुष्ट करने में सक्षम बनाता है।

Stages of learning(सीखने के चरण) :–

1. अधिग्रहण (Acquisition) :– इस चरण के दौरान, बच्चे को पहली बार एक नया कार्य पेश किया जाता है। प्रारंभ में, आप देखेंगे कि बच्चा गलतियाँ कर रहा है और समय के साथ, वह गतिविधि को उच्च स्तर की सटीकता के साथ करना सीखती है। इस चरण के दौरान, छात्र–शिक्षक की उच्च स्तरीय बातचीत आवश्यक है क्योंकि बच्चा एक नया कार्य सीखने की प्रक्रिया में है।

2. प्रवाह (fluency) :– एक बार जब बच्चा गतिविधि को उच्च स्तर की सटीकता के साथ करना सीख जाता है, तो आपको प्रवाह के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता होती है। बच्चे स्वतंत्र रूप से काम करते हैं और उन्हें अभ्यास करने के भरपूर अवसर प्रदान किए जाते हैं। दुर्भाग्य से, इनमें से कई गतिविधियाँ जो प्रवाह को बढ़ाने में मदद करती हैं, दोहराई जाती हैं और इसलिए शायद उतनी मनोरंजक और दिलचस्प नहीं हैं जितनी हम चाहते हैं। सीखने के इस आवश्यक चरण के दौरान बच्चों की प्रेरणा को उच्च रखने के लिए, उनकी प्रगति के लिए नियमित प्रतिक्रिया और पुरस्कार दें। यह महत्वपूर्ण है कि बच्चे उच्च स्तर की सटीकता के साथ एक गतिविधि करना सीखें, क्योंकि यह बच्चों के अच्छी तरह से सीखने या कठिनाइयों का अनुभव जारी रखने के बीच सभी अंतर बनाता है।

3. रखरखाव (Maintenance) :– हम बच्चों को यह भूलने के लिए समय नहीं दे सकते कि उन्होंने क्या सीखा है और वापस जा रहे हैं और कौशल को फिर से पढ़ाते हैं। समय के साथ, हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि बच्चे बिना किसी और शिक्षण के अपने प्रदर्शन के स्तर को बनाए रखें। हालाँकि, हम संयोग से ऐसा होने की प्रतीक्षा नहीं कर सकते हैं, और इसलिए पदानुक्रम के इस चरण का उद्देश्य बच्चों को इस स्थिति तक पहुँचना सिखाना है। रखरखाव के चरण के अंत में, बच्चों को अपने शिक्षक से किसी भी तरह की सहायता प्राप्त किए बिना, सटीकता और प्रवाह के साथ, अपने दम पर कार्यों को पूरा करने में सक्षम होना चाहिए। इसके अलावा, यह आशा की जानी चाहिए कि जैसे–जैसे वे इन चरणों में से प्रत्येक के माध्यम से आगे बढ़ते हैं, वे अपने लिए नए कौशल सीखने के लिए अधिक से अधिक प्रेरित होते जाएंगे।

4. सामान्यीकरण (Generalization) :– जबकि पदानुक्रम के पहले तीन चरण कौशल , गतिविधि सीखने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, सामान्यीकरण कौशल ६ गतिविधि पर जोर देने में बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। अब तक बच्चे एक ही काम पर काम करते रहे हैं। सामान्यीकरण के दौरान उन्हें दो या दो से अधिक कार्यों के साथ प्रस्तुत किया जाता है (जो दोनों को अलग–अलग पढ़ाया जाता है और रखरखाव के चरण में प्रगति की जाती है) और उन्हें सही प्रतिक्रिया का चयन करना होता है। ऐसा करने के लिए विद्यार्थियों को प्रत्येक कार्य की महत्वपूर्ण विशेषताओं में भेदभाव करने के लिए दिखाया गया है, उदाहरण के लिए, संख्यात्मक कार्यों में जोड़, घटाव, गुणा और भाग के लिए संकेत। एक दूसरे प्रकार की सामान्यीकरण गतिविधि को विभेदीकरण के रूप में जाना जाता है। बच्चे किसी कार्य के प्रति वही प्रतिक्रिया देते हैं, भले ही उसके विभिन्न पहलू बदल गए हों। उदाहरण के लिए, बच्चों को एक अंक 8 को पहचाननाध्पढ़ना सिखाया जाता है, जो अलग–अलग रंग, आकार और या पृष्ठभूमि में प्रस्तुत होता है। एक अन्य उदाहरण एक बच्चे को विभिन्न कागज या कपड़े की सामग्री का उपयोग करके सीधी रेखा पर काटना सिखाना है। बच्चे की प्रतिक्रिया वही होगी, हालांकि प्रस्तुत सामग्री अलग है।

Unit :- 1.2 Principles of teaching – concrete, iconic , symbolic शिक्षण के सिद्धांत – ठोस, प्रतिष्ठित , प्रतीकात्मक :– प्रत्येक बच्चा दूसरे से अलग होता है और इसलिए व्यक्तिगत निर्देश की आवश्यकता होती है, कुछ बुनियादी सिद्धांत हैं जो बच्चे को कोई भी कौशल प्रदान करते समय दिमाग में पैदा होते हैं और इसलिए शिक्षण हमेशा आगे बढ़ना चाहिए ।

• **सरल से जटिलः** हमेशा एक ऐसे कदम से शुरू करें जिसमें बच्चा सफलता के साथ मिलने के लिए बाध्य हो। इससे बच्चे को आगे सीखने की प्रेरणा मिलेगी। लक्ष्य जो बच्चे के लिए बहुत अधिक हैं उनसे बचना चाहिए। जैसे ही बच्चा सरल चरणों को सीखता है, धीरे–धीरे जटिल या विभिन्न चरणों का परिचय देता है। पूर्व के लिए। – दांतों को ब्रश करना सिखाते समय, सामने के दांतों से शुरू करना चाहिए और धीरे–धीरे दांतों के दोनों ओर, फिर दांतों के अंदर तक जाना चाहिए।

• **अज्ञात को ज्ञात :** बच्चे के कार्य करने का वर्तमान स्तर कौशल सिखाने के लिए प्रारंभिक बिंदु होना चाहिए। बाकी कौशल सिखाने के लिए एक शुरुआत के रूप में विचार करें कि वह एक कौशल में क्या जानता है। इस प्रकार, यदि किसी बच्चे को 'कुत्ता' शब्द पढ़ना सिखाया जाना है, तो उसे कुत्ते की तस्वीर की पहचान से शुरू करना होगा जो बच्चे को पता है, कुत्ते शब्द को चित्र से मिलाएं और उसे लिखित शब्द कुत्ते की पहचान करने दें दो विकल्प या बहुविकल्पी स्थिति में।

• **मूर्त से अमूर्त :** प्रत्येक शिक्षण के साथ ठोस उदाहरण अवश्य जुड़े होने चाहिए। पूर्व के लिए। बच्चे को रविवार की अवधारणा देने के लिए जो अमूर्त है, उसे रविवार की गतिविधियों से जोड़ दें जैसे कि पिता रविवार को कार्यालय नहीं जाएगा और रविवार को कोई स्कूल नहीं है और इसी तरह।

• **संपूर्ण से भागः** सिखाई गई किसी भी अवधारणा को समग्र रूप से पेश किया जाना चाहिए। हमारे शरीर के विभिन्न अंगों के बारे में सिखाने से पहले, पूरे आत्म का परिचय दें – यह आदमी है, यह हाथ है, यह सिर है, ये आपकी आंखें हैं और इसी तरह। इसी तरह, शब्दों को उस शब्द को बनाने वाले अक्षरों से पहले पूरी तरह से पेश किया जाना चाहिए। बच्चे को कोई भी विषय पढ़ाते समय इन सिद्धांतों को याद रखना चाहिए।

• **विश्लेषण से संश्लेषण तकः** जब हम किसी चीज को आसानी से समझने के लिए आसान भागों या अलग–अलग तत्वों में विभाजित करते हैं तो उसे विश्लेषण कहा जाता है। यह वह प्रक्रिया है जो किसी चीज के छिपे हुए तत्वों या किसी घटना या व्यवहार के कारण को समझने में मदद करती है। संश्लेषण विश्लेषण के ठीक विपरीत है। सभी भागों को समग्र रूप से दिखाया गया है। उदाहरण के लिए, पाचन तंत्र को पढ़ाते समय हमें पहले पाचन तंत्र के विभिन्न भागों का एक–एक करके विश्लेषण करना चाहिए और फिर उसका सिंथेटिक दृष्टिकोण देना चाहिए। इसलिए एक अच्छा शिक्षक हमेशा विश्लेषण से संश्लेषण की ओर अग्रसर होता है।

विशेष से सामान्य की ओर : एक शिक्षक को हमेशा विशेष से सामान्य कथन की ओर बढ़ना चाहिए। सामान्य तथ्यों, सिद्धांतों और विचारों को समझना मुश्किल है और इसलिए शिक्षक को हमेशा पहले विशेष चीजों को प्रस्तुत करना चाहिए और फिर सामान्य चीजों की ओर ले जाना चाहिए। मान लीजिए कि शिक्षक अंग्रेजी पढ़ाते समय निरंतर काल पढ़ा रहा है, तो उसे सबसे पहले कुछ उदाहरण

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

देना चाहिए और फिर उनके आधार पर उन्हें सामान्य बनाना चाहिए कि इस काल का उपयोग उस क्रिया को दर्शाने के लिए किया जाता है जो बोलने के समय चल रही है।

जेरोम ब्रूनर और शिक्षा (Jerome Bruner and Education) :– संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक जेरोम ब्रूनर का मानना था कि शिक्षा का लक्ष्य बौद्धिक विकास होना चाहिए, न कि तथ्यों को रट कर याद रखना। यह पाठ ब्रूनर के विकास के सिद्धांत और उनके प्रतिनिधित्व के तीन तरीकों पर चर्चा करेगा। हम सीखने, भाषा और खोज पर उनके विश्वासों का भी पता लगाएंगे और जीन पियाजे के विचारों से उनके विचारों को अलग करेंगे।

ब्रूनर ने सीखने और शिक्षा के संबंध में निम्नलिखित विश्वास रखेः

- उनका मानना था कि पाठ्यचर्या को जांच और खोज की प्रक्रियाओं के माध्यम से समस्या समाधान कौशल के विकास को बढ़ावा देना चाहिए।
- उनका मानना था कि विषय वस्तु को बच्चे के दुनिया को देखने के तरीके के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। उस पाठ्यचर्या को इस तरह से तैयार किया जाना चाहिए कि कौशल की महारत और भी अधिक शक्तिशाली लोगों की महारत की ओर ले जाए।
- उन्होंने अवधारणाओं को व्यवस्थित करके शिक्षण और खोज द्वारा सीखने की भी वकालत की।
- अंत में, उनका मानना था कि संस्कृति को उन धारणाओं को आकार देना चाहिए जिनके माध्यम से लोग अपने और दूसरों के विचारों को व्यवस्थित करते हैं और जिस दुनिया में वे रहते हैं।

प्रतिनिधित्व के तीन चरण (Three Stages of Representation) :– जेरोम ब्रूनर ने संज्ञानात्मक प्रतिनिधित्व के तीन चरणों की पहचान की।

1. सक्रिय, जो क्रियाओं के माध्यम से ज्ञान का प्रतिनिधित्व है।

2. आइकॉनिक, जो छवियों का दृश्य सारांश है।

3. प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व, जो अनुभवों का वर्णन करने के लिए शब्दों और अन्य प्रतीकों का उपयोग है।

सक्रिय चरण पहले प्रकट होता है। इस चरण में सूचना का एन्कोडिंग और भंडारण शामिल है। वस्तुओं के किसी भी आंतरिक प्रतिनिधित्व के बिना वस्तुओं का सीधा हेरफेर होता है

उदाहरण के लिए, एक बच्चा खड़खड़ाहट करता है और शोर सुनता है। बच्चे ने सीधे खड़खड़ाहट में हेरफेर किया है और परिणाम एक सुखद ध्वनि थी। भविष्य में, बच्चा अपने हाथ हिला सकता है, भले ही कोई खड़खड़ाहट न हो, उसके हाथ से खड़खड़ाहट की आवाज आने की उम्मीद है। बच्चे के पास खड़खड़ का आंतरिक प्रतिनिधित्व नहीं है और इसलिए, यह नहीं समझता है कि ध्वनि उत्पन्न करने के लिए उसे खड़खड़ाहट की आवश्यकता है।

Iconic :– प्रतिष्ठित मंच एक से छह साल की उम्र से प्रकट होता है। इस चरण में मानसिक छवि या आइकन के रूप में बाहरी वस्तुओं का आंतरिक प्रतिनिधित्व शामिल है। उदाहरण के लिए, एक बच्चा किसी पेड़ की छवि बना रहा है या किसी पेड़ की छवि के बारे में सोच रहा है, इस चरण का प्रतिनिधि होगा।

सांकेतिक चरण, सात साल और उससे अधिक उम्र से, जब जानकारी को एक कोड या प्रतीक जैसे भाषा के रूप में संग्रहीत किया जाता है। प्रत्येक प्रतीक का उस चीज से एक निश्चित संबंध होता है जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है। उदाहरण के लिए, 'कुत्ता' शब्द जानवरों के एकल वर्ग के लिए एक प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व है। मानसिक छवियों या याद किए गए कार्यों के विपरीत, प्रतीकों को वर्गीकृत और व्यवस्थित किया जा सकता है। इस चरण में, अधिकांश जानकारी शब्दों, गणितीय प्रतीकों, या अन्य प्रतीक प्रणालियों में संग्रहीत की जाती है।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

ब्रूनर का मानना था कि सभी सीखना उन चरणों के माध्यम से होता है जिन पर हमने अभी चर्चा की है। ब्रूनर का यह भी मानना था कि सीखने की शुरुआत वस्तुओं के सीधे हेरफेर से होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, गणित की शिक्षा में, ब्रूनर ने बीजगणित टाइलों, सिक्कों और अन्य वस्तुओं के उपयोग को बढ़ावा दिया, जिन्हें हेरफेर किया जा सकता था।

एक शिक्षार्थी के पास वस्तुओं में सीधे हेरफेर करने का अवसर होने के बाद, उन्हें एक आकृति या आरेख बनाने जैसे दृश्य प्रतिनिधित्व बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

अंत में, एक शिक्षार्थी उन प्रतीकों को समझता है जिनका वे प्रतिनिधित्व करते हैं। उदाहरण के लिए, गणित में एक छात्र समझता है कि धन चिह्न (+) का अर्थ है दो संख्याओं को एक साथ जोड़ना और ऋण चिह्न (–) का अर्थ घटाना है।

Unit :- 1.3 Teaching methods- e-g-, multisensory, play way, Montessori, Project, (पढ़ाने के तरीके – जैसे, मल्टीसेंसरी, प्ले वे, मोंटेसरी, प्रोजेक्ट विधि)

Teaching strategies – Principles of reinforcement, task analysis, prompting, fading, shaping ,chaining बहु–संवेदी उपागम (Multisensory approach) :– बहुसंवेदी अधिगम यह धारणा है कि व्यक्ति बेहतर सीखते हैं यदि उन्हें एक से अधिक अर्थों (औपचारिकता) का उपयोग करके सिखाया जाता है । आमतौर पर बहुसंवेदी सीखने में नियोजित इंद्रियां दृश्य , श्रवण , गतिज और स्पर्शनीय हैं – ट ।ळज (यानी देखना, सुनना, करना और छूना)। अन्य इंद्रियों में गंध , स्वाद और संतुलन (जैसे सब्जी का सूप बनाना या साइकिल चलाना) शामिल हो सकते हैं।

बहुसंवेदी अधिगम अधिगम शैलियों से भिन्न है जो यह धारणा है कि लोगों को उनकी सीखने की शैली (ऑडियो, दृश्य या गतिज) के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है। हालांकि, सीखने की शैलियों के आलोचकों का कहना है कि इस बात का कोई सुसंगत प्रमाण नहीं है कि किसी व्यक्तिगत छात्र की सीखने की शैली की पहचान करना और उस शैली के लिए शिक्षण बेहतर परिणाम देगा। नतीजतन, सीखने की शैलियों को वैज्ञानिकों से व्यापक समर्थन नहीं मिला है, न ही यह कक्षा में प्रभावी साबित हुआ है।

रिपोर्टों से पता चलता है कि मानव मस्तिष्क बहुसंवेदी संकेतों को संसाधित करने के लिए विकसित हुआ है, जिससे यह बिना सेंसरी प्रसंस्करण से अधिक प्राकृतिक हो गया है। हाल के शोध ने स्पष्ट किया है कि सूचना का बहुसंवेदी प्रसंस्करण दैनिक जीवन का हिस्सा है, जिससे मस्तिष्क विभिन्न तौर–तरीकों (इंद्रियों) से जानकारी को एक सुसंगत मानसिक धारणा में एकीकृत करता है ।

कुछ अध्ययनों का निष्कर्ष है कि बहुसंवेदी सीखने के लाभ सबसे बड़े होते हैं यदि इंद्रियों को एक साथ लगाया जाता है और निर्देश प्रत्यक्ष (स्पष्ट) और व्यवस्थित है । हालांकि, कुछ न्यूरोलॉजिस्ट सवाल करते हैं कि क्या अधिक ''वास्तव में उन शिक्षार्थियों के लिए बेहतर है जो संघर्ष कर रहे हैं''। तर्कसंगत यह है कि विकासात्मक विकारों वाले शिक्षार्थियों में संज्ञानात्मक नियंत्रण, योजना और ध्यान में हानि हो सकती है, इसलिए बहुसंवेदी एकीकरण उन प्रणालियों पर अतिरिक्त मांग रख सकता है जो पहले से ही तनावपूर्ण हैं। नतीजतन, यह सुझाव दिया जाता है कि विकल्पों को कम करने के लिए बेहतर हो सकता है जो काम करता है। अन्य अध्ययनों से पता चलता है कि बहुसंवेदी एकीकरण केवल मध्य बचपन तक बेहतर रूप से विकसित होता है।

यूके इंडिपेंडेंट रिव्यू ऑफ टीचिंग ऑफ अर्ली रीडिंग (रोज रिपोर्ट 2006) के अनुसार मल्टीसेंसरी लर्निंग भी प्रभावी है क्योंकि यह छात्रों को उनके सीखने में अधिक व्यस्त रखता है। 2010 में यूके के शिक्षा विभाग ने उन कार्यक्रमों के लिए मुख्य मानदंड स्थापित किए जो स्कूली बच्चों को व्यवस्थित सिंथेटिक ध्वन्यात्मकता का उपयोग करके पढ़ना सिखाते हैं । इसमें एक आवश्यकता शामिल है कि सामग्री ''एक बहु–संवेदी दृष्टिकोण का उपयोग करती है ताकि बच्चे एक साथ दृश्य, श्रवण और कीनेस्थेटिक गतिविधियों से विभिन्न रूप से सीखें जो आवश्यक ध्वन्यात्मक ज्ञान और कौशल को सुरक्षित करने के लिए डिजाइन किए गए हैं''।

Project Method (परियोजना विधि) :– एक परियोजना पद्धति निर्देश का एक माध्यम है जहां छात्रों को कई परियोजनाएं या स्थिति दी जाती है। छात्र अपनी स्थिति स्वयं चुनते हैं फिर वे सामूहिक रूप से परियोजना को निष्पादित करने की योजना बनाते हैं। शिक्षण की इस शैली में शिक्षक एक तानाशाह के रूप में नहीं बल्कि एक कार्यकारी साथी के रूप में एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है।

Notes For Pyssum

परियोजना पद्धति शैक्षिक सिद्धांत और व्यवहार में एक आधुनिक योगदान है। इसकी शुरुआत प्रोफेसर विलियम किलपैट्रिक ने की थी, जो एक व्यावहारिक व्यक्ति थे, जिन्हें परियोजना पद्धति के जनक के रूप में भी जाना जाता है। उनके अनुसार परियोजना विधि है– ''सामाजिक वातावरण में चलने वाली एक संपूर्ण उद्देश्यपूर्ण गतिविधि''

परियोजना विधि एक समस्यात्मक कार्य है जिसे प्राकृतिक सेटिंग्स में किया और पूरा किया जाता है। यह लोगों को विश्वास में लेने पर बहुत जोर देता है और शिक्षक या मार्गदर्शक से छात्रों पर कुछ भी नहीं थोपा जाता है, जो काम की जिम्मेदारी लेते हैं। पाठ्यक्रम सामग्री और तकनीक को भी छात्र के दृष्टिकोण से माना जाता है। अतः यह विधि पूर्णतया विद्यार्थी केन्द्रित है जहाँ विद्यार्थी अनुभव के आधार पर चीजें सीखते हैं। संक्रमित इस विधि को करके सीखने के रूप में बेहतर वर्णित किया गया है।

परिभाषाएं (Definitions) :–

जेए स्टीवेन्सन के अनुसारः ''एक परियोजना एक समस्यात्मक कार्य है जिसे इसकी प्राकृतिक सेटिंग में पूरा किया जाता है''

किलपैट्रिकः ''एक परियोजना पद्धति एक सामाजिक वातावरण में आगे बढ़ने वाली एक उद्देश्यपूर्ण गतिविधि है ।

जेए स्टीवेन्सनः '' एक परियोजना एक समस्यात्मक कार्य है जिसे इसकी प्राकृतिक सेटिंग में पूरा किया जाता है ''

परियोजना विधि के 5 चरणः इस विधि के पाँच चरण निम्नलिखित है :–

- परियोजना का चयन
- उचित योजना
- परियोजना का निष्पादन
- मूल्यांकन
- रिकॉर्डिंग

Notes For Pyssum

1. **परियोजना का चयन :–** पहला चरण परियोजना कार्य का चयन है। छात्रों को उनमें से कुछ व्यावहारिक समस्याएँ दी जाती हैं, उन्हें उस विषय या परियोजना का चयन करना चाहिए जिसकी बड़ी उपयोगिता हो और विद्यार्थियों की व्यावहारिक आवश्यकता को पूरा करे। . इस प्रक्रिया में शिक्षक उन्हें सही रास्ते पर चलने के लिए मार्गदर्शन और प्रेरित करता है।
2. **योजना :–** परियोजना पद्धति का अगला चरण उचित नियोजन है। छात्रों को योजना बनानी चाहिए और शिक्षक उनका मार्गदर्शन करेंगे और उनके नियोजन कार्य में उनकी मदद करेंगे। एक चर्चा आयोजित की जा सकती है जहां सभी छात्र अपने विचार व्यक्त करते हैं और चर्चा में सुझाव देते हैं। और शिक्षक इस परियोजना से संबंधित समस्याओं को इंगित कर सकते हैं। उचित नियोजन की यह चर्चा विद्यार्थी अपने प्रोजेक्ट कॉपी में लिख सकते हैं।
3. **परियोजना को क्रियान्वित करना :–** इस चरण में छात्र अपने ब्लूप्रिंट या योजना के अनुसार परियोजना कार्य निष्पादित करता है। छात्र स्वयं व्यक्ति की रुचि और क्षमता के अनुसार आपस में विभिन्न कार्य सौंपते हैं। इस परियोजना को पूरा करने के लिए प्रत्येक छात्र कुछ न कुछ योगदान देता है। वे डेटा एकत्र करेंगे, जगह–जगह जाएंगे, और लोग जानकारी इकट्ठा करेंगे, इतिहास पढ़ेंगे आदि। इस प्रकार छात्रों द्वारा गतिविधियों की एक श्रृंखला की जाती है। और शिक्षक मार्गदर्शन करेगा और आवश्यक जानकारी प्रदान करेगा और उन्हें सही दिशा में जाने में मदद करेगा।
4. **मूल्यांकन :–** इस चरण में पूरे कार्य की समीक्षा की जाती है और छात्र अपने प्रदर्शन का न्याय या आकलन करते हैं, चाहे उन्होंने योजना के अनुसार परियोजना को अंजाम दिया या नहीं। गतिविधियों की इस प्रक्रिया में उन्होंने क्या गलतियाँ की हैं, यह सब नोट कर लिया गया है। संक्षेप में इस चरण में कार्य का मूल्यांकन किया जाता है।
5. **रिकॉर्डिंग :–** मूल्यांकन के बाद अगला कदम रीकोडिंग है। यहां परियोजना से जुड़ी सभी गतिविधियों को दर्ज किया जाना चाहिए। छात्रों ने योजना बनाई, उनकी चर्चा, कर्तव्य, अपने स्वयं के काम की आलोचना और निश्चित रूप से संदर्भ के लिए इस परियोजना के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण बिंदु।

परियोजना विधि के गुण

1:– परियोजना पद्धति करके सीखने पर जोर। छात्र स्वयं उस गतिविधि में शामिल होते हैं जो उनकी सोचने की क्षमता, कौशल और प्रत्यक्ष अनुभव को बढ़ाने में मदद करती है।

2 :– प्रोजेक्ट पद्धति में शिक्षक एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है और पूरी गतिविधि छात्रों द्वारा स्वयं की जाती है जो छात्रों की आत्मनिर्भरता और आत्म–जिम्मेदारी को बढ़ाती है।

3 :– इस पद्धति में विद्यार्थी अपने समूह के साथ मिलकर काम करते हैं। जो सीखने को रोचक और सार्थक बनाता है।

4 :– परियोजना पद्धति भाईचारे की भावना, सहकारी दृष्टिकोण और अन्य सामाजिक गुणों को विकसित करने में मदद करती है।

5:– यह संचार कौशल विकसित करता है क्योंकि छात्रों को खुद को पूरी तरह और स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने का अवसर मिलता है।

6 :– इस पद्धति से उनमें लोकतांत्रिक भावनाएँ भी विकसित होती हैं। छात्रों पर कुछ भी थोपा नहीं जाता है, निर्णय लोकतांत्रिक तरीके से लिया जाता है।

7:– यह छात्र की आलोचनात्मक सोच को विकसित करता है।

परियोजना विधि के दोष :–यद्यपि परियोजना पद्धति शिक्षण का एक आधुनिक दृष्टिकोण है। जो कि बाल केंद्रित है इसके कुछ नुकसान भी हैं।

1 :–परियोजना पद्धति में ड्रिल कार्य की उपेक्षा छात्रों को पढ़ने, वर्तनी, ड्राइंग आदि में पर्याप्त अभ्यास नहीं मिलता है।

2:– यह एक समय लेने वाली प्रक्रिया है।

3 :– अनुभव शिक्षक की झीलः एक परियोजना को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए बहुत ही कुशल और साधन संपन्न शिक्षकों की आवश्यकता होती है।

4:–,परियोजना पद्धति सभी विषयों के लिए उपयुक्त नहीं है।

5:–यह विधि निचली कक्षाओं के लिए उपयुक्त नहीं है, क्योंकि पूरी परियोजना स्वयं छात्रों द्वारा की जाती है, इसलिए यह उच्च कक्षाओं के लिए उपयुक्त है न कि निचले स्तर के लिए।

6:–परियोजना पद्धति को प्राकृतिक वातावरण में किया जाता है जो हमेशा के लिए संभव नहीं होता है।

7:– शिक्षण की परियोजना पद्धति बहुत महंगी है।

मांटेसरी विधि क्या है what is the montessori method पुराने समय में शिक्षा अध्यापक पर केंद्रित थी। अर्थात जो अध्यापक बच्चों को सिखाता था, बच्चे को वही सीखना पड़ता था। लेकिन आज के समय में ऐसा नहीं है, आज यह माना जाता है, कि शिक्षा शिक्षा ग्रहण करने वाले बच्चे पर केंद्रित है। क्योंकि शिक्षा से ही उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है। इसलिए बालक के सभी पक्षों के विकास के लिए विभिन्न प्रकार की शिक्षण पद्धतियाँ दी गई है। उन्हीं में से एक पद्धति है मांटेसरी पद्धति जिसे हम मांटेसरी विधि के नाम से भी जानते हैं। जो 2 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए ही उपयुक्त है। मांटेसरी ने बालक द्वारा शिक्षा ग्रहण करने की दशाओं के ऊपर गहन अध्ययन किया और एक शिक्षा पद्धति प्रतिपादित की, जिसे **मांटेसरी शिक्षा पद्धति** के नाम से जाना गया। इस शिक्षा पद्धति में बालक पूर्ण रूप से स्वतंत्र होता है। उसे खेलने कूदने की स्वतंत्रता होती है, तो वहीं सभी प्रकार के विचार, ज्ञान गोष्ठियों तथा विकास सम्बन्धी क्रियाकलापों में भाग लेने की स्वतंत्रा उसे होती है। इस लिए कह सकते है कि बालक के सर्वांगीण विकास के लिए मांटेसरी विधि में बालक की स्वतंत्रता शिक्षा और व्यक्तित्व की शिक्षा पर भी विकास और बल दिया गया है।

Notes For Fyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

मांटेसरी विधि के जनक father of Montessori Methods

- मांटेसरी शिक्षा पद्धति या मांटेसरी शिक्षा विधि एक ऐसी विधि है, जो बच्चे को स्वतंत्र रूप में देखती है और बच्चे को सभी प्रकार के खेलो, व्यक्तित्व विकास आदि के लिए प्रोत्साहित भी करती है।
- ऐसी शिक्षा पद्धति के जनक इटली की मैडम डॉ. मांटेसरी हैं। मांटेसरी शिक्षा पद्धति के जनक इटली की मैडम डॉ.मांटेसरी ने बालक की विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर गहन अनुसंधान कार्य किए और इस अनुसंधान के आधार पर उन्होंने एक मनोवैज्ञानिक शिक्षण पद्धति प्रतिपादित की जिसे मांटेसरी शिक्षा पद्धति और मांटेसरी शिक्षा विधि नाम दिया गया।

मांटेसरी शिक्षा के प्रमुख लक्ष्य क्या है Main goals of Montessori education मैडम मांटेसरी ने इस पद्धति में निम्न सिद्धांतों पर प्रमुख रूप से बल दिया हैः–

बालक की स्वतंत्रता पर बल – जिसके अंतर्गत बालक को स्वतंत्रता प्रदान की जाती है, अर्थात बालक को खेलने की पूरी स्वतंत्रता होती है और बालक अपनी प्रवृत्तियों अपनी क्षमता के अनुसार खेलना, पढ़ना, लिखना जो कुछ भी चाहे कर सकता है। इस प्रकार की क्रियाओं के माध्यम से उसे आगे शिक्षा दी जाती है।त्र

खेल द्वारा शिक्षा पर बल देना – इसके अंतर्गत बालक को खेल द्वारा शिक्षा प्रदान करने का प्रयत्न किया जाता है। क्योंकि कहा जाता है, कि बालकों की दृष्टि से खेल एक ऐसी प्रभावशाली नीति है जिसमें सभी बच्चे रूचि लेते है और इसमें बाल भवन की योजना की जाती है। जिसमें छोटे बच्चों के भोजन विश्राम गोष्टी और शारीरिक क्रिया के लिए पृथक रूप से व्यवस्था रहती है।

बालकों के सर्वागीण विकास पर बल – इसके अंतर्गत बालकों का सर्वागीण विकास अर्थात सभी प्रकार का विकास पर बल दिया गया है। यहाँ पर बालकों के विकास की शिक्षा से अभिप्राय बालकों की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और संवेगात्मक अर्थात सभी प्रकार के विकास पर बल दिया गया है।

मांटेसरी स्कूल

मांटेसरी स्कूल किसे कहते है what is Montessori school

मांटेसरी स्कूल किसे कहते है – बालकों को शिक्षा प्रदान करने के लिए एक विशेष प्रकार की पाठशाला (स्कूल) आयोजित की जाती है। जिसका नाम ही मांटेसरी पाठशाला (स्कूल) है। इस पाठशाला में एक बाल भवन होता है, जिसमें बाल भवन में एक बड़ा कमरा होता है, और छोटे–छोटे अन्य कमरे भी होते हैं। यह जो बड़ा कमरा होता है, इसमें सभी प्रकार की आवश्यक सामग्री उपस्थित होती है। जबकि छोटे कमरों में बालकों के विश्राम भोजन आदि की व्यवस्था होती है। इसके साथ ही बालकों के खेल–कूंद के लिए बगीचा उपलब्ध होता है, तो बाल भवन में सफाई आदि का भी कार्य बालक अपने हाथ से ही करते हैं, यही सब मांटेसरी पाठशाला कहलाती है।

मांटेसरी शिक्षा पद्धति (विधि) के गुण और दोष merits and demerits of Montessori education system

- मांटेसरी शिक्षा पद्धति ऐसी शिक्षा पद्धति है, जिसमें विशेषतः निर्देशन में वैयक्तिकता का स्थान है। इसके अतिरिक्त इस पद्धति में वैयक्तिकता को ही ध्यान में नहीं रखा जाता है।
- जबकि यह कर्म इंद्रियों की शिक्षा स्वयं शिक्षा भाषा शिक्षण आदि की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। मांटेसरी पद्धति में खर्च अधिक है ।
- इसलिए अधिक खर्चीली होने से निर्धन देशों के लिए मांटेसरी पद्धति उपयोग में नहीं लायी जाती है। मांटेसरी पद्धति छोटे बालकों के लिए अधिक उपयोगी होती है।
- जबकि उच्च शिक्षा ग्रहण करने बाले बालकों के लिए यह प्रयोग में नहीं लायी जाती।
- मांटेसरी पद्धति में इंद्रियों के प्रशिक्षण पर अधिक बल दिया जाता है। किंतु छोटे बच्चों के उच्चारण शुद्धि पर विशेष बल नहीं दिया जाता ऐसे छोटे बच्चों में तोतलापन बना रहता है।

Notes For Rvssun
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

मांटेसरी पद्धति की शिक्षण बातें निम्न प्रकार से है teaching points of Montessori method

भाषा की शिक्षा – मांटेसरी शिक्षा पद्धति के हिसाब से लिखना पढ़ने की अपेक्षा अधिक सरल है। इसके अनुसार लिखने में उच्चारण की आवश्यकता नहीं पड़ती इसलिए बालक लिखना सरलता से सीख सकता है किन्तु पड़ना कठिनता से

कर्मेंद्रियों की शिक्षा – बाल भवन में सभी कार्यों को बालक स्वयं करते हैं, इस प्रकार उनका हाथ मुंह धोना कपड़े बदलना सफाई करना आदि, सभी कार्यों का हाथ से करने के कारण उनका पूर्णरूपेण शारीरिक व्यायाम हो जाता है और शरीर की माँसपेशियाँ पुष्ट होती हैं।

ज्ञानेंद्रियों की शिक्षा – इसमें बालकों को ज्ञानेंद्रियों द्वारा जितने अधिक अनुभव होंगे वे उतने ही अधिक सीखेंगे आता मैडम मोंटेसरी ने स्वयं कहा है कि ज्ञानेंद्रियों की शिक्षा संबंधी क्रियाओं का यह एक उद्देश्य नहीं है कि बालकों में विभिन्न बस्तुओं के रूप गुण और वर्ण का ज्ञान हो बल्कि उनसे उनके ज्ञानेंद्रियों को परिष्कृत करना चाहते हैं जिससे उनकी बुद्धि का विकास हो।

Play- Way Method (खेल विधि) :– प्राथमिक स्तर के शिक्षण में खेल विधि को सर्वश्रेष्ठ विधि माना जाता है । साथ ही प्राथमिक स्तर पर गणित शिक्षण के लिए भी खेल विधि को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है । बच्चों को खेल खेल में आसानी से सिखाया जा सकता है । खेल खेल में प्राप्त अधिगम अधिक स्थाई माना जाता है । खेल द्वारा शिक्षा में शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास होता है । इस पद्धति के अनुसार किसी विशिष्ट उद्देश्य को सम्मुख रखकर उसी के अनुरूप शिक्षा दी जाती है । **खेल विधि के प्रर्वतक खेल विधि के प्रर्वतक हेनरी काल्डवेल कुक (Henry Caldwell Cook)** है । उन्होंने अपनी पुस्तक Play Way में इसकी उपयुक्तता अंग्रेजी शिक्षण हेतु बताई है । जब बच्चा इस प्रणाली के द्वारा शिक्षण में रुचि लेने लग जाता है तो वह उसके लिए शिक्षण न रहकर एक खेल की तरह से हो जाता है ।

खेलों में बालकों की रुचि अधिक होने के कारण उन्हें खेल द्वारा व्यावहारिक जीवन की सफल शिक्षा दी जा सकती है । भाषा – शिक्षण लिए तो इस विधि को बड़ा उपयोगी बनाया जा सकता है । रचना , व्याकरण आदि सभी की शिक्षा प्राथमिक , माध्यमिक तथा उच्च कक्षाओं में सफलतापूर्वक दी जा सकती हैं ।

शिक्षण रणनीतियाँ (Teaching strategies) :– बौद्धिक अक्षम बच्चों को प्रशिक्षित करने हेतु विशेष शिक्षण तकनीक की आवश्यकता होती है । इस हेतु निम्न बिंदुओं पर ध्यान देना आवश्यक होता है

1. बौद्धिक अक्षम बच्चों को विभिन्न प्रकार की सार्थक गतिविधियों में व्यस्त रखना आवश्यक होता है ।

2. बौद्धिक अक्षम बच्चों का शिक्षण प्रशिक्षण सुनियोजित तरीके से क्रियांवित करना आवश्यक है।

3. सभी बौद्धिक अक्षम बच्चों को समान क्रिया को सिखाने के लिए अलग – अलग तक की आवश्यकता पड़ सकती है।

4.प्रत्येक बौद्धिक अक्षम बच्चे की आवश्यकता एवं क्षमता भिन्न होती है प्रशिक्षण कार्यक्रम योजना बनाते एवं क्रियांचित करते समय इन तथ्यों का ध्यान विशेष रूप से दिया जाना चाहिए ।

विशेष शिक्षण तकनीक का वर्णन निम्नलिखित हैं

1. कार्य विश्लेषण (Task Analysis) :– कार्य विश्लेषण सामान्य तौर पर वह विधि है जिसमें व्यवहार लक्ष्य को छोटे तथा सामान्य चरण में विभाजित कर सिखाया जाता है कार्य विश्लेषण विधि द्वारा विशेष रूप से दैनिक जीवन के क्रियाकलाप तथा गामक कौशलों को आसान बनाकर सिखाया जाता है । कार्य विश्लेषण के निम्न चरण है :

क :– कार्य को उपकार्यों में विभाजित करना ।

खः– उन्हें क्रम में व्यवस्थित करना ।

ग :–प्रत्येक उप क्रिया की निर्देशात्मक लक्ष्य के रूप में व्याख्या करना कार्य विश्लेषण करने की निम्नलिखित विधियाँ हैं ।

1. किसी योग्य व्यक्ति का अवलोकन करें तथा उसके द्वारा किए जा रहे कार्यों को लिखें ।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

2. क्रिया के बारे में विचार करे तथा लिखें ।

3. स्वयं करके देखें ।

4. धीमी गति के बीडियो की सहायता द्वारा क्रिया को देखें ।

कार्य विश्लेषण में उपकार्यों की संख्या छात्र के स्तर के अनुरूप घट अथवा बढ़ सकती है उदाहरण के लिए ' दाल और चावल को मिलाकर बिना गिराए चम्मच की सहायता से खाना ।

श्रृंखलाकरण चेनिंग (Chaining): – श्रृंखलाकरण के द्वारा लक्ष्य व्यवहार को विभिन्न चरणों में विभाजित कर यह निर्धारित किया जाता है कि किस क्रिया को कब संपादित करना है तथा उनको एक साथ कड़ी के रूप में व्यवस्थित किया जाता है ।

श्रृंखलाकरण के प्रकार :–

क . फॉरवर्ड चेनिंग इसमें प्रथम चरण पहले तथा अंतिम चरण बाद में क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित होते हैं ।

उदाहरण – मोजे निकालना ।

1. मोजे को एडी तक लाना ।

2 –मोजे को पंजे के नीचे लाना ।

3 – 1. 2. मोजे को अँगूठे तक जाना ।

4 – 1. 2. 3. मोजे को अंगूठ से बाहर निकालना ।

ख. बैकवर्ड चेनिंग :– इसमें अंतिम चरण पहले तथा प्रथम चरण बाद में क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित होते हैं ।

उदाहरण मोजे निकालना ।

1. मोजे को अंगूठे से बाहर निकालना ।

2. मोजे को पंजे के नीचे लाना

3. मोजे को एडी से निकालना. 2 ।।

4. मोजे को पड़ी तक लाना. 3. 2. 1।

III . शेपिंग (Shaping) :– इसके अंतर्गत लक्ष्य को विभिन्न चरणों में बाँटा जाता है । प्रत्येक चरण लगभग – लगभग लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है । सभी चरणों प्रयोग किये जाने वाले उपकरण सरल से जटिल होते जाते हैं प्रत्येक चरण में बच्चे को पुनर्बलन प्रदान किया जाता है ।

उदाहरण के लिए सुई में धागा डालना

1 . 1/2 व्यास (diameter) छिद्र बाली सुई में पतला धागा डालना ।

2 – 1/4 '' व्यास छिद्र बाली सुई में पतला धागा डालना ।

3 . 1/4 व्यास छिद्र बाली सुई में मोटा धागा डालना ।

4 मध्यम आकार की सुई में पतला धागा डालना ।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

5. मध्यम आकार की सुई में मोटा धागा डालना ।

6 . सामान्य आकार की सुई में सिलाई बाला धागा डालना ।

शेपिंग प्रक्रिया के चरण :

1 यवहार का चयन करें ।

2 . बच्चे द्वारा वर्तमान ने प्रदर्शित किए जाने वाले आरम्भिक हार का चको तथा उसे किसी न किसी रूप में अच व्यवहार से सम्बन्धित करें ।

3 . सशक्त प्रभावी पुरस्कार का चयन करें ।

4 आरम्भिक व्यवहार को पुनर्वसन प्रदान करें जब तक कि वह बारम्बार घटित न हो ।

5. प्रत्येक बार व्यवहार में वृद्धि होने पर सुनवलन प्रदान करें ।

6. लक्ष्य व्यवहार के दिन होने . प्रत्येक बार पुन प्रदान करें)।

7.लक्ष्य व्यवहार के दिन होने (. कर्म – कभी कुनगंदन प्रदान करें) ।

शेपिंग प्रक्रिया के अंतर्गत लक्ष्य व्यवहार से सम्पन्धित छोटे किन्तु सही प्रयास किए जाने पर कम्बद्ध रूप से पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं ।

अनुरूपण – मॉडलिंग (Modeling) : – यह एक ऐसी विधि है जिसमें शिक्षक बच्चे को बताता है कि विशिष्ट कार्य को किस प्रकार किया जाता है ? इसमें कार्य को कर के प्रदर्शित किया जाता है । इसमें निम्न विधियाँ अपनाई जाती है :

1.ऐसी स्थिति बनाएँ जिसमे बच्चा अन्य बच्चों को प्राकृतिक वातावरण में लक्ष्य व्यवहार को करते हुए देखें ।

.2. लक्ष्य व्यवहार प्रदर्शित करने पर पुरस्कार दें । दो या अधिक बच्चों के कार्य निष्पादन स्तर की तुलना न करें ।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

सहायता देना प्राम्पटिंग (Prompting) :– बच्चे को विशिष्ट लक्ष्य व्यवहार सीखने के लिए दी जाने वाली सक्रिय सहायता प्राम्पटिंग कहलाती है सहायता (प्राम्पट) के प्रकार

1. शारीरिक सहायता – शारीरिक सहायता द्वारा शिक्षण प्रदान करना जैसे हाथ पकड़ कर लिखना अथवा बटन खोलना सिखाना ।

2 **शाब्दिक सहायता मौखिक निर्देशों** द्वारा प्रत्येक चरण को बताते हुए कार्य संपादित कराना शाब्दिक सहायता कहलाना है , जैसे– हाथ से बटन को पकड़ो दूसरे हाथ से बटन पटट्टी को पकड़ो , छेद में से बटन निकालो ।

3. **सांकेतिक सहायता संकेत द्वारा शिक्षण प्रदान करना जैसे** – ' बंद ' , ' धक्का दो आदि । प्राम्पटिंग अक्सर अन्य तकनीकों के साथ प्रयोग में लाई जाती है शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए प्राम्पट्स का प्रयोग किया जाता है प्राम्ट्स को धीरे – धीरे समाप्त किया जाता है।

सामान्यीकरण (Generalization) : वह प्रक्रिया जिसमें एक स्थिति में सीले गए व्यवहार को दूसरी समान स्थिति में क्रियांवित किया जाता है सामान्यीकरण कहलाती है । जैसे – बच्चा यदि अपना नाम पढ़ना सीख जाए तो कहीं भी उसका नाम लिखा हो उसे पढ़ सके ।

1.सामान्यीकरण की योजना निर्माण एवं प्रभावी क्रियांवयन हेतु तकनीक लक्ष्य व्यवहार का प्रशिक्षण वास्तविक वातावरण में दें ।

2 अपने शिक्षण को कक्षा अथवा विद्यालय तक सीमित न करें । जहाँ तक संभव हो बच्चों को दुकान रेलवे स्टेशन पोस्ट ऑफिस , बैंक , आदि स्थानों पर ले जाएँ ।।

3. यदि वास्तविक वातावरण शिक्षण प्रदान करना संभव न हो तो कृत्रिम व्यवस्था (simulated soting) बनाएँ ।

Unit :- 1.4 Selection and use of TLM, and Information and communication technology (ICT) for teaching. (टीएलएम का चयन और उपयोग, और सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के लिए शिक्षण।)

शिक्षण सहायक सामग्री का महत्व (Importance of Teaching Aids) :– शिक्षण और सीखने के बारे में एक लोकप्रिय कहावत है, जिस पर एक विशेष शिक्षक को ध्यान देना चाहिए:

–जो मैं सुनता हूं, जो देखता हूं

– उसे भूल जाता हूं, मुझे याद रहता है

– मैं जो करता हूं, समझता हूं ।

- शिक्षण सामग्री की तुलना में शिक्षण सहायता एक छोटा और संक्षिप्त शब्द है। ''शिक्षण सहायता एक अतिरिक्त सहायता है, जिसका उपयोग हम किसी विशेष कार्य को पढ़ाते समय करते हैं।''
- शिक्षण सामग्री का व्यापक रूप से पाठ्यपुस्तक, हैंडबुक, पाठ नोट्स, कार्यक्रम, संदर्भ या स्रोत सामग्री आदि के रूप में उपयोग किया जा सकता है।
- वे छात्रों को स्व–अध्ययन और यहां तक कि उनके दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम में भी मदद करते हैं।
- शिक्षण सामग्री उच्च स्तर के विशेषज्ञों या पेशेवरों द्वारा उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्र में तैयार की जाती है।
- शिक्षण सामग्री छात्रों और शिक्षकों द्वारा कवर किए जाने वाले पाठ्यक्रम या पाठ्यक्रम के अनुसार विषयों को शामिल करती है।
- वे केवल व्यक्तिगत और समूहों के साथ रणनीति सिखाने में मदद करते हैं।
- वे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सहभागी बनाने में शिक्षक की सहायता करते हैं।
- जब किसी अवधारणा को सीखने के लिए शिक्षण सहायता (कोई भी) का उपयोग किया जाता है तो इसे तकनीकी रूप से शिक्षण सहायक कहा जाता है।
- एक बार एक अवधारणा सीख लेने के बाद विशिष्ट शिक्षण सहायता की उपयोगिता कम हो जाती है।
- इन सामग्रियों की मदद से छात्रों की योजना, क्रियान्वयन और मूल्यांकन किया जाता है।

शिक्षण सहायक सामग्री निम्न के लिए उपयोगी है: –

- आप जो कह रहे हैं, उसे सुदृढ़ करें, सुनिश्चित करें कि आपकी बात समझ में आ गई है,संकेत दें कि क्या महत्वपूर्ण / आवश्यक है,
- छात्रों को कुछ ऐसा देखने या अनुभव करने में सक्षम बनाता है जो वास्तविक जीवन में देखने या करने के लिए अव्यावहारिक है,
- सीखने की प्रक्रिया में छात्रों की अन्य इंद्रियों को शामिल करें, विभिन्न सीखने की शैलियों की सुविधा।

टीएलएम के प्रकार (Types of TLM) :–

• **दृश्य सहायता:–**''दृश्य सहायता एक ऐसी सामग्री है जो केवल दृष्टि की भावना को आकर्षित करती है।''

1. ब्लैक बोर्ड 2. मॉडल 3. चार्ट, चित्र 4. स्लाइड 5. बुलेटिन बोर्ड

Notes For Pyssim
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

• **श्रव्य–दृश्य साधनः** ''श्रव्य–दृश्य सहायता ऐसी सामग्री है जो दृष्टि और ध्वनि दोनों को आकर्षित करती है, श्रव्य–दृश्य सहायक कहलाती है।'' यह सीखने को अधिक ठोस, अधिक यथार्थवादी और सबसे गतिशील बनाने में मदद करता है।

1. ओवर हेड प्रोजेक्टर 2. फिल्म प्रोजेक्टर 3. टेलीविजन 4. वीडियो कैसेट प्लेयर

• **ऑडियो एड्सः** ''ऑडियो सहायता एक विद्युत उपकरण है जो ध्वनि देता है।''

1. टेप रिकॉर्डर 2. ग्रामोफोन 3. रेडियो • गतिविधि एड्सः 1. संग्रहालय 2. बगीचा 3. काम की दुकान 4. मेला 5. रसोई 6. एक्वेरियम 7. प्रदर्शनियां

शिक्षण सामग्री और सहायक सामग्री का चयन

• शिक्षार्थी के स्तर के लिए उपयुक्त आयु

• मानसिक मंद बच्चों को सीखने में आसानी से उपलब्ध

• स्थानीय संसाधनों से तैयार

• तथ्यों के प्रतिनिधित्व में सटीक

• बच्चों के लिए आकर्षक, सममित और रंगीन

• आसान में तैयार और सरल भाषा कक्षा में हेरफेर में आसान

• आकार में उपयुक्त

• पाठ्यक्रम से संबंधित

• जटिल और कठिन अवधारणाओं को बनाने के लिए काफी आसान

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

यूनेस्को के अनुसार, ''आईसीटी एक वैज्ञानिक, तकनीकी और इंजीनियरिंग अनुशासन और प्रबंधन तकनीक है जिसका उपयोग सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मामलों के साथ सूचना और जुड़ाव को संभालने में किया जाता है।''

आईसीटी उन प्रौद्योगिकियों को संदर्भित करता है जो दूरसंचार के माध्यम से सूचना तक पहुंच प्रदान करती हैं। यह सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) के समान है, लेकिन मुख्य रूप से संचार प्रौद्योगिकियों पर केंद्रित है। इसमें इंटरनेट, वायरलेस नेटवर्क, सेल फोन और अन्य संचार माध्यम शामिल हैं।

ज्ञान के साथ सीखने, कौशल, अनुकूलन क्षमता, समझ और सक्रियता – सभी कारक आते हैं जो एक समान समाज के विकास में योगदान करते हैं। आईसीटी इस शक्ति को प्राप्त करने के साधन प्रदान करता है। चूंकि ज्ञान महत्वपूर्ण है, इसलिए यह इस प्रकार है कि ज्ञान की प्राप्ति आजीवन होनी चाहिए

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचा (एनसीएफ) 2005, ''आईसीटी सामाजिक विभाजन को पाटने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है। आईसीटी का उपयोग इस तरह से किया जाना चाहिए कि यह दूरस्थ क्षेत्रों में सूचना संचार और कंप्यूटिंग संसाधन प्रदान करके एक अवसर तुल्यकारक बन जाए।''

कई देशों में, स्कूलों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) को शामिल करके डिजिटल साक्षरता का निर्माण किया जा रहा है। आईसीटी के कुछ सामान्य शैक्षिक अनुप्रयोगों में शामिल हैं:

- प्रति बच्चा एक लैपटॉपः कम खर्चीले लैपटॉप को 1:1 के आधार पर स्कूल में उपयोग के लिए डिजाइन किया गया है, जिसमें कम बिजली की खपत, कम लागत वाला ऑपरेटिंग सिस्टम, और विशेष री प्रोग्रामिंग और मेश नेटवर्क फंक्शंस जैसी सुविधाएँ हैं। लागत कम करने के प्रयासों के बावजूद, कुछ विकासशील देशों के लिए प्रति बच्चा एक लैपटॉप प्रदान करना बहुत महंगा हो सकता है।
- टैबलेटः टैबलेट टच स्क्रीन वाले छोटे पर्सनल कंप्यूटर होते हैं, जो बिना कीबोर्ड या माउस के इनपुट की अनुमति देते हैं। सस्ते शिक्षण सॉफ्टवेयर (''ऐप्स'') को टैबलेट पर डाउनलोड किया जा सकता है, जिससे वे सीखने के लिए एक बहुमुखी उपकरण बन जाते हैं। सबसे प्रभावी ऐप उच्च क्रम सोच कौशल विकसित करते हैं और छात्रों को अपनी समझ व्यक्त करने के लिए रचनात्मक और व्यक्तिगत विकल्प प्रदान करते हैं।
- इंटरएक्टिव व्हाइट बोर्ड या स्मार्ट बोर्डः इंटरएक्टिव व्हाइट बोर्ड अनुमानित कंप्यूटर छवियों को प्रदर्शित करने, हेरफेर करने, खींचने, क्लिक करने या कॉपी करने की अनुमति देते हैं। साथ ही, हस्तलिखित नोट्स बोर्ड पर लिए जा सकते हैं और बाद में उपयोग के लिए सहेजे जा सकते हैं। इंटरएक्टिव व्हाइट बोर्ड छात्र–केंद्रित के बजाय संपूर्ण–कक्षा निर्देश से जुड़े हैं ।
- ई–रीडरः ई–रीडर इलेक्ट्रॉनिक उपकरण हैं जो सैकड़ों पुस्तकों को डिजिटल रूप में धारण कर सकते हैं, और उनका उपयोग पठन सामग्री के वितरण में तेजी से किया जा रहा है। छात्रों – दोनों कुशल पाठकों और अनिच्छुक पाठकों – को स्वतंत्र पढ़ने के लिए ई–पाठकों के उपयोग के लिए सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है। ई पाठकों की विशेषताएं जो सकारात्मक उपयोग में योगदान कर सकती हैं, उनमें उनकी पोर्टेबिलिटी और लंबी बैटरी लाइफ, टेक्स्ट की प्रतिक्रिया और अज्ञात शब्दों को परिभाषित करने की क्षमता शामिल है।
- फ्लिप्ड क्लासरूमः फ्लिप्ड क्लासरूम मॉडल, जिसमें कंप्यूटर–निर्देशित निर्देश और कक्षा में इंटरैक्टिव लर्निंग गतिविधियों के माध्यम से घर पर व्याख्यान और अभ्यास शामिल है, एक विस्तारित पाठ्यक्रम की अनुमति दे सकता है। फ्लिप किए गए कक्षाओं के छात्र सीखने के परिणामों पर बहुत कम जांच होती है। फ्लिप की गई कक्षाओं के बारे में छात्रों की धारणा मिश्रित है, लेकिन आम तौर पर सकारात्मक है, क्योंकि वे व्याख्यान के बजाय कक्षा में सहकारी शिक्षण गतिविधियों को पसंद करते हैं।

Unit :- 1.5 Evaluation – continuous and comprehensive evaluation, progress monitoring and documentation (मूल्यांकन – सतत और व्यापक मूल्यांकन, प्रगति निगरानी और दस्तावेजीकरण।) :– सतत और व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) 2009 में भारत के शिक्षा का अधिकार अधिनियम द्वारा निर्देशित मूल्यांकन की एक प्रक्रिया थी। यह मूल्यांकन प्रस्ताव भारत में राज्य सरकारों के साथ–साथ भारत में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा कुछ स्कूलों में छठी से दसवीं कक्षा और बारहवीं के छात्रों के लिए पेश किया गया था।

सतत और व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) का अर्थ है विकास के आवश्यक क्षेत्रों को मापने के लिए छात्र के प्रदर्शन का मूल्यांकन करना। यह एक सतत प्रक्रिया है जिसे समय–समय पर परीक्षण और आकलन के रूप में नियोजित किया जाता है। मोटे तौर पर, यह प्रक्रिया आवश्यक डोमेन नामतः संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनो–प्रेरक के विकास पर केंद्रित है।

हम सभी जानते हैं कि एक अच्छी मूल्यांकन प्रणाली में छात्र की विकास प्रक्रिया के शैक्षिक और सह–शैक्षिक पहलू शामिल होते हैं। शैक्षिक पहलू एक छात्र के लिखित और मौखिक कौशल हैं। और गैर–शैक्षिक पहलुओं में पाठ्येतर गतिविधियों और जीवन–कौशल आदि में प्रदर्शन शामिल है।

सीसीई पैटर्न में छात्र के समग्र विकास पर नजर रखने के लिए रचनात्मक और योगात्मक आकलन शामिल हैं :– इस आवधिक और संपूर्ण मूल्यांकन प्रक्रिया के बिना डिजिटल स्कूलिंग या भौतिक स्कूल संरचना हो, एक शिक्षक छात्रों को रचनात्मक प्रतिक्रिया नहीं दे सकता है। इसलिए, निरंतर और व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया रचनात्मक उपचारात्मक कार्रवाई के लिए एक छात्र की ताकत को उजागर करती है और क्षेत्रों को संबोधित करती है।

सतत और व्यापक मूल्यांकन के उद्देश्य :– सीसीई परीक्षा और मूल्यांकन के बारे में हमारे शिक्षार्थियों के बीच भय और चिंता को कम करने का प्रयास करता है। सीसीई निम्नलिखित तरीकों से शिक्षार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों की मदद करता हैः

- यह ड्रॉपआउट दर को कम करता है क्योंकि शिक्षार्थियों में उनके प्रदर्शन से संबंधित भय और चिंता कम होगी।

EXAM TRICKY SPECIAL EDUCATION Notes For Pyssum

- सीसीई में, परीक्षाओं के संचालन और सीखने पर परीक्षण के बजाय अधिक ध्यान दिया जाता है।
- यह शिक्षार्थियों के समग्र विकास में योगदान देता है।
- सीसीई का उपयोग शिक्षार्थियों को शारीरिक रूप से स्वस्थ, मानसिक रूप से सतर्क, भावनात्मक रूप से संतुलित और सामाजिक रूप से समायोजित करके भविष्य के जीवन के लिए तैयार करने के एक उपकरण के रूप में किया जाता है।
- सीसीई के माध्यम से शिक्षार्थियों को अपनी रुचियों, शौकों और व्यक्तित्वों को विकसित करने के लिए अधिक समय मिलता है।
- यह एक शिक्षार्थी के अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देता है, जिससे छात्र सीखने का अनुकूलन होता है।
- सीसीई का उपयोग शिक्षार्थियों को शारीरिक रूप से स्वस्थ, मानसिक रूप से सतर्क, भावनात्मक रूप से संतुलित और सामाजिक रूप से समायोजित करके भविष्य के जीवन के लिए तैयार करने के एक उपकरण के रूप में किया जाता है।
- सीसीई के माध्यम से शिक्षार्थियों को अपनी रुचियों, शौकों और व्यक्तित्वों को विकसित करने के लिए अधिक समय मिलता है।
- यह एक शिक्षार्थी के अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देता है, जिससे छात्र सीखने का अनुकूलन होता है।

अधिकांश लोग तस्वीरों और वीडियो के माध्यम से अपने जीवन का दस्तावेजीकरण करना पसंद करते हैं। ठीक उसी तरह, दशकों से स्कूल औपचारिक और अनौपचारिक दोनों तरह से सीखने का दस्तावेजीकरण करते रहे हैं। शिक्षक शिक्षार्थियों से तीन उद्देश्यों के लिए अपने स्वयं के सीखने का दस्तावेजीकरण करने के लिए कह सकते हैं:

1. सीखने का दस्तावेजीकरण कलाकृतियों को प्रदर्शित करने पर केंद्रित है: शिक्षार्थी ने क्या किया? सीखने का परिणाम क्या है?

2. सीखने के लिए दस्तावेजीकरण कलाकृतियों की व्याख्या पर केंद्रित है: इस कलाकृति को मेरी सीखने की प्रगति के प्रमाण के रूप में क्यों स्वीकार करते हैं? मेरी असफलताओं और सफलताओं से कोई और कैसे सीख सकता है?

3. प्रलेखन एएस लर्निंग कलाकृतियों को पकड़ने और प्रतिबिंबित करने में शामिल सीखने की प्रक्रिया पर केंद्रित है: सीखने के अवसर के दौरान कब्जा करने योग्य क्या है? मैं मीडिया प्लेटफॉर्म और टूल्स का उपयोग करके अपनी सोच को स्पष्ट रूप से और श्रव्य रूप से कैसे व्यक्त कर सकता हूं?

सीखने के लिए , ,दस्तावेजीकरण के लिए , या सीखने के रूप में मूल्यांकन के लिए प्रत्यक्ष पर्यायवाची नहीं हैं। जबकि मूल्यांकन दस्तावेजीकरण का एक अभिन्न अंग है, दस्तावेजीकरण का सीखने का ढांचा मूल्यांकन से परे है और छात्र और वयस्क शिक्षार्थियों को उनकी सीखने की प्रक्रियाओं में भाग लेने की अनुमति देता है।

Notes For Physum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

Unit 2: Individualised Educational Programme and teaching strategies (व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम और शिक्षण रणनीतियाँ)

Unit :- 2.1 Concept, components of Individualised Educational Programme (IEP) and Individualised family support programme (IFSP) अवधारणा, व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम (आईईपी) के घटक और व्यक्तिगत परिवार सहायता कार्यक्रम (IFSP)

वैयक्तिक शैक्षणिक कार्यक्रम – आई.ई.पी. (Individulized Educational Programme & IEP) :– सामान्य बच्चों की तुलना में बौद्धिक अक्षम बच्चों में बौद्धिक क्षति के परिणामस्वरूप समझने की क्षमता में कमी पाई जाती है । इसके साथ ही बौद्धिक अक्षम बच्चों में वैयक्तिक मिलताएँ इतनी ज्यदा पड़ जाती है कि प्रत्येक बजे के लिए वैयक्तिक शैक्षणिक कार्यक्रम का निर्माण करना आवश्यक हो जाता है । विशेष शिक्षा के आरम्भ से ही वैयक्तिक शैक्षणिक कार्यक्रम को महत्व प्रदान किया जाता रहा है यद्यपि प्रक्रियात्मक तथा योजना परिवर्तन विकसित देशों में कानून निर्माण के बाद शुरू हुआ । सभी विकलांग बच्चों के लिए शिक्षा अधिनियम ' (जेम म्कनबंजपवद वित ।सस भ्ंदकपबंचचमक बैपसकतमद ।बज च्स् 94–142) नवम्बर 1975 में संयुक्त राज्य अमेरिका में पारित किया गया । एक अन्य अधिनियम च्स् 99 457 जन्म से 02 वर्ष तक के बच्चों के उचित सेवाएं उपलब्ध कराता है जबकि छोटे बच्चों के लिए

शीघ्र सेवाओं का प्रावधान च्स्9945 मे च्स्44–142 के समान ही है दोनों अधिनियम के अनुसार बौद्धिक अक्षम बच्चों को उचित एवं निःशुल्क सेवाएं अवश्य प्राप्त होनी चाहिए यह कार्यक्रम व्यक्तिगत स्तर पर लिखित रूप में एक समिति द्वारा तैयार किया जाएगा जिसमें अभिभावक शमिल होंगे तथा एक चाल प्रक्रिया तंत्र द्वारा संरक्षित किया जाएगा । यद्यपि विद्यालय जाने वाले बच्चों के लिए सेवाओं का प्रवधान अक्षमताग्रस्त शिशुओं तथा • किशोरों को दी जाने वाली सेवाओं से भिन्न होगा । अधिनियम के मुख्य उद्देश्य हैं :

- उचित निःशुल्क शिक्षा को सुनिश्चित करना जिसमे व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विशेष शिक्षा तथा सम्बन्धित सेवाएं प्रदान की जाती है ।
- यह देखना कि विकलांगों एवं उनके अभिभावकों के अधिकार सुरक्षित हैं ।
- विकलांग को शिक्षा प्रदान करने के लिए राज्यों तथा स्थानीय निकायों को सहायता प्रदान करना ।
- विकलांग बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के प्रयासों के प्रभाव का आकलन करना तथा सुनिश्चित करना बच्चों की आवश्यकताओं को प्रभावित करने वाले कारक हैं
- सामाजिक आर्थिक स्तर।
- भाषा तथा संस्कृति ।
- अभिभावक की अपेक्षाएँ तथा सहयोग।
- बसे की रूचि तथा क्षमताएँ ।
- समस्यात्मक व्यवहार यदि हो ।

I-E-P- में निम्नलिखित का विवरण शामिल होना चाहिएः

- बच्चे के शैक्षिक प्रदर्शन का वर्तमान स्तर।
- अल्पकालिक निर्देशात्मक उद्देश्यों सहित वार्षिक लक्ष्य।
- बच्चे के लिए प्रदान की जाने वाली विशिष्ट विशेष शिक्षा और संबंधित सेवाएं और बच्चा किस हद तक नियमित शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने में सक्षम होगा।
- सेवाओं की शुरूआत और सेवाओं की प्रत्याशित अवधि के लिए अनुमानित तिथियां।
- कम से कम वार्षिक आधार पर निर्धारित करने के लिए उपयुक्त उद्देश्य मानदंड और मूल्यांकन प्रक्रियाएं और अनुसूची क्या अल्पकालिक निर्देशात्मक उद्देश्यों को पूरा किया जा रहा है।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

Purpose And Needs Of IEP (आईईपी का उद्देश्य और जरूरतें) :–

- बच्चे को जानें और उनकी सीखने की शैली का पता लगाएं, फिर आईईपी बच्चे की जरूरतों को बेहतर ढंग से दर्शाएगा।
- समसामयिक शिक्षकों के लिए उपयोग किया जा सकता है। प्च छात्र की ताकत, क्षमताओं, कमजोर क्षेत्रों, सामाजिक संतुलन, व्यवहार की जरूरतों और बच्चे की शिक्षा और व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक समायोजन की व्यापक व्याख्या की अनुमति देता है।
- आईईपी पर जानकारी शिक्षकों, अभिभावकों और अन्य पेशेवरों को उस जानकारी को संकलित करने के लिए निर्देशित कर सकती है जो छात्र को उसकी शैक्षिक आवश्यकताओं तक पहुंचने के लिए एक विशिष्ट लाभ प्रदान करेगी।
- यह व्यक्तियों की व्यक्तिगत जरूरतों की स्पष्ट समझ के लिए भी अनुमति देता है। आईईपी का मुख्य उद्देश्य प्रदान करना है।
- मानसिक मंदता वाले प्रत्येक बच्चे को उचित शिक्षा और प्रशिक्षण। मानसिक रूप से मंद दो बच्चों के रूप में मेरे पास समान क्षमताएं और जरूरतें नहीं हैं,
- आईईपी का विकास बच्चे की जरूरतों पर निर्भर करता है – आईईपी छात्र की ताकत, क्षमताओं, कमजोर क्षेत्रों, सामाजिक संतुलन, व्यवहार की व्यापक व्याख्या की अनुमति देता है।
- बच्चे की शिक्षा और व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक जरूरतें और समायोजन।
- आईईपी पर जानकारी शिक्षकों, माता–पिता और अन्य पेशेवरों को उस जानकारी को संकलित करने के लिए निर्देशित कर सकती है जो छात्र को उसकी शैक्षिक आवश्यकताओं तक पहुंचने के लिए एक विशिष्ट लाभ प्रदान करेगी।

आईईपी के घटक :–

- बच्चे के बारे में सामान्य पृष्ठभूमि की जानकारी।
- विशिष्ट कौशल में कामकाज के वर्तमान स्तर का आकलन।
- लक्ष्य और अल्पकालिक उद्देश्य।
- उद्देश्य प्राप्त करने के तरीके और सामग्री।
- मूल्यांकन ।

1 बच्चे के बारे में सामान्य पृष्ठभूमि की जानकारी – यह डेटा तब एकत्र किया जाता है जब बच्चे को स्कूल लाया जाता है। जानकारी निम्नलिखित क्षेत्रों में एकत्र की जानी चाहिए:

- पारिवारिक पृष्ठभूमि
- भाई–बहनों के बारे में विवरण
- सामाजिक–आर्थिक स्थिति
- प्रसव पूर्व, प्रसवोत्तर इतिहास
- विकासात्मक इतिहास अन्य प्रासंगिक कारक।

2. विशिष्ट कौशल में कामकाज के वर्तमान स्तर का आकलन :– आकलन एक व्यक्ति के बारे में या उसके लिए निर्देशात्मक , प्रशासनिक निर्णय लेने और मार्गदर्शन करने के लिए जानकारी एकत्र करने और विश्लेषण करने की प्रक्रिया है। क्योंकि पूरा कार्यक्रम मूल्यांकन पर निर्भर करता है।

सामान्य संदर्भ परीक्षण (Norm Reference Test) :– एन.आर.टी. एक मानकीकृत उपाय है। मानकीकृत परीक्षण एक परीक्षण है जिसमें प्रशासन, स्कोरिंग और व्याख्या प्रक्रिया निर्धारित की जाती है। जैसेः इंटेलिजेंस टेस्ट, अचीवमेंट टेस्ट।

मानदंड संदर्भ परीक्षण (Criterion Reference Test) :– सी.आर.टी. छात्र के प्रदर्शन की एक निश्चित मानदंड से तुलना करता है। दूसरे शब्दों में, सी.आर.टी. इस बात से सरोकार रखता है कि कोई बच्चा निर्धारित मानदंड के अनुसार कौशल का प्रदर्शन करता है या नहीं। जैसे : टीचर ने टेस्ट बनाया।

बच्चे के कामकाज के वर्तमान स्तर के मूल्यांकन में शामिल होना चाहिए:

- मोटर कौशलः सकल मोटर, ठीक मोटर स्वयं
- सहायता कौशलः खिलाना (खाना), भोजन के समय की गतिविधियाँ, शौचालय बनाना, कपड़े पहनना, संवारना
- भाषा कौशलः ग्रहणशील भाषा, अभिव्यंजक भाषा सामाजिक कौशल
- अकादमिक कौशलः पढ़ना, लिखना, संख्या, समय, धन मापन
- घरेलू कौशल (घर में और आसपास प्रदर्शन कौशल)
- सामुदायिक अभिविन्यास कौशल
- मनोरंजनात्मक कौशल
- व्यावसायिक कौशल

3. लक्ष्यों का निर्धारण (Setting of goals) :–

- एक वार्षिक लक्ष्य एक शैक्षणिक वर्ष में एक बच्चे के लिए प्रत्याशित उपलब्धि का प्रतिनिधित्व करता है।
- यह एक भविष्यवाणी है। लक्ष्य विकासात्मक क्षेत्रों या डोमेन का प्रतिनिधित्व करते हैं। उदाहरण : रानी अंग्रेजी वर्णमाला पढ़ेगी । (वार्षिक लक्ष्य)
- उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए शिक्षण के तरीके, तकनीक और सामग्री

Notes For Rysum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

- प्ले वे विधि

- मोंटेसरी विधि

- परियोजना विधि।

5. मूल्यांकन उद्देश्यों के पूर्व निर्धारित सेट के संदर्भ में छात्र के प्रदर्शन को मापने के लिए मूल्यांकन आवश्यक है :– बच्चे की प्रगति का मूल्यांकन करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

1. शिक्षक की ओर से पक्षपात नहीं होना चाहिए।
2. मूल्यांकन मात्रात्मक और गुणात्मक होना चाहिए।
3. परिणामों की लिखित और मौखिक रिपोर्ट का प्रावधान होना चाहिए।
4. मूल्यांकन निरंतर होना चाहिए और बच्चे के लिए कार्यक्रमों की आगे की योजना बनाना चाहिए।

व्यक्तिगत परिवार सहायता योजना (The Individualized Family Support Plan) :– व्यक्तिगत परिवार सहायता योजना एक लिखित उपचार योजना या दस्तावेज है जो बच्चे और परिवार की ताकत और जरूरतों की पहचान करता है, लक्ष्य निर्धारित करता है (बच्चे और परिवार के सदस्यों दोनों के लिए) या बच्चे के लिए प्रारंभिक हस्तक्षेप सेवाओं का मानचित्रण करता है और निर्धारित करता है इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जो कदम उठाए जाएंगे। यह केंद्रीय अवधारणा और समझ के कारण सेवाओं के लिए एक परिवार आधारित दृष्टिकोण है कि बच्चे के परिवार का समर्थन करने से बच्चे का समर्थन होता है या परिवार बच्चे का सबसे बड़ा संसाधन है और इसे योजना के सभी चरणों में शामिल किया जाना चाहिए। एक बहु–विषयक टीम, जिसमें माता–पिता शामिल हैं, प्रत्येक बच्चे और परिवार के लिए पात्रता के निर्धारण के बाद एक व्यक्तिगत परिवार सहायता योजना विकसित करती है।

IFSP कई मायनों में IEP से अलग है (The IFSP differs from the IEP in several ways) :–

- यह परिवार के इर्द–गिर्द घूमता है, क्योंकि यह परिवार ही है जो बच्चे के जीवन में स्थिर रहता है।.
- इसमें केवल पात्र बच्चे पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय परिवार के लिए लक्षित परिणाम शामिल हैं।
- यह IFSP के विकास, कार्यान्वयन और मूल्यांकन के दौरान परिवार की मदद करने के लिए एक सेवा समन्वयक का नाम लेता है।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

अवयव (COMPONENTS) :–

1. बच्चे के कामकाज का मौजूदा स्तर और जरूरत :–.

- इसमें ताकत, रुचियां और चिंता के क्षेत्र शामिल हैं।

- क्षेत्रों में भौतिक, संज्ञानात्मक, संचार, सामाजिक विकास और अनुकूल वातावरण शामिल हैं।

2. परिवार की जानकारी :– इसमें परिवार की प्राथमिकताओं, चिंताओं और संसाधनों के बारे में विवरण शामिल हैं क्योंकि वे बच्चे के विकास को बढ़ाने से संबंधित हैं।

3. प्रमुख परिणामों का विवरण :–

- इसमें बच्चे और परिवार के लिए प्राप्त किए जाने वाले अपेक्षित प्रमुख परिणामों (या लक्ष्यों) का विवरण लिखना शामिल है।
- ये अल्पकालिक लक्ष्य होने चाहिए न कि बच्चे के पूरे जीवन के लिए उपलब्धि लक्ष्य।
- परिणाम या लक्ष्य प्रासंगिक विशिष्ट और मापने योग्य होने चाहिए।

- इसमें परिणाम प्राप्त करने की दिशा में किस हद तक प्रगति की जा रही है, यह निर्धारित करने के लिए उपयोग किए जाने वाले मानदंड, प्रक्रियाएं और समय–सीमा शामिल होनी चाहिए।

4. समर्थन और सेवाएं (Support and Services) :–

- बच्चे और परिवार की दैनिक दिनचर्या और गतिविधियों में प्रदान किए गए घोषित परिणामों को प्राप्त करने के लिए बच्चे को मिलने वाली सहायता और सेवाओं को विस्तार से सूचीबद्ध किया जाना चाहिए।
- सहायता और सेवाएं शैक्षिक, चिकित्सा, पैराप्रोफेशनल और सामाजिक सेवाओं के रूप में हो सकती हैं।

5. स्थान और समय :–

- जहां प्राकृतिक वातावरण (स्कूल, घर या समुदाय) में सेवाएं प्रदान की जाएंगी, उनका उल्लेख किया जाना चाहिए।
- सेवाएं कब शुरू होंगी, वे कितनी बार होंगी और कितनी देर तक चलेंगी इसका भी उल्लेख किया जाना चाहिए।
- इन सेवाओं के लिए कौन भुगतान करेगा, इसका भी उल्लेख किया जाना चाहिए (राज्य और सहित इन सेवाओं के भुगतान के लिए विभिन्न प्रकार के वित्त पोषण संसाधनों का उपयोग किया जा सकता है) संघीय सरकारी संसाधन, निजी बीमा, पारिवारिक संसाधन औरध्या स्थानीय एजेंसियां।

6. सेवा समन्वयक :–

ए :– सेवा समन्वयक का नाम होना चाहिए। यह व्यक्ति IFSP प्रक्रिया के दौरान सहायता के लिए परिवार का प्राथमिक संपर्क है, और योजना के कार्यान्वयन और अन्य एजेंसियों और लोगों के साथ समन्वय के लिए जिम्मेदार है।

बी :– उसे परिवार को अन्य परिवारों से भी जोड़ना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे अपने अधिकारों और प्रक्रियात्मक सुरक्षा उपायों को समझें।

Unit :- 2.2 Developing IEP for homebased teaching programme, special school setting and inclusive school setting. Teaching strategies for group teaching in special schools, individual, small group and large group instruction (घर आधारित शिक्षण कार्यक्रम, विशेष स्कूल सेटिंग और समावेशी के लिए आईईपी विकसित करना स्कूल सेटिंग। विशेष स्कूलों, व्यक्तिगत, छोटे समूह और बड़े समूह में सामूहिक शिक्षण के लिए शिक्षण रणनीतियाँ)

Developing IEP (IEP विकसित करना)

The IEP Team Members (IEP टीम के सदस्य) :– कुछ व्यक्तियों को बच्चे के व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम को लिखने में शामिल होना चाहिए ये हैं:

- बच्चे के माता–पिता
- बच्चे के विशेष शिक्षा शिक्षकों या प्रदाताओं में से कम से कम एक बच्चे के नियमित शिक्षा
- शिक्षकों में से कम से कम एक (यदि छात्र नियमित शिक्षा के माहौल में भाग ले रहा है या हो सकता है)
- स्कूल प्रणाली का एक प्रतिनिधि ।
- एक व्यक्ति जो मूल्यांकन के परिणामों की व्याख्या कर सकता है ।
- किसी भी अन्य एजेंसियों के प्रतिनिधि जो संक्रमण सेवाओं के भुगतान या प्रदान करने के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं ।
- छात्र, जैसा उचित हो, और अन्य व्यक्ति जिन्हें बच्चे के बारे में ज्ञान या विशेष विशेषज्ञता है।

एक IEP टीम का सदस्य टीम के एक से अधिक पदों को भर सकता है यदि उचित रूप से योग्य और नामित किया गया हो। उदाहरण के लिए, स्कूल प्रणाली का प्रतिनिधि वह व्यक्ति भी हो सकता है जो बच्चे के मूल्यांकन परिणामों की व्याख्या कर सकता है। इन लोगों को बच्चे का आईईपी लिखने के लिए एक टीम के रूप में मिलकर काम करना चाहिए। आईईपी लिखने के लिए

एक बैठक यह तय करने के 30 कैलेंडर दिनों के भीतर आयोजित की जानी चाहिए कि बच्चा विशेष शिक्षा और संबंधित सेवाओं के लिए योग्य है।

टीम का प्रत्येक सदस्य आईईपी बैठक में महत्वपूर्ण जानकारी लाता है। सदस्य अपनी जानकारी साझा करते हैं और बच्चे के व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम को लिखने के लिए मिलकर काम करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की जानकारी बच्चे के बारे में टीम की समझ और बच्चे को किन सेवाओं की आवश्यकता होती है, को जोड़ती है। माता–पिता प्च् टीम के प्रमुख सदस्य हैं। वे अपने बच्चे को अच्छी तरह से जानते हैं और अपने बच्चे की ताकत और जरूरतों के साथ–साथ अपने बच्चे की शिक्षा को बढ़ाने के लिए अपने विचारों के बारे में बात कर सकते हैं। वे इस बात की अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं कि उनका बच्चा कैसे सीखता है, उसकी रुचियां क्या हैं, और बच्चे के अन्य पहलू जो केवल एक माता–पिता ही जान सकते हैं। वे सुन सकते हैं कि टीम के अन्य सदस्य क्या सोचते हैं कि उनके बच्चे को स्कूल में काम करने की जरूरत है और वे अपने सुझाव साझा कर सकते हैं। वे यह भी रिपोर्ट कर सकते हैं कि बच्चा स्कूल में जो कौशल सीख रहा है उसका उपयोग घर पर किया जा रहा है या नहीं।

आईईपी बैठक में भी शिक्षक महत्वपूर्ण भागीदार हैं। यदि बच्चा नियमित शिक्षा के माहौल में भाग ले रहा है (या हो सकता है) तो बच्चे के नियमित शिक्षा शिक्षकों में से कम से कम एक आईईपी टीम में होना चाहिए। नियमित शिक्षा शिक्षक के पास टीम के साथ साझा करने के लिए बहुत कुछ है उदाहरण के लिए, वह इस बारे में बात कर सकता है ।

- नियमित कक्षा में सामान्य पाठ्यक्रमय
- शैक्षिक कार्यक्रम में सहायता, सेवाएं या परिवर्तन जो बच्चे को सीखने और हासिल करने में मदद करेगा
- व्यवहार के साथ बच्चे की मदद करने के लिए रणनीतियाँ, यदि व्यवहार एक समस्या है। नियमित शिक्षा शिक्षक आईईपी टीम के साथ स्कूल के कर्मचारियों के लिए आवश्यक सहायता के बारे में भी चर्चा कर सकता है।
- अपने वार्षिक लक्ष्यों की ओर आगे बढ़ें।
- सामान्य पाठ्यक्रम में शामिल हों और प्रगति करें।
- पाठ्येतर और अन्य गतिविधियों में भाग लेना।
- विकलांग और निःशक्त दोनों तरह के अन्य बच्चों के साथ शिक्षित हों।

स्कूल स्टाफ के समर्थन में व्यावसायिक विकास या अधिक प्रशिक्षण शामिल हो सकते हैं। व्यावसायिक विकास और प्रशिक्षण शिक्षकों, प्रशासकों, बस चालकों, कैफेटेरिया श्रमिकों और विकलांग बच्चों के लिए सेवाएं प्रदान करने वाले अन्य लोगों के लिए महत्वपूर्ण हैं। बच्चे के विशेष शिक्षा शिक्षक विकलांग बच्चों को शिक्षित करने के तरीके के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी और अनुभव प्रदान करते हैं। विशेष शिक्षा में अपने प्रशिक्षण के कारण, यह शिक्षक इस तरह के मुद्दों पर बात कर सकता है ।

- बच्चे को सीखने में मदद करने के लिए सामान्य पाठ्यक्रम को कैसे संशोधित किया जाए ।
- पूरक सहायता और सेवाएं जो बच्चे को नियमित कक्षा और अन्य जगहों में सफल होने के लिए आवश्यक हो सकती हैं।
- परीक्षण को कैसे संशोधित किया जाए ताकि छात्र यह दिखा सके कि उसने क्या सीखा है।
- एक संसाधन कक्ष या विशेष शिक्षा सेवाएं प्राप्त करने वाले छात्रों के लिए समर्पित विशेष कक्षा में छात्र के साथ काम करना।
- टीम नियमित शिक्षा शिक्षक के साथ पढ़ाती है बच्चे की अनूठी जरूरतों को पूरा करने के बारे में विशेषज्ञता प्रदान करने के लिए अन्य स्कूल स्टाफ, विशेष रूप से नियमित शिक्षा शिक्षक के साथ काम करें।

आईईपी टीम का एक अन्य महत्वपूर्ण सदस्य वह व्यक्ति है जो यह व्याख्या कर सकता है कि उपयुक्त निर्देश तैयार करने के संदर्भ में बच्चे के मूल्यांकन के परिणाम क्या हैं। मूल्यांकन के परिणाम यह निर्धारित करने में बहुत उपयोगी होते हैं कि बच्चा वर्तमान में स्कूल में कैसा कर रहा है और बच्चे को किन क्षेत्रों की आवश्यकता है। आईईपी टीम के इस सदस्य को बच्चे के मूल्यांकन परिणामों के निर्देशात्मक निहितार्थों के बारे में बात करने में सक्षम होना चाहिए, जो टीम को बच्चे की समस्याओं को संबोधित करने के लिए उपयुक्त निर्देश की योजना बनाने में मदद करेगा।

जब संक्रमण उम्र के छात्र के लिए एक आईईपी विकसित किया जा रहा है, तो संक्रमण सेवा एजेंसियों के प्रतिनिधि महत्वपूर्ण भागीदार हो सकते हैं। (संक्रमण के बारे में अधिक जानकारी के लिए, इस खंड के अंत में प्रदान की गई जानकारी देखें।) जब भी बैठक का उद्देश्य आवश्यक संक्रमण सेवाओं पर विचार करना हो, तो स्कूल को किसी अन्य एजेंसी के

Notes For Pyscum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

प्रतिनिधि को आमंत्रित करना चाहिए जो प्रदान करने या प्रदान करने के लिए जिम्मेदार होने की संभावना है। संक्रमण सेवाओं के लिए भुगतान। यह व्यक्ति छात्र को किसी भी संक्रमण सेवाओं की योजना बनाने में टीम की मदद कर सकता है। वह एजेंसी के संसाधनों को भुगतान करने या आवश्यक संक्रमण सेवाएं प्रदान करने के लिए भी प्रतिबद्ध कर सकता है। यदि वह बैठक में शामिल नहीं होता है, तो स्कूल को छात्र की संक्रमण सेवाओं की योजना में एजेंसी की भागीदारी प्राप्त करने के लिए वैकल्पिक कदम उठाने होंगे।

और, अंतिम लेकिन कम से कम, छात्र IEP टीम का सदस्य भी हो सकता है। यदि बैठक में संक्रमण सेवा की जरूरतों या संक्रमण सेवाओं पर चर्चा की जा रही है, तो छात्र को उपस्थित होने के लिए आमंत्रित किया जाना चाहिए। अधिक से अधिक छात्र अपनी आईईपी बैठकों में भाग ले रहे हैं और उनका नेतृत्व भी कर रहे हैं। यह उन्हें अपनी शिक्षा में एक मजबूत आवाज रखने की अनुमति देता है और उन्हें आत्म–वकालत और आत्मनिर्णय के बारे में बहुत कुछ सिखा सकता है।

प्लेसमेंट तय करना (Deciding Placement) :– इसके अलावा, बच्चे का प्लेसमेंट (जहां आईईपी किया जाएगा) तय किया जाना चाहिए। प्लेसमेंट का निर्णय लोगों के एक समूह द्वारा किया जाता है, जिसमें माता–पिता और बच्चे के बारे में जानने वाले अन्य लोग शामिल हैं, मूल्यांकन के परिणामों का क्या अर्थ है, और किस प्रकार के प्लेसमेंट उपयुक्त हैं। कुछ राज्यों में, प्च टीम प्लेसमेंट निर्णय लेने वाले समूह के रूप में कार्य करती है। अन्य राज्यों में, यह निर्णय लोगों के दूसरे समूह द्वारा किया जा सकता है। सभी मामलों में, माता–पिता को उस समूह के सदस्य होने का अधिकार है जो उनके शैक्षिक स्थान का निर्णय करता है । प्लेसमेंट संबंधी निर्णय आईडिया की कम से कम प्रतिबंधात्मक पर्यावरण आवश्यकताओं के अनुसार किए जाने चाहिए– जिन्हें आमतौर पर एलआरई के रूप में जाना जाता है। इन आवश्यकताओं में कहा गया है कि, अधिकतम उपयुक्त सीमा तक, विकलांग बच्चों को विकलांग बच्चों के साथ शिक्षित किया जाना चाहिए।

कानून में यह भी स्पष्ट रूप से कहा गया है कि विशेष कक्षाएं, अलग स्कूल, या अन्य विकलांग बच्चों को नियमित शैक्षिक वातावरण से हटाना तभी हो सकता है जब बच्चे की विकलांगता की प्रकृति या गंभीरता ऐसी हो कि पूरक सहायता के उपयोग के साथ नियमित कक्षाओं में शिक्षा और सेवाओं को संतोषजनक ढंग से प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

किस प्रकार के प्लेसमेंट हैं? बच्चे की जरूरतों के आधार पर, उसका आईईपी नियमित कक्षा में (आवश्यकतानुसार पूरक सहायता और सेवाओं के साथ), एक विशेष कक्षा में (जहां कक्षा में प्रत्येक छात्र कुछ या कुछ के लिए विशेष शिक्षा सेवाएं प्राप्त कर रहा है) में किया जा सकता है। पूरे दिन), एक विशेष स्कूल में, घर पर, अस्पताल और संस्थान में, या किसी अन्य सेटिंग में। एक स्कूल प्रणाली यह सुनिश्चित करने के लिए अपने दायित्व को पूरा कर सकती है कि बच्चे के पास उपयुक्त स्थान उपलब्ध हैः–

- बच्चे के लिए अपने आप एक उपयुक्त कार्यक्रम उपलब्ध कराना ।
- उपयुक्त कार्यक्रम प्रदान करने के लिए किसी अन्य एजेंसी के साथ अनुबंध करना ।
- बच्चे के लिए उपयुक्त कार्यक्रम प्रदान करने या भुगतान करने के लिए आईडिया के अनुरूप किसी अन्य तंत्र या व्यवस्था का उपयोग करना ।

प्लेसमेंट समूह अपने निर्णय को आईईपी पर आधारित करेगा और बच्चे के लिए कौन सा प्लेसमेंट विकल्प उपयुक्त है। क्या बच्चे को उचित सहायता और समर्थन के साथ नियमित कक्षा में शिक्षित किया जा सकता है? यदि बच्चे को उचित सहायता और समर्थन के साथ भी नियमित कक्षा में शिक्षित नहीं किया जा सकता है, तो प्लेसमेंट समूह बच्चे के लिए अन्य प्लेसमेंट के बारे में बात करेगा।

आईईपी लागू करना (Implementing the IEP) :– एक बार IEP लिखे जाने के बाद, इसे पूरा करने का समय आ गया है – दूसरे शब्दों में, छात्र को प्च में सूचीबद्ध विशेष शिक्षा और संबंधित सेवाएं प्रदान करने के लिए। इसमें सभी पूरक सहायता और सेवाएं और कार्यक्रम संशोधन शामिल हैं जिन्हें आईईपी टीम ने छात्र के लिए अपने आईईपी लक्ष्यों की ओर उचित रूप से आगे बढ़ने, सामान्य पाठ्यक्रम में शामिल होने और प्रगति करने, और अन्य स्कूल गतिविधियों में भाग लेने के लिए आवश्यक के रूप में पहचाना है। हालांकि इस गाइड के दायरे से बाहर छात्र के आईईपी को लागू करने में शामिल कई मुद्दों पर विस्तार से चर्चा करना है, कुछ सुझाव दिए जा सकते हैं।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

• छात्र को सेवाएं प्रदान करने में शामिल प्रत्येक व्यक्ति को आईईपी को पूरा करने के लिए अपनी जिम्मेदारियों को जानना और समझना चाहिए। इससे यह सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी कि छात्र को उन सेवाओं को प्राप्त होता है जिनकी योजना बनाई गई है, जिसमें विशिष्ट संशोधन और आवास शामिल हैं जिन्हें आईईपी टीम ने आवश्यक के रूप में पहचाना है।

• टीमवर्क आईईपी को पूरा करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। छात्र को सेवाएं और सहायता प्रदान करने में कई पेशेवरों के शामिल होने की संभावना है। विशेषज्ञता और अंतर्दृष्टि साझा करना हर किसी के काम को बहुत आसान बनाने में मदद कर सकता है और निश्चित रूप से विकलांग छात्रों के लिए परिणामों में सुधार कर सकता है। स्कूल शिक्षकों, सहायक कर्मचारियों औरध्या पैराप्रोफेशनल को छात्रों की अनूठी जरूरतों को पूरा करने के लिए सामान्य पाठ्यक्रम को अपनाने जैसे मामलों पर योजना बनाने या एक साथ काम करने के लिए समय देकर टीम वर्क को प्रोत्साहित कर सकते हैं। विकलांग बच्चों के लिए सेवाएं प्रदान करने वाले शिक्षक, सहायक कर्मचारी और अन्य लोग प्रशिक्षण और कर्मचारियों के विकास का अनुरोध कर सकते हैं।

• घर और स्कूल के बीच संचार भी महत्वपूर्ण है। माता–पिता इस बारे में जानकारी साझा कर सकते हैं कि घर पर क्या हो रहा है और बच्चा स्कूल में क्या सीख रहा है, इस पर निर्माण कर सकते हैं। यदि बच्चे को स्कूल में कठिनाई हो रही है, तो माता–पिता अंतर्दृष्टि प्रदान करने में सक्षम हो सकते हैं या संभावित कारणों के साथ–साथ संभावित समाधानों का पता लगाने में स्कूल की सहायता कर सकते हैं।

• नियमित प्रगति रिपोर्ट जिसके लिए कानून की आवश्यकता होती है, माता–पिता और स्कूलों को उसके वार्षिक लक्ष्यों की ओर बच्चे की प्रगति की निगरानी करने में मदद करेगी। यह जानना महत्वपूर्ण है कि क्या बच्चा अपेक्षित प्रगति नहीं कर रहा है या क्या वह अपेक्षा से अधिक तेजी से प्रगति कर रहा है। माता–पिता और स्कूल के कर्मचारी मिलकर बच्चे की जरूरतों को पूरा कर सकते हैं क्योंकि वे जरूरतें स्पष्ट हो जाती हैं।

आईईपी की समीक्षा और संशोधन (Reviewing and Revising the IEP) :– आईईपी टीम को वर्ष में कम से कम एक बार बच्चे के आईईपी की समीक्षा करनी चाहिए। इस समीक्षा का एक उद्देश्य यह देखना है कि बच्चा अपने वार्षिक लक्ष्यों को प्राप्त कर रहा है या नहीं। टीम को बच्चे के व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम को संशोधित करना चाहिए।

- बच्चे की प्रगति या वार्षिक लक्ष्यों की ओर और सामान्य पाठ्यक्रम में अपेक्षित प्रगति की कमी ।
- बच्चे के किसी भी पुनर्मूल्यांकन के माध्यम से एकत्रित जानकारी।
- बच्चे के बारे में जानकारी जो माता–पिता साझा करते हैं।
- बच्चे के बारे में जानकारी जो स्कूल साझा करता है ।
- बच्चे की प्रत्याशित जरूरतें।
- अन्य मामले।

हालाँकि, IDEA को वर्ष में कम से कम एक बार इस IEP समीक्षा की आवश्यकता होती है, वास्तव में टीम IEP की अधिक बार समीक्षा और संशोधन कर सकती है। या तो माता–पिता या स्कूल बच्चे के आईईपी को संशोधित करने के लिए आईईपी बैठक आयोजित करने के लिए कह सकते हैं। उदाहरण के लिए, हो सकता है कि बच्चा अपने प्म्च लक्ष्यों की ओर प्रगति नहीं कर रहा हो, और उसके शिक्षक या माता–पिता चिंतित हो सकते हैं। दूसरी ओर, हो सकता है कि बच्चा IEP में अधिकांश या सभी लक्ष्यों को प्राप्त कर चुका हो, और नए लक्ष्यों को लिखने की आवश्यकता हो। किसी भी स्थिति में, IEP टीम IEP को संशोधित करने के लिए बैठक करेगी।

विशेष स्कूलों, व्यक्तिगत, छोटे समूह और बड़े समूह में सामूहिक शिक्षण के लिए शिक्षण रणनीतियाँ :– विभिन्न विधियां विभिन्न प्रकार के छात्र जुड़ाव और सीखने के अवसरों की सुविधा प्रदान करती हैं। 'इसे मिलाना' महत्वपूर्ण है। आप हर समय सभी लोगों को खुश नहीं कर सकते हैं लेकिन अपने छोटे समूह शिक्षण सत्र को विविधता को ध्यान में रखते हुए डिजाइन करना आपके शिक्षार्थियों को कुछ समय के लिए अपने आराम क्षेत्र में काम करने की अनुमति देता है और उन्हें दूसरों के लिए नई चुनौतियां प्रदान करता है। छोटे समूह शिक्षण सत्र का नाम अपेक्षित समग्र शिक्षण दृष्टिकोण पर कुछ स्पष्टता प्रदान करेगा। ये मौलिक रूप से भिन्न हैं कि शिक्षक से किस प्रकार निर्देशन की अपेक्षा की जाती है:

- ट्यूटोरियल (अकादमिक): छात्रों के छोटे समूह किसी मुद्दे, उनके निबंधों या एक सामयिक समस्या पर चर्चा करते हैं।
- व्यक्तिगत ट्यूटोरियलः ऊपर के रूप में, लेकिन छात्रों को अधिक व्यापक रूप से समर्थन देने में एक देहाती भूमिका भी है यदि उन्हें शैक्षणिक और व्यक्तिगत कठिनाइयाँ हैं।
- समस्या वर्गः विशेष रूप से दी गई समस्याओं के एक सेट के माध्यम से काम करने पर केंद्रित ये अक्सर गणितीय, सांख्यिकीय या कम्प्यूटेशनल होते हैं।
- सेमिनारः समूह जर्नल पेपर या अन्य शिक्षण सामग्री पर चर्चा करते हैं।
- समस्या–आधारित शिक्षाः छात्रों का एक समूह किसी दिए गए परिदृश्य या समस्या के समाधान के निदान के लिए काम करता है। समूह के प्रत्येक समस्या पर 2 या 3 बार मिलने की संभावना है, हर बार एक गैर–विशेषज्ञ सुविधाकर्ता से अधिक जानकारी प्राप्त करना।
- छात्र–नेतृत्व वाले समूहः छात्र इस विषय पर निर्णय लेते हैं और इस पर चर्चा कैसे की जाएगीय ट्यूटर केवल देखता है या यदि आवश्यक हो तो हस्तक्षेप कर सकता है।
- स्वयं सहायता समूहः ट्यूटर को संसाधन के रूप में उपयोग कर रहे छात्रों द्वारा चलाए जा रहे हैं।
- एक्शन लर्निंग सेटः ट्यूटर सेट के लिए एक सूत्रधार के रूप में कार्य करता है, प्रत्येक छात्र दूसरों के साथ प्रश्न पूछने और प्रस्तुत करने वाले छात्र को आगे के तरीकों का सुझाव देने के साथ–साथ मुद्दों को प्रस्तुत करता है, फिर तय करता है कि किस बिंदु पर कार्य करना है।

कुछ कक्षाओं में यह अपेक्षा की जाती है कि शिक्षक बहुत जानकार होंगे और विशिष्ट विषय या विषय पर नेतृत्व करने के लिए तैयार रहेंगे। शिक्षक कक्षा में अपनी विशेषज्ञता साझा करने और समूह को जानकारी और अपने विचार 'प्रस्तुत' करने के लिए है। कई छोटे समूह शिक्षण सत्रों में यह निश्चित रूप से शिक्षक की भूमिका नहीं होती है। एक अधिक सामान्य स्थिति यह है कि शिक्षक सीखने की प्रक्रिया को प्रबंधित करने में मदद करने के लिए, चर्चा को सुविधाजनक बनाने और छात्रों को सीखने की गतिविधियों और कार्यों के माध्यम से काम करने में सहायता करने के लिए है। ऐसे कार्य जो छात्रों को अपने लिए सोचने के लिए प्रोत्साहित करने, एक दूसरे के साथ अपने विचारों को साझा करने और उन्हें बहुत मूल्यवान, अकादमिक और संचार कौशल का एक सेट विकसित करने में मदद करने के लिए डिजाइन किए गए हैं।

Unit :- 2.3 Class room management - team teaching, shadow teaching, peer tutoring and cooperative learning, use of positive behavioural intervention strategies (PBIS) क्लास रूम मैनेजमेंट – टीम टीचिंग, शैडो टीचिंग, पीयर ट्यूटरिंग और कोऑपरेटिव सीखना, सकारात्मक व्यवहार हस्तक्षेप रणनीतियों का उपयोग (PBIS)

टीम टीचिंग (Team Teaching) :– एक निर्देशात्मक स्थिति जहां पूरक शिक्षण कौशल रखने वाले दो या दो से अधिक शिक्षक विशेष निर्देश को पूरा करने के लिए लचीली शेड्यूलिंग और समूहीकरण तकनीकों का उपयोग करके छात्रों के एक समूह के लिए निर्देश की योजना बनाते हैं और उन्हें लागू करते हैं। सामूहिक शिक्षण में सहकारी नियोजन की अवधारणा काफी हद तक अनुभव की जाती है। टीम टीचिंग में एक से अधिक शिक्षकों का दिमाग बेहतर माना जाता है। टीम शिक्षण में एक लोकतांत्रिक रवैया पूरी तरह से देखा जाता है।

विशेषताएँ (CHARACTERISTICS) :–

- टीम शिक्षण मूल रूप से एक औपचारिक प्रकार का सहकारी कर्मचारी संगठन है।
- टीम शिक्षण में, शिक्षकों का एक समूह एक शिक्षण कार्यक्रम की योजना बनाने, उसे चलाने और मूल्यांकन करने की जिम्मेदारी साझा करता है।
- टीम शिक्षण का परिणाम बेहतर निर्देश में होता है।
- टीम शिक्षण उपलब्ध शिक्षक विशेषज्ञता के सर्वोत्तम उपयोग पर केंद्रित है।

उद्देश्य (OBJECTIVES) :–

- छात्रों के एक विशिष्ट बड़े समूह को प्रतिभाशाली, प्रतिभाशाली और श्रेष्ठ शिक्षकों को शिक्षण का लाभ देना।

- उपलब्ध संसाधनों और शिक्षकों की विशेषज्ञता का सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना।
- शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में सहयोग या साझा जिम्मेदारी की भावना विकसित करना।
- शिक्षार्थियों और संस्थानों की जरूरतों को पूरा करने और विशिष्ट सामग्री क्षेत्र से संबंधित कठिनाइयों को दूर करने के लिए।

फायदे (ADVANTAGES) :–

- निर्देश की गुणवत्ता को बढ़ाया जाता है।
- किफायती।
- अधिक विशेषज्ञों के लिए समूह का एक्सपोजर।
- शिक्षक की व्यावसायिक स्थिति का विकास।
- मानवीय संबंधों का विकास।
- मुफ्त चर्चा का अवसर।
- लचीलापन।

सीमाएँ (LIMITATIONS) :–

- आवास की कमी।
- सहयोग की कमी।
- सत्ता और जिम्मेदारियों का प्रत्यायोजन
- महंगा तरीका।
- छोटे समूह की गतिशीलता की अवहेलना।
- शोध कार्य की कमी,
- शिक्षकों की भूमिकाओं में बदलाव।
- शिक्षकों के विचारों में विविधता।
- परिवर्तन और परंपरावाद के बीच संघर्ष।
- टीम शिक्षण में लचीलेपन की कमी।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

छाया शिक्षण (Shadow Teaching) :– एक छाया शिक्षक की भूमिका उस छात्र का समर्थन करना है जिसे सीखने की प्रक्रिया में अंतराल को भरने में मदद करने के लिए अपने स्कूल शिक्षाविदों में इष्टतम सीखने , समर्थन की आवश्यकता होती है, जिससे छात्र को आत्मविश्वास बनाने के साथ–साथ बढ़ावा देने में मदद मिलती है। छात्र को महत्वपूर्ण अवधारणाओं पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करके कक्षा में सकारात्मक बातचीत, और कुल मिलाकर छात्र को शैक्षणिक और सामाजिक कौशल विकसित करने में मदद करता है।

शैडो टीचर की भूमिका स्कूल के पूरे दिन, अकादमिक और मनोवैज्ञानिक रूप से उन छात्रों को अतिरिक्त सहायता प्रदान करना है, जिन्हें ऑप्टिमल लर्निंग (व्स्) प्रोग्राम में नामांकित किया गया है, जिन्हें इस अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता है। छाया शिक्षक कई तरह से छात्र का समर्थन करता है, जिसमें सीखने की प्रक्रिया में मौजूद अंतराल को भरना, छात्र को आत्मविश्वास बनाने में मदद करना, कक्षा में बातचीत को बढ़ावा देना और यह सुनिश्चित करना शामिल है कि छात्र कक्षा में केंद्रित रहता है। छाया शिक्षक भी छात्र को कक्षा के लिए तैयार और व्यवस्थित करने में मदद करता है, छात्र को सीखने के दृष्टिकोण के साथ मदद करता है और उसे एक जिम्मेदार और प्रतिबद्ध छात्र होने की याद दिलाता है।

छाया शिक्षक से विद्यार्थी को लाभ होता है क्योंकि :–

- छात्र नियमित कक्षा निर्देश और अपने साथियों के साथ बातचीत का पालन करता है।
- छात्र अपनी कमजोरियों के बजाय अपनी ताकत पर निर्माण करना सीखता है।
- छात्र को शैक्षिक संवर्धन प्राप्त होता है।

- छाया शिक्षक द्वारा विद्यालय को लाभ होता है क्योंकि विशेष छात्र की विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक सहयोगात्मक प्रयास होता है।
- माता–पिता को लाभ होता है क्योंकि उनके पास एक वयस्क के साथ दैनिक संचार होता है जो जानता है कि स्कूल में क्या हो रहा है और कौन सी घटनाएं हो रही हैं। साथ ही, माता–पिता में अपने बच्चे के लिए सुरक्षा की भावना होती है।

कक्षा में छाया शिक्षक की भूमिका अपने छात्र की मदद करना हैः–

- ध्यान केंद्रित रहना ।
- कक्षा में उचित रूप से भाग लें ।
- ऐसे वातावरण में कार्य करना जहाँ कई विकर्षण हों।
- नए कार्यों के प्रति अपने दृष्टिकोण में सकारात्मक रहें ।
- उसे आत्म नियंत्रण हासिल करने में मदद करना।
- आँख से संपर्क बनाए रखकर संचार में सुधार ।
- उसे अपने शिक्षकों से मदद मांगने के लिए प्रोत्साहित करना ।
- बच्चों के साथ उसकी विशेष रुचियां साझा करना ।
- सामाजिक परिस्थितियों में अपने सहपाठियों को उचित प्रतिक्रिया देने में उसकी मदद करना।
- यह देखते हुए कि उपयुक्त होने पर वह अपने साथियों की तारीफ करता है ।
- मैं उसे अपने साथियों के साथ चर्चा शुरू करने के लिए प्रेरित करता हूं।
- उसे अपने सहपाठियों की रुचियों को सीखने के लिए प्रोत्साहित करना।
- हर बच्चा अद्वितीय है इसलिए, प्रत्येक विशिष्ट छात्र के साथ प्रत्येक छाया शिक्षक द्वारा उपयोग की जाने वाली शिक्षण विधियों और तकनीकों में अंतर होगा।

मित्र शिक्षक (Peer Tutoring) :– विशेष शिक्षा में पीयर ट्यूशन एक ऐसी रणनीति है जहां उच्च प्रदर्शन करने वाले छात्रों को कम प्रदर्शन करने वाले छात्रों या विकलांग छात्रों के साथ शैक्षणिक सामग्री की समीक्षा या पढ़ाने के लिए जोड़ा जाता है। यह रणनीति दोनों पक्षों के छात्रों को सामग्री में महारत हासिल करने और विशिष्ट कौशल में आत्मविश्वास हासिल करने में मदद करने के लिए सिद्ध हुई है। सभी विषय क्षेत्रों में सभी उम्र और स्तरों के छात्रों के साथ पीयर ट्यूशन लागू किया गया है। विकलांग छात्रों और उनके विशिष्ट साथियों की मदद करने के लिए एक सहकर्मी शिक्षण कार्यक्रम शुरू करना अकादमिक उपलब्धि को बढ़ावा देने का एक प्रभावी और कुशल तरीका हो सकता है। शिक्षकों और प्रशासकों को एक कार्यक्रम को लागू करने के विभिन्न तरीकों के साथ–साथ फायदे और कमजोरियों पर विचार करना चाहिए क्योंकि वे यह निर्धारित करते हैं कि एक सहकर्मी शिक्षण कार्यक्रम उनके स्कूलों और कक्षाओं में उपयुक्त होगा या नहीं।

लाभ (Advantages) :– विशेष शिक्षा में सहकर्मी शिक्षण शामिल सभी छात्रों के लिए एक प्रभावी शिक्षण पद्धति हो सकती है।

- पीयर ट्यूटर शिक्षक बन जाते हैं, जिससे सामग्री के बारे में उनकी अपनी समझ बढ़ती है।
- पीयर ट्यूशन छात्रों को संबंध बनाने में मदद करता है, जो संचार और सामाजिक कौशल का निर्माण करता है।
- कुछ विकलांग छात्र वयस्कों की तुलना में साथियों को बेहतर प्रतिक्रिया देते हैं।
- विकलांग छात्रों को एक शिक्षक की तुलना में अधिक व्यक्तिगत ध्यान मिलता है जो स्वयं प्रदान कर सकता है।
- व्यक्तिगत ध्यान में वृद्धि के कारण, विकलांग छात्रों को भी तत्काल प्रतिक्रिया और सकारात्मक सुदृढीकरण अधिक बार मिलता है, जिसके परिणामस्वरूप उच्च शैक्षणिक प्रदर्शन होता है।

नुकसान (Disadvantages) :–हालाँकि पीयर ट्यूटरिंग में कई ताकतें हैं, लेकिन ऐसी चुनौतियाँ भी हैं जिन पर विचार किया जाना चाहिए। इसमे शामिल हैः

- सहपाठी शिक्षण की योजना और तैयारी के लिए कक्षा शिक्षक के लिए अतिरिक्त समय और संगठन की आवश्यकता होती है।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

- पीयर ट्यूटर्स को प्रशिक्षित, निगरानी और वर्गीकृत किया जाना चाहिए, जो कक्षा के अन्य महत्वपूर्ण कार्यों से समय और ऊर्जा लेता है। कुछ माता–पिता सहकर्मी शिक्षण का विरोध करते हैं।
- क्योंकि वे अपने बच्चे के लिए लाभ नहीं देखते हैं। इसका मतलब है कि शिक्षकों को माता–पिता को लाभों के बारे में शिक्षित और आश्वस्त करना चाहिए।

सहकारी शिक्षा (Cooperative Learning) :– विकलांग छात्रों के लिए सहकारी शिक्षण संरचनाओं के कई लाभ हैं। विकलांग छात्र कक्षा की गतिविधियों में अधिक व्यस्त होते हैं जहाँ अधिक पारंपरिक कक्षा हस्तक्षेप की तुलना में सहकारी शिक्षण संरचनाएँ होती हैं। विशेष रूप से, समावेशी कक्षाओं में जो सहकारी शिक्षा का उपयोग करते हैं, छात्र अपने विचारों को अधिक स्वतंत्र रूप से व्यक्त करते हैं, पुष्टिकरण और रचनात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त करते हैं, पूछताछ तकनीकों में संलग्न होते हैं, कौशल पर अतिरिक्त अभ्यास प्राप्त करते हैं, और जवाब देने के अवसरों में वृद्धि करते हैं। इसके अलावा, जब छात्र चर्चा करते समय जोर से सोच रहे होते हैं, तो शिक्षक छात्र और समूह की जरूरतों का आकलन करने और जरूरत पड़ने पर हस्तक्षेप करने में सक्षम होते हैं। अर्थात्, छात्रों के सीखने की सक्रिय निगरानी करके, शिक्षक समूहों को सीखने के कार्यों की ओर पुनर्निर्देशित करने में सक्षम होते हैं और मिनी–कॉन्फ्रेंस के दौरान उपयुक्त के रूप में पुनः शिक्षण प्रदान करते हैं। जब इस स्तर के संवाद के लिए संरचनाएं होती हैं, तो यह समझने की प्रक्रिया को तेज करती है सहकारी शिक्षा एक शैक्षिक दृष्टिकोण है जिसका उद्देश्य कक्षा की गतिविधियों को अकादमिक और सामाजिक सीखने के अनुभवों में व्यवस्थित करना है। छात्रों को समूहों में व्यवस्थित करने की तुलना में सहकारी शिक्षा के लिए बहुत कुछ है, और इसे ''सकारात्मक अन्योन्याश्रितता की संरचना'' के रूप में वर्णित किया गया है। व्यक्तिगत सीखने के विपरीत, जो प्रकृति में प्रतिस्पर्धी हो सकता है, सहकारी रूप से सीखने वाले छात्र एक दूसरे के संसाधनों और कौशल का लाभ उठा सकते हैं।,

प्रकार (TYPES) :– औपचारिक सहकारी शिक्षण समय के साथ शिक्षक द्वारा संरचित, सुगम और निगरानी की जाती है और इसका उपयोग कार्य में समूह लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है (उदाहरण के लिए एक इकाई को पूरा करना)। किसी भी पाठ्यक्रम सामग्री या असाइनमेंट को इस प्रकार के सीखने के लिए अनुकूलित किया जा सकता है, और समूह 2–6 लोगों से भिन्न हो सकते हैं, जिनकी चर्चा कुछ मिनटों से लेकर पूरी अवधि तक होती है। औपचारिक सहकारी सीखने की रणनीतियों के प्रकारों में शामिल हैं:–

1. पहेली तकनीक
2. ऐसे कार्य जिनमें समूह समस्या समाधान और निर्णय लेना शामिल है
3. प्रयोगशाला या प्रयोग कार्य
4. सहकर्मी समीक्षा कार्य

सीमाएं सहकारी सीखने की कई सीमाएँ हैं जो प्रक्रिया को पहले की तुलना में अधिक जटिल बना सकती हैं। सहकारी शिक्षा के निरंतर विकास को एक खतरे के रूप में वर्णित करता है। चूंकि सहकारी अधिगम लगातार बदल रहा है, इसलिए संभावना है कि शिक्षक भ्रमित हो सकते हैं और विधि की पूरी समझ की कमी हो सकती है। तथ्य यह है कि सहकारी अधिगम एक ऐसी गतिशील प्रथा है जिसका अर्थ है कि इसे कई स्थितियों में प्रभावी ढंग से उपयोग नहीं किया जा सकता है। साथ ही शिक्षक छात्रों को व्यस्त रखने के तरीके के रूप में सहकारी शिक्षा पर निर्भर रहने की आदत डाल सकते हैं। जबकि सहकारी शिक्षण में समय लगेगा, सहकारी शिक्षण का सबसे प्रभावी अनुप्रयोग एक सक्रिय प्रशिक्षक पर निर्भर करता है। सहकारी शिक्षा को लागू करने वाले शिक्षकों को भी उन छात्रों से प्रतिरोध और शत्रुता के साथ चुनौती दी जा सकती है जो मानते हैं कि उन्हें उनके धीमे साथियों द्वारा या कम आत्मविश्वास वाले छात्रों द्वारा वापस रखा जा रहा है और उन्हें लगता है कि उनकी टीम द्वारा उन्हें अनदेखा या अपमानित किया जा रहा है। छात्र अक्सर सहकारी अधिगम अनुभवों के दौरान अनुभव की गई टीम वर्क की सफलता पर मूल्यांकन या समीक्षा के रूप में फीडबैक प्रदान करते हैं। सहकर्मी समीक्षा और मूल्यांकन साथियों के बीच कथित प्रतिस्पर्धा के कारण सच्चे अनुभवों को प्रतिबिंबित नहीं कर सकते हैं। छात्रों को डराने–धमकाने के कारण गलत मूल्यांकन प्रस्तुत करने का दबाव महसूस हो सकता है। ऐसी चिंताओं को दूर करने के लिए, गोपनीय मूल्यांकन प्रक्रियाएं मूल्यांकन शक्ति को बढ़ाने में मदद कर सकती हैं।

सकारात्मक व्यवहार हस्तक्षेप रणनीतियाँ (Positive Behavioural Intervention strategies) :– PBIS एक सक्रिय दृष्टिकोण है जिसका उपयोग स्कूल स्कूल सुरक्षा में सुधार और सकारात्मक व्यवहार को बढ़ावा देने के लिए करते हैं। पीबीआईएस का फोकस

Notes For Ayssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

रोकथाम है, सजा नहीं। इसके मूल में, पीबीआईएस स्कूलों से छात्रों को सकारात्मक व्यवहार रणनीतियों को पढ़ाने के लिए कहता है, जैसे वे पढ़ने या गणित जैसे किसी अन्य विषय के बारे में पढ़ाते हैं। च्ठप्ै का उपयोग करने वाले स्कूलों में, सभी छात्र सकारात्मक व्यवहार के बारे में सीखते हैं।

पीबीआईएस मानता है कि छात्र व्यवहार अपेक्षाओं को तभी पूरा कर सकते हैं जब वे जानते हैं कि अपेक्षाएं क्या हैं। हर कोई सीखता है कि क्या उचित व्यवहार माना जाता है। और वे इसके बारे में बात करने के लिए एक आम भाषा का इस्तेमाल करते हैं। स्कूल के पूरे दिन कक्षा में, दोपहर के भोजन पर, और बस में छात्र समझते हैं कि उनसे क्या अपेक्षित है।

शोध के अनुसार, बेहतर छात्र व्यवहार की ओर जाता है। पीबीआईएस का उपयोग करने वाले कई स्कूलों में, छात्रों को कम निरोध और निलंबन मिलता है। वे बेहतर ग्रेड भी अर्जित करते हैं। वहाँ भी है कि PBIS कम बदमाशी का कारण बन सकता है।

PBIS के कई महत्वपूर्ण मार्गदर्शक सिद्धांत हैंः

- छात्र विभिन्न स्थितियों के लिए व्यवहार अपेक्षाओं को सीख सकते हैं।
- स्कूल छात्रों को व्यवहार का अभ्यास करने और प्रतिक्रिया प्राप्त करने के अवसरों के साथ, स्पष्ट निर्देश के माध्यम से अपेक्षित व्यवहार सिखाते हैं।
- जल्दी कदम उठाने से व्यवहार संबंधी अधिक गंभीर समस्याओं से बचा जा सकता है।
- प्रत्येक छात्र अलग होता है, इसलिए स्कूलों को कई प्रकार के व्यवहार समर्थन देने की आवश्यकता होती है।
- स्कूल कैसे व्यवहार सिखाते हैं, यह शोध और विज्ञान पर आधारित होना चाहिए।
- विद्यार्थी के व्यवहार की प्रगति पर नजर रखना महत्वपूर्ण है।
- स्कूल व्यवहार संबंधी हस्तक्षेपों के बारे में निर्णय लेने के लिए डेटा एकत्र करते हैं और उसका उपयोग करते हैं।
- स्कूल स्टाफ के सदस्य इस बात में सुसंगत हैं कि वे किस प्रकार अपेक्षित व्यवहार को प्रोत्साहित करते हैं और दुर्व्यवहार को हतोत्साहित करते हैं।
- अधिकांश पीबीआईएस कार्यक्रमों ने छात्रों और स्कूल के कर्मचारियों के लिए समर्थन के तीन स्तरों की स्थापना की।

• **टियर 1ः सबके लिए सार्वभौमिक, स्कूलव्यापी व्यवस्था :–** स्कूल के सभी छात्र सम्मान और दया जैसी बुनियादी व्यवहार अपेक्षाएं सीखते हैं। स्कूल के कर्मचारी अच्छे व्यवहार के लिए छात्रों को पहचानते हैं और उनकी प्रशंसा करते हैं। कभी–कभी, वे बच्चों को पहचानने के लिए टोकन या पुरस्कार जैसे छोटे पुरस्कारों का उपयोग करते हैं।

• **टियर 2ः– संघर्षरत छात्रों के लिए अतिरिक्त, लक्षित सहायता :–** कुछ बच्चों के पास व्यवहार अपेक्षाओं के साथ कठिन समय होता है। स्कूल इन बच्चों को साक्ष्य–आधारित हस्तक्षेप और निर्देश देता है। उदाहरण के लिए, कुछ छात्र सामाजिक अंतःक्रियाओं के साथ संघर्ष कर सकते हैं। एक टियर 2 रणनीति सामाजिक सोच समर्थन प्रदान कर सकती है ताकि उन्हें यह सीखने में मदद मिल सके कि परिस्थितियों को कैसे पढ़ना और प्रतिक्रिया करना है।

• **टियर 3ः व्यक्तिगत छात्रों के लिए गहन समर्थन,** पीबीआईएस का तीसरा स्तर सबसे गहन है। यह उन छात्रों के लिए है जिन्हें चल रहे व्यवहार संबंधी चिंताओं के कारण व्यक्तिगत समर्थन और सेवाओं की आवश्यकता है।

आईईपीएस योजनाओं वाले छात्र किसी भी स्तर में हो सकते हैं। PBIS का उपयोग करने वाले स्कूलों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि IEP टीमें स्पष्ट हैं कि PBIS के स्तर IEPS योजनाओं के साथ कैसे ओवरलैप होते हैं। PBIS छात्रों के लिए समर्थन के बढ़ते स्तरों का उपयोग करता है। यह हस्तक्षेप की प्रतिक्रिया (आरटीआई) जैसे अन्य स्तरीय दृष्टिकोणों के समान है।

Unit :- 2.4 Teaching strategies for individual with high support needs. (उच्च समर्थन आवश्यकताओं वाले व्यक्ति के लिए शिक्षण रणनीतियाँ।) :– अपने पूरे इतिहास में, IDEA ने इस बात पर जोर दिया है कि FAPE को प्राप्त करने के लिए, विशेष शिक्षा और संबंधित सेवाएं प्रदान की जानी चाहिए जो विकलांग छात्रों के लिए उनकी शिक्षा से लाभ उठाने के समान अवसर पैदा करें और भविष्य की शिक्षा, रोजगार और स्वतंत्र जीवन के लिए पर्याप्त रूप से तैयार हों। जैसे, कानून ने लगातार कहा है कि विकलांग छात्रों के लिए शैक्षिक लाभ के लिए समान अवसर को बढ़ावा देने के लिए विशेष शिक्षा विशेष रूप से डिजाइन किया गया निर्देश है। आईडिया में 1997 और 2004 के संशोधनों ने स्पष्ट किया कि प्रत्येक छात्र का शैक्षिक कार्यक्रम, और परिणामी विशेष रूप से तैयार किया गया निर्देश, दो स्रोतों पर आधारित होना चाहिएः (ए) सामान्य शिक्षा पाठ्यक्रम, उसी पाठ्यक्रम के रूप में परिभाषित किया गया है जो अन्य सभी छात्रों को प्रदान किया जाता हैय और (बी) छात्र की अनूठी सीखने की जरूरत है। ''सामान्य शिक्षा पाठ्यक्रम तक पहुंच'' अनिवार्य है कि विशेष शिक्षा सेवाएं प्राप्त करने वाले सभी छात्रों के पास सामान्य शिक्षा पाठ्यक्रम में शामिल होने और प्रगति के साथ–साथ उनकी अनूठी सीखने की जरूरतों को पूरा करने के लिए लक्ष्यों और संशोधनों के लिए आवश्यक समर्थन है। इसने पाठ्यचर्या फोकस में एक प्रमुख बदलाव का प्रतिनिधित्व किया, विशेष रूप से व्यापक और व्यापक समर्थन की जरूरत वाले छात्रों के लिए, क्योंकि ऐतिहासिक रूप से इन छात्रों के लिए शैक्षिक जोर अद्वितीय सीखने की जरूरतों और ''कार्यात्मक पाठ्यक्रम'' के अनुप्रयोग पर था।

विद्यालय में (At School) :– लेखकों ह्यूजेस एंड कार्टर द्वारा सर्वेक्षण किए गए शिक्षकों ने समावेशी कक्षाओं में छात्रों का समर्थन करने के लिए निम्नलिखित निर्देशात्मक रणनीतियों की सिफारिश की ।

- **सक्रिय सीखने को प्रोत्साहित करें** :– सभी छात्रों को सीखने में व्यस्त रखने के लिए व्यावहारिक गतिविधियाँ अक्सर सबसे अच्छा तरीका होती हैं। जब भी आप कर सकते हैं, अपने छात्रों को छोटे–समूह और प्रोजेक्ट–आधारित असाइनमेंट असाइन करें जो सक्रिय और सहयोगी सीखने को बढ़ावा देते हैं। (यदि आपके पास छात्र छोटे समूहों में काम करते हैं, तो उन्हें एक साथ अच्छी तरह से काम करने के बारे में कुछ प्रारंभिक मार्गदर्शन की आवश्यकता हो सकती है।)
- **जब भी आप कर सकते हैं छात्रों को विकल्प दें** :– कुछ छात्र पहले चुनौतीपूर्ण कार्यों को करना पसंद करते हैं, जबकि अन्य सरल शुरू करना पसंद करते हैं और फिर कठिन कार्यों में आसानी करते हैं। विद्यार्थियों को यह चुनने दें कि कौन–सी गतिविधियाँ पहले पूरी करनी हैं। उन्हें अपने शेड्यूल पर कुछ नियंत्रण देना दर्शाता है कि आप प्रत्येक छात्र के व्यक्तित्व, ताकत और जरूरतों का सम्मान करते हैं।
- **मॉडल प्रदान करें** :– मॉडलिंग एक शक्तिशाली शिक्षण उपकरण है–जब छात्र कार्रवाई में एक नया कौशल देखते हैं, तो यह उन्हें उस कौशल को तेजी से और अधिक सटीक रूप से सीखने में मदद कर सकता है। अपने पाठों में मॉडलिंग को बुनने के अवसरों की तलाश करें। आप कौशल को स्वयं मॉडल कर सकते हैं, लेकिन पावर पीयर मॉडलिंग को भी न भूलें। विकलांग छात्रों को अपने सहपाठियों के साथ सीधे काम करने का भरपूर मौका दें और उन्हें महत्वपूर्ण शैक्षणिक और सामाजिक कौशल का मॉडल देखें।
- **सिद्ध रणनीतियों को लागू करें** :– समावेशी कक्षाओं के लिए नवीनतम शोध–आधारित रणनीतियों के बारे में पढ़कर जांच करें कि क्या काम करता है। यदि आपने पहले से ऐसा नहीं किया है, तो निरंतर और प्रगतिशील समय विलंब, अधिकतम–से–कम या कम से कम–से–अधिकतम प्रोत्साहन, और प्रभावशीलता के मजबूत सबूत द्वारा समर्थित अन्य प्रत्यक्ष निर्देश रणनीतियों जैसी रणनीतियों का प्रयास करें। हमेशा अपने द्वारा चुनी गई रणनीतियों का मिलान अपने छात्रों की व्यक्तिगत जरूरतों और ताकत के साथ करें।
- **भागीदारी बढ़ाओ** :– सभी छात्रों को कक्षा में प्रतिक्रिया देने के लिए बहुत सारे अवसर दें, और भाग लेने के कई अलग–अलग तरीके दें। यह न केवल प्रत्येक छात्र को आपके पाठ के साथ अधिक सक्रिय रूप से संलग्न करता है, बल्कि इससे उन्हें प्राप्त होने वाले सकारात्मक सुदृढीकरण की मात्रा भी बढ़ जाती है। अलग–अलग शक्तियों और जरूरतों वाले छात्रों को अलग–अलग तरीकों से जवाब देने की अनुमति दें, जैसे लिखने के बजाय बोलना और इसके विपरीत।
- **ग्रेडिंग पर पुनर्विचार करें** :– जिन छात्रों को व्यापक समर्थन की जरूरत है, उनके लिए पारंपरिक ग्रेडिंग सिस्टम शायद यह दिखाने का सबसे अच्छा तरीका नहीं होगा कि वे क्या कर सकते हैं। वैकल्पिक ग्रेडिंग दृष्टिकोणों पर विचार करें जो विकलांग छात्रों द्वारा अपने शैक्षणिक लक्ष्यों की ओर की जा रही प्रगति को अधिक अर्थपूर्ण ढंग से कैप्चर करते हैं।
- **छात्रों को स्व–प्रबंधन सिखाएं** :– छात्रों को अपने स्वयं के प्रदर्शन को प्रबंधित करने के लिए आवश्यक कौशल से लैस करना उन्हें ट्रैक पर रखने और सीखने का एक उपयोगी तरीका है। छात्रों को अपने स्वयं के व्यवहार और सीखने का प्रबंधन

EXAM TRICKY Notes For Pyssum SPECIAL EDUCATION

करना सिखाते समय आपको संचार के कई अलग–अलग रूपों का उपयोग करने की आवश्यकता हो सकती है। उदाहरण के लिए, एक छात्र जो बोलता या पढ़ता नहीं है, वह स्व–प्रबंधन कौशल सीखने के लिए चित्र संकेतों का उपयोग कर सकता है। अन्य छात्रों के लिए, उनके बटुए या बैकपैक में लिखित सूची बेहतर काम कर सकती है। आप एक इनाम प्रणाली का उपयोग करने पर भी विचार कर सकते हैं जो छात्रों को बढ़ी हुई स्वतंत्रता की दिशा में कदम उठाने के लिए अंक देती है। लचीला और रचनात्मक बनें, और अपने छात्रों की जरूरतों और संचार के पसंदीदा रूपों के लिए स्व–प्रबंधन रणनीतियों को अपनाएं।

- **परिवारों द्वारा मूल्यवान कौशल को सुदृढ़ करें :–** आपके विद्यार्थी का परिवार किन कौशलों को सुदृढ़ करना चाहता है? माता–पिता और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ बात करके पता करें कि वे किस कौशल को महत्व देते हैं और चाहते हैं कि आप कक्षा में अभ्यास के माध्यम से प्रोत्साहित करें।
- **अभ्यास समय में बनाएँ :–** अपने बच्चे को दिन भर और अलग–अलग सेटिंग्स में नए कौशल का अभ्यास करने के लिए बहुत सारे अवसर देना सुनिश्चित करें। इससे उसे उन कौशलों में अधिक तेजी से महारत हासिल करने में मदद मिलेगी और जब भी उनकी आवश्यकता हो, उनका उपयोग करें।
- **गतिविधियों के लिए हाँ कहो :–** पाठ्येतर और सामुदायिक गतिविधियों में अपने बच्चे की भागीदारी बढ़ाने के तरीकों की तलाश करें। जितना अधिक आपका बच्चा इस तरह के अवसरों में भाग लेता है–चाहे वे खेल, नाटक, नृत्य कक्षाएं, दिन शिविर, विज्ञान क्लब, या कोई अन्य पसंदीदा गतिविधि हो–उतनी अधिक संभावना है कि उन्हें महत्वपूर्ण कौशल का अभ्यास और परिष्कृत करना होगा।
- **शिक्षण उपकरण के रूप में आपके बच्चे की रुचि :–** क्या आपके बच्चे में विशेष आकर्षण है? इन प्राथमिकताओं और रुचियों को कौशल निर्देश में बुनने से सीखने और जुड़ाव को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है।
- **संशोधन करें :–** सीखने को एक नया कार्य जितना कठिन होना चाहिए, उससे अधिक कठिन क्यों बनाएं? जैसा कि आप नए कौशल सिखाते हैं, कुछ चरणों को संशोधित करने के तरीकों पर विचार करें ताकि आपका बच्चा एक नया कौशल सीख सके और अधिक आसानी से बनाए रख सके। उदाहरण के लिए, यदि आप किसी बच्चे को खाना बनाना सिखा रहे हैं, तो किचन टूल्स को कलर–कोडिंग करने से उसे प्रत्येक चरण के लिए उपयुक्त चुनने में मदद मिल सकती है।
- **नए कौशल को सुदृढ़ करें :–** बच्चों के लिए एक नया कौशल सफलतापूर्वक, उन्हें रीइन्फोर्सर्स की आवश्यकता होती है – कौशल के प्रदर्शन के परिणामस्वरूप उन्हें एक सकारात्मक, प्रेरक चीज मिलती है। उदाहरण के लिए, यदि आप अपने बच्चे को वेंडिंग मशीन का उपयोग करना सिखा रहे हैं, तो सुनिश्चित करें कि आपने पूरी गतिविधि को पूरा करने दिया है और अंत में सुदृढीकरण प्राप्त करें ।
- **ऐसे कौशल सिखाएं जो आपका बच्चा वास्तव में उपयोग करेगा :–** वस्तुओं को समूहों में छाँटने जैसे सामान्य कौशल का बच्चे के दैनिक जीवन में अधिक उपयोग होने की संभावना नहीं है। इसके बजाय उन कौशलों पर ध्यान केंद्रित करें जो आपके बच्चे के दैनिक कार्यक्रम के भीतर कार्यात्मक, उपयोगी और नियमित रूप से प्रबलित हों।

Unit :- 2.5 Teaching strategies for teaching in inclusive schools - Universal design for learning and differentiated instruction. (समावेशी स्कूलों में शिक्षण के लिए शिक्षण रणनीतियाँ – सीखने के लिए सार्वभौमिक डिजाइन और विभेदित निर्देश)

सीखने के लिए सार्वभौमिक डिजाइन (Universal design for learning) :– यूडीएल की जड़ें प्रारंभिक नागरिक अधिकारों और विशेष शिक्षा कानून में पाई जाती हैं, जो कम से कम प्रतिबंधात्मक वातावरण में सभी छात्रों के मुफ्त, उपयुक्त सार्वजनिक शिक्षा के अधिकार पर जोर देती है। यूडीएल ढांचे की कल्पना सेंटर फॉर एप्लाइड स्पेशल टेक्नोलॉजीज (सीएएसटी) के शोधकर्ताओं द्वारा 1980 के दशक के अंत में तीन वैचारिक बदलावों के संरेखण के परिणामस्वरूप की गई थी: वास्तुशिल्प डिजाइन में प्रगति, शिक्षा प्रौद्योगिकी में विकास और मस्तिष्क अनुसंधान से खोजें।

सार्वभौमिक रचना (Universal design) :– 1990 के दशक में अमेरिकी विकलांग अधिनियम (एडीए) के पारित होने के बाद, स्कूलों और अन्य सार्वजनिक भवनों को भौतिक पहुंच प्रदान करने के लिए रैंप और अन्य वास्तुशिल्प सुविधाओं के साथ फिर से लगाया गया था। ये परिवर्तन सक्रिय डिजाइन के बजाय एक महंगे विचार थे। वास्तुकला के क्षेत्र में नेताओं ने लचीले यूनिवर्सल डिजाइन सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए शुरुआत से इमारतों को डिजाइन करने के लिए एक अधिक लागत प्रभावी रणनीति का सुझाव दिया ताकि सभी उपयोगकर्ताओं तक पहुंच हो सके।

डिजिटाइज्ड टेक्स्ट (Digitized text) :– उसी समय, तकनीकी विकास ने ''एक–आकार–फिट–सभी'' शैक्षणिक सामग्री के विकल्प की अनुमति दी जो केवल एक निश्चित माध्यम – प्रिंट का उपयोग करती थी। स्कूलों में कंप्यूटर तक पहुंच अधिक आम होती जा रही थी, और सहायक प्रौद्योगिकियां जो शिक्षकों और छात्रों को पाठ में हेरफेर करने की अनुमति देती थीं, परिणामस्वरूप लचीले निर्देशात्मक विकल्पों की उपलब्धता हुई। अब, पाठ को आसानी से बड़ा किया जा सकता है, सरलीकृत किया जा सकता है, सारांशित किया जा सकता है, हाइलाइट किया जा सकता है, अनुवाद किया जा सकता है, भाषण में परिवर्तित किया जा सकता है, ग्राफिक रूप से प्रतिनिधित्व किया जा सकता है, और सुलभ, डिजिटल सामग्री के माध्यम से समर्थित किया जा सकता है।

लर्निंग नेटवर्क पर ब्रेन रिसर्च :– समवर्ती रूप से, मस्तिष्क इमेजिंग आयोजित की गई, जबकि व्यक्ति सीखने के कार्यों में लगे हुए थे (जैसे, पढ़ना, लिखना) सीखने के दौरान मस्तिष्क में काम पर तीन नेटवर्क का पता चलाः मान्यता नेटवर्क (सीखने का ''क्या''), रणनीतिक नेटवर्क (''कैसे'' सीखने का), और भावात्मक नेटवर्क (सीखने का ''क्यों'') ।

आर्किटेक्चरल यूनिवर्सल डिजाइन सिद्धांतों, डिजीटल टेक्स्ट द्वारा पेश की जाने वाली पहुंच और लचीलेपन और तीन लर्निंग नेटवर्क्स की अवधारणा से प्रभावित होकर, CAST के इनोवेटर्स ने ''यूनिवर्सल डिजाइन फॉर लर्निंग'' नामक विकसित किया। यूनिवर्सल डिजाइन फॉर लर्निंग (यूडीएल) इस जरूरत को पूरा करता है। यूडीएल एक ढांचा है जो शिक्षकों को सीखने के अनुभवों को डिजाइन करने में मदद करता है जो छात्रों के बीच कौशल और क्षमताओं के विभिन्न स्तरों को समायोजित करता है और विकलांग छात्रों के लिए विशेष अनुकूलन की आवश्यकता को कम करता है। सभी छात्रों के लिए सीखने को अधिकतम करने के लिए यूडीएल ढांचा तीन परिभाषित सिद्धांतों पर आधारित है। सीखने में सुधार के लिए संसाधनों और उपकरणों का उपयोग करने के तरीके के बारे में बताते हुए प्रत्येक सिद्धांत में एक साथ व्यापक दिशानिर्देश हैं। शिक्षक इन सिद्धांतों में से प्रत्येक का उपयोग जानकारी की अपनी प्रस्तुति को अधिक सुलभ और आकर्षक बनाने, कक्षा में छात्रों की व्यस्तता बढ़ाने और समावेशी मूल्यांकन और आकलन विकसित करने के लिए कर सकते हैं।

प्रतिनिधित्व के कई साधन :– यह सिद्धांत शिक्षकों को विभिन्न स्वरूपों में जानकारी प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करता है। उसी अवधारणा को पाठ में, छवियों के माध्यम से, वीडियो के माध्यम से, ऑडियो के माध्यम से, या व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है। इस सामग्री तक पहुँचने के लिए शिक्षार्थियों को सहायक तकनीकों और उपकरणों की आवश्यकता हो सकती है जो सीखने में सहायता करते हैं – जैसे स्क्रीन रीडर, स्वचालित पृष्ठ टर्नर, ध्वनि पहचान कार्यक्रम, या बंद कैप्शनिंग उपकरण। कई प्रारूपों में जानकारी उपलब्ध कराना महत्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षार्थियों में उनके द्वारा प्रस्तुत अवधारणाओं को समझने और समझने के तरीके में भिन्नता है। सीखने की अक्षमता, संवेदी अक्षमता, या सांस्कृतिक और भाषा अंतर वाले शिक्षार्थियों को सामग्री के लिए एक आकार–फिट–सभी दृष्टिकोण से लाभ नहीं हो सकता है और उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप विभिन्न प्रारूपों की आवश्यकता हो सकती है। कुछ अन्य लोग भी हो सकते हैं जो मुद्रित पाठ की तुलना में कुछ सूचनाओं को श्रवण या दृश्य माध्यमों से अधिक कुशलता से समझते हैं। दोहरी कोडिंग के रूप में जानी जाने वाली अवधारणा के एकाधिक प्रतिनिधित्व–छात्रों को व्यक्तिगत अवधारणाओं के भीतर और विभिन्न अवधारणाओं के बीच संबंध देखने की अनुमति देकर सीखने की सुविधा प्रदान करता है।

क्रिया और अभिव्यक्ति के कई साधनः यह सिद्धांत शिक्षकों को छात्रों को उनके द्वारा सीखी गई बातों को प्रदर्शित करने के लिए कई तरह के तरीके प्रदान करने में मदद करता है। सीखने वाले इस बात में भिन्न होते हैं कि वे सीखने के वातावरण में कैसे नेविगेट करते हैं और जो वे जानते हैं उसे प्रदर्शित करते हैं। उदाहरण के लिए, सेरेब्रल पाल्सी या मस्कुलर डिस्ट्रॉफी जैसी महत्वपूर्ण गतिमान अक्षमता वाले शिक्षार्थियों और जो भाषा बाधाओं का अनुभव करते हैं, उनके सीखने के कार्यों के लिए अलग–अलग दृष्टिकोण हो सकते हैं। वे लिखित पाठ, दृश्य या मौखिक प्रस्तुति, या एक समूह परियोजना के माध्यम से जो जानते हैं उसे व्यक्त करना पसंद कर सकते हैं।

जुड़ाव के कई साधन :– यह सिद्धांत शिक्षकों को शिक्षार्थियों को प्रेरित करने के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करता है। शिक्षार्थी इस संबंध में भिन्न होते हैं कि उन्हें सीखने के लिए कैसे प्रोत्साहित किया जा सकता है। प्रेरणा में व्यक्तिगत भिन्नता को प्रभावित करने वाले कुछ कारकों में संस्कृति, तंत्रिका विज्ञान, व्यक्तिगत प्रासंगिकता और पूर्व ज्ञान शामिल हैं। उदाहरण के लिए, डिस्लेक्सिया वाले शिक्षार्थी आमतौर पर मुद्रित पाठों के उपयोग की तुलना में अनुभवात्मक अधिगम के माध्यम से अवधारणाओं को अधिक तेजी से समझने में सक्षम होते हैं। इन छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित किया जा सकता है यदि अवधारणाओं को गतिविधियों के माध्यम से पढ़ाया जाता है जो कि काइनेटिक कौशल का उपयोग करते हैं, जैसे कि नाटक या भूमिका निभाना। जुड़ाव का एक ही साधन हर संदर्भ में सभी शिक्षार्थियों के लिए उपयुक्त नहीं है। कुछ शिक्षार्थियों को नवीनता और

EXAM TRICKY SPECIAL EDUCATION
Notes For Pyssum

सहजता के लिए उच्च प्राथमिकता है, जबकि अन्य शिक्षार्थियों को सख्त दिनचर्या के लिए उच्च प्राथमिकता है। कुछ शिक्षार्थी अकेले काम करना पसंद करते हैं, जबकि अन्य समूह में काम करना पसंद करते हैं।

- यूडीएल के सिद्धांतों को पाठ्यक्रम के समग्र डिजाइन के साथ–साथ व्याख्यान, समूह कार्य, सीखने की गतिविधियों, पाठ्यक्रम में शामिल शिक्षण के दौरान उपयोग की जाने वाली विशिष्ट निर्देशात्मक रणनीतियों और सामग्रियों पर लागू किया जा सकता है। सभी शिक्षार्थियों के लिए अधिगम को अधिक सुलभ और अधिक प्रभावी बनाने के लिए सिद्धांत क्षेत्र कार्य, चर्चा और प्रदर्शन हो सकते हैं। यूडीएल पाठ्यक्रम के चार परस्पर संबंधित घटकों को और अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।
- लक्ष्यों को आमतौर पर सीखने की अपेक्षाओं के रूप में वर्णित किया जाता है। वे ज्ञान, अवधारणाओं और कौशल का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें छात्रों को मास्टर करने की आवश्यकता होती है और आमतौर पर राज्य मानकों के अनुरूप होते हैं। सामान्य बुनियादी मानकों के बारे में हाल की राष्ट्रीय चर्चाओं ने व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रमों (आईईपीएस) में लक्ष्यों को राज्य के मानकों और कक्षा की अपेक्षाओं के साथ जोड़ने के महत्वपूर्ण महत्व को बढ़ा दिया है।
- विधियों को आम तौर पर छात्रों के सीखने में सहायता के लिए शिक्षकों द्वारा उपयोग की जाने वाली निर्देशात्मक रणनीतियों के रूप में परिभाषित किया जाता है। विधियाँ साक्ष्य–आधारित होनी चाहिए और शिक्षार्थी परिवर्तनशीलता के विश्लेषण द्वारा समर्थित होनी चाहिए। UDL विधियाँ लचीली हैं और छात्र प्रगति की निरंतर निगरानी के माध्यम से समायोजित की जाती हैं।
- सामग्री वे माध्यम हैं जिनका उपयोग सामग्री प्रस्तुत करने और सीखने को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। न्क्स सामग्री कई मीडिया विकल्प प्रदान करती है और इसमें एम्बेडेड समर्थन शामिल हैं।
- यूडीएल ढांचे के भीतर आकलन से तात्पर्य विभिन्न तरीकों और सामग्रियों का उपयोग करके शिक्षार्थी की प्रगति के बारे में जानकारी एकत्र करने की प्रक्रिया से है। न्क्स आकलन विशेष रूप से निर्माण प्रासंगिकता को बनाए रखने और मूल्यांकन की वैधता में हस्तक्षेप करने वाले अप्रासंगिक या विचलित करने वाले तत्वों को कम करने या समाप्त करने के द्वारा शिक्षार्थी के ज्ञान, कौशल और जुड़ाव को सटीक रूप से मापने से संबंधित हैं।

यूडीएल कार्यान्वयन का उद्देश्य विशेषज्ञ शिक्षार्थियों – शिक्षार्थियों को बनाना है जो अपनी सीखने की जरूरतों का आकलन कर सकते हैं, अपनी प्रगति की निगरानी कर सकते हैं, और सीखने के कार्य के दौरान अपनी रुचि, प्रयास और दृढ़ता को विनियमित और बनाए रख सकते हैं। कई छात्र पारंपरिक कक्षाओं में पारंपरिक पाठ्यक्रम के साथ सीखते हैं। हालांकि, अधिकांश को विशेषज्ञ शिक्षार्थी बनने के लिए समर्थन या मचान की आवश्यकता होती है।

विभेदित निर्देश (Differentiated Instruction) :– कैरल एन टॉमलिंसन विभेदित शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी हैं और वर्जीनिया विश्वविद्यालय में शैक्षिक नेतृत्व, नींव और नीति के प्रोफेसर हैं। टॉमलिंसन एक पाठ योजना तैयार करने से पहले छात्रों की व्यक्तिगत सीखने की शैलियों और तैयारी के स्तर को फैक्टरिंग के रूप में विभेदित निर्देश का वर्णन करता है। विभेदीकरण की प्रभावशीलता पर शोध से पता चलता है कि इस पद्धति से छात्रों की एक विस्तृत श्रृंखला को लाभ होता है, सीखने की अक्षमता वाले लोगों से लेकर उच्च क्षमता वाले लोगों तक। विभेदक निर्देश का अर्थ विभिन्न शिक्षण रणनीतियों का उपयोग करके सभी छात्रों को एक ही सामग्री पढ़ाना हो सकता है, या शिक्षक को प्रत्येक छात्र की क्षमता के आधार पर कठिनाई के विभिन्न स्तरों पर पाठ देने की आवश्यकता हो सकती है।

कक्षा में भेदभाव का अभ्यास करने वाले शिक्षक :–

- छात्रों की सीखने की शैली के आधार पर पाठ डिजाइन कर सकते हैं।
- छात्रों को साझा रुचि, विषय, या असाइनमेंट की क्षमता के आधार पर समूहित करें।
- रचनात्मक आकलन का उपयोग करके छात्रों के सीखने का आकलन करें।
- एक सुरक्षित और सहायक वातावरण बनाने के लिए कक्षा का प्रबंधन करें,
- छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए पाठ सामग्री का लगातार आकलन और समायोजन करें।

शिक्षक छात्र की तैयारी, रुचि या सीखने की रूपरेखा के आधार पर कम से कम चार कक्षा तत्वों में अंतर कर सकते हैं :–

- सामग्री जो छात्र को सीखने की जरूरत है या छात्र को जानकारी तक कैसे पहुंच प्राप्त होगी।

- प्रक्रिया गतिविधियाँ जिसमें छात्र सामग्री को समझने या उसमें महारत हासिल करने के लिए संलग्न होता है।
- परियोजनाओं को पूरा करने वाले उत्पाद जो छात्र को एक इकाई में सीखी गई बातों का पूर्वाभ्यास करने, लागू करने और विस्तार करने के लिए कहते हैं।
- सीखने का माहौल जिस तरह से कक्षा काम करती है और महसूस करती है।

विषय (Content) :– प्रारंभिक स्तर पर सामग्री को अलग करने के उदाहरणों में निम्नलिखित शामिल हैं:–

1. अलग–अलग पठनीयता स्तरों पर पठन सामग्री का उपयोग करना।

2. पाठ्य सामग्री को टेप पर रखना।

3. छात्रों की तैयारी के स्तर पर वर्तनी या शब्दावली सूचियों का उपयोग करना।

4. श्रवण और दृश्य दोनों माध्यमों से विचार प्रस्तुत करना।

5. पढ़ने वाले मित्रों का उपयोग करना।

6. संघर्षरत शिक्षार्थियों के लिए एक विचार या कौशल को फिर से सिखाने के लिए या उन्नत शिक्षार्थियों की सोच या कौशल का विस्तार करने के लिए छोटे समूहों के साथ बैठक करना।

प्रक्रिया (Process) :– प्रारंभिक स्तर पर विभेदीकरण प्रक्रिया या गतिविधियों के उदाहरणों में निम्नलिखित शामिल हैं :–

1. स्तरीय गतिविधियों का उपयोग करना जिसके माध्यम से सभी शिक्षार्थी समान महत्वपूर्ण समझ और कौशल के साथ काम करते हैं, लेकिन समर्थन, चुनौती या जटिलता के विभिन्न स्तरों के साथ आगे बढ़ते हैं ।

2. रुचि केंद्र प्रदान करना जो छात्रों को उनकी विशेष रुचि के कक्षा विषय के सबसेट का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

3. व्यक्तिगत एजेंडा विकसित करना (शिक्षक द्वारा लिखित कार्य सूचियां और पूरी कक्षा के लिए सामान्य कार्य और शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करने वाले कार्य शामिल हैं) या तो निर्दिष्ट एजेंडा समय के दौरान या छात्रों द्वारा अन्य कार्य जल्दी पूरा करने के लिए।

4. जिन छात्रों को उनकी आवश्यकता है, उनके लिए जोड़–तोड़ या अन्य व्यावहारिक सहायता प्रदान करना ।

5. एक संघर्षरत शिक्षार्थी के लिए अतिरिक्त सहायता प्रदान करने के लिए या एक उन्नत शिक्षार्थी को अधिक गहराई से विषय को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए एक छात्र को कार्य पूरा करने में लगने वाले समय को बदलना।

Unit :- 3 Teaching strategies for individuals with ASD (एएसडी वाले व्यक्तियों के लिए शिक्षण रणनीतियाँ)

Unit :-3.1 Structure and Visual Support (TEACCH, Structured Teaching) संरचना और दृश्य समर्थन (TEACCH, संरचित शिक्षण) – स्ट्रक्चर्ड टीचिंग डिवीजन TEACCH (ऑटिस्टिक और संबंधित संचार–विकलांग बच्चों का प्रशिक्षण और शिक्षा) द्वारा विकसित शिक्षण तकनीकों का एक समूह है, जो उत्तरी कैरोलिना में ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकारों (एएसडी) से पीड़ित व्यक्तियों की सेवा करने वाला एक राज्य–व्यापी कार्यक्रम है। डिवीजन टीच एक व्यापक उपचार मॉडल है जो जीवन भर ऑटिज्म से पीड़ित व्यक्तियों की सेवा करता है। संरचित शिक्षण रणनीतियों के साथ, मॉडल ऑटिज्म की व्यापक समझ, परिवारों के साथ साझेदारी, रणनीतियों को विकसित और कार्यान्वित करते समय व्यक्तिगत मूल्यांकन, और पाठ्यक्रम क्षेत्रों में कौशल के विकास पर जोर देता है। संरचित शिक्षण रणनीतियों को सेटिंग्स में और पाठ्यक्रम क्षेत्र में लागू किया जा सकता है, क्योंकि वे एक वाहन सिखाने के कौशल के रूप में काम करते हैं, या कक्षा की स्थापना के लिए एक रूपरेखा के रूप में।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

ये शिक्षण रणनीतियां इस बात की समझ पर आधारित हैं कि ऑटिज्म एएसडी वाले व्यक्ति की सोच, सीखने और व्यवहार को कैसे प्रभावित करता है, श्रवण प्रसंस्करण, अनुकरण, प्रेरणा और संगठन में अंतर एएसडी वाले छात्रों की शैक्षिक सफलता में बाधा डाल सकता है, क्योंकि अधिकांश पारंपरिक शिक्षण रणनीतियाँ मौखिक निर्देशों, प्रदर्शन, सामाजिक सुदृढीकरण, और सूचनाओं या निर्देशों के अनुक्रमण पर बहुत अधिक निर्भर करती हैं।

हालाँकि, संरचित शिक्षण रणनीतियाँ, ASD वाले छात्रों की ताकत का लाभ उठाती हैं। इनमें संरचना के उपयोग के माध्यम से अनुमानित और सार्थक दिनचर्या प्रदान करना, जुड़ाव और स्वतंत्रता बढ़ाने के लिए कक्षा निर्देश और गतिविधियों में दृश्य या संरचनात्मक समर्थन जोड़ना और चिंता को कम करने और उचित व्यवहार को बढ़ाने के लिए स्पष्ट रूप से कक्षा रिक्त स्थान और शिक्षण सामग्री को व्यवस्थित करना शामिल है। संरचित शिक्षण के पांच तत्व हैं जो एक दूसरे पर आधारित हैं, और सभी कक्षा सेटिंग में पूर्वानुमान और लचीली दिनचर्या के महत्व पर जोर देते हैं। डिवीजन टीच ने संरचित शिक्षण घटकों को संरचित शिक्षण पिरामिड को चित्रित करने के लिए एक दृश्य विकसित किया :–

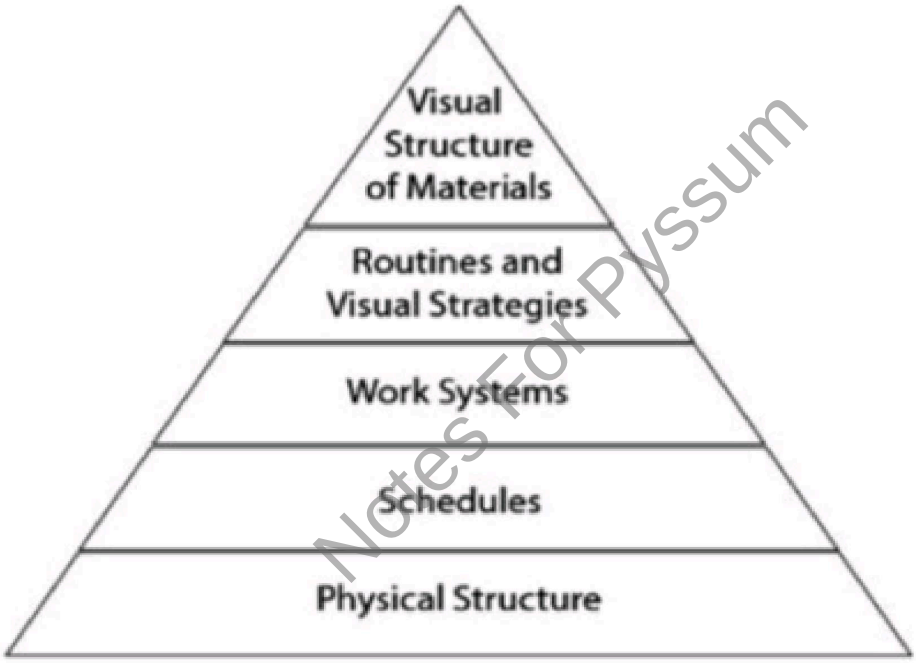

Notes For Pyssum

विद्यालय की स्थापना में भौतिक संरचना :– शारीरिक संरचना संरचित शिक्षण की नींव है और यह सुनिश्चित करने में सहायक है कि कक्षा में अधिगम हो रहा है।

विद्यालय की सेटिंग में दृश्य कार्यक्रम :– एक दृश्य अनुसूची वस्तुओं, तस्वीरों, चिह्नों, शब्दों, या मूर्त समर्थन के संयोजन के उपयोग के माध्यम से आगामी गतिविधियों या घटनाओं के अनुक्रम को संप्रेषित करती है।

स्कूल सेटिंग कार्य प्रणाली में कार्य प्रणाली :– एक संगठनात्मक प्रणाली है जो एएसडी के साथ एक छात्र को इस बारे में जानकारी देती है कि उसके कक्षा स्थान पर आने पर क्या अपेक्षित है। स्कूल की सेटिंग में दृश्य संरचना छात्रों को यह समझने में सहायता करने के लिए कार्यों में एक भौतिक या दृश्य घटक जोड़ती है कि गतिविधि कैसे पूरी की जानी चाहिए।

Unit :- 3.2. Behavioural Strategies and Approaches (e.g., Applied Behaviour Analysis (ABA), Verbal Behaviour Analysis (VBA), Cognitive Behaviour Therapy (CBT), Reinforcement व्यवहार रणनीतियाँ और दृष्टिकोण (जैसे, अनुप्रयुक्त व्यवहार विश्लेषण (ABA), मौखिक व्यवहार विश्लेषण (वीबीए), संज्ञानात्मक व्यवहार थेरेपी (सीबीटी), सुदृढीकरण :–

समस्या व्यवहार (Problem Behaviours):–

जैसे सभी व्यवहार एक कार्य करते हैं, आमतौर पर इनमें से एकः–

- ध्यान आकर्षित करने के लिए
- एक वांछित वस्तु या गतिविधि तक पहुंचने के लिए
- एक अवांछित कार्य से बचने के लिए
- एक संवेदी आवश्यकता को पूरा करने के लिए

आपके बच्चे के कठिन व्यवहार के विशिष्ट ट्रिगर भी हो सकते हैं, जैसे निम्न :–

- **दिनचर्या और अनुष्ठानः–** एएसडी वाले बच्चों को अक्सर पूर्वानुमानित वातावरण पसंद होता है, और यदि उनकी परिचित दिनचर्या टूट जाती है तो वे बहुत परेशान हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप आमतौर पर स्कूल से घर जाने का रास्ता बदलते हैं तो आपका बच्चा परेशान हो सकता है।
- **संक्रमण :–** आपका बच्चा शायद यह न समझे कि एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि में जाने का समय आ गया है। या आम तौर पर विकासशील बच्चों की तरह, आपका बच्चा शायद नहीं चाहेगा।

- **संवेदी संवेदनशीलता :–** एएसडी वाले बच्चों में अक्सर संवेदी संवेदनशीलता होती है और वे विशेष सतहों या वस्तुओं को महसूस करना या छूना पसंद कर सकते हैं। यदि आपका बच्चा छूने की अनुमति नहीं देता है तो आपका बच्चा परेशान हो सकता है।

- **संवेदी अधिभार :–** आपका बच्चा परेशान हो सकता है यदि उनके आसपास बहुत अधिक हो रहा है, यदि उन्हें कोई विशेष शोर भारी लगता है, या यदि प्रकाश उज्ज्वल है।

- **अवास्तविक अपेक्षाएं :–** सभी बच्चों की तरह, एएसडी से पीड़ित आपका बच्चा निराश हो सकता है यदि उनसे कुछ ऐसा करने की अपेक्षा की जाती है जिसके लिए उनके पास कौशल नहीं है, जैसे कि स्वतंत्र रूप से कपड़े पहनना।

- **थकान :–** एएसडी वाले बच्चों को नींद की समस्या हो सकती है। यदि आपके बच्चे को पर्याप्त अच्छी गुणवत्ता वाली नींद नहीं मिल रही है, तो इससे दिन के समय का व्यवहार मुश्किल हो सकता है।

- **बेचैनी :–** इसमें त्वचा के खिलाफ कपड़ों की भावना, एक कांटेदार लेबल, गीली पैंट, एक टक्कर या दर्द जैसी चीजें शामिल हो सकती हैं। अपने जीपी से संपर्क करें यदि आपको संदेह है कि आपके बच्चे के व्यवहार के कारण कोई चिकित्सीय स्थिति हो सकती है।

व्यवहार संबंधी हस्तक्षेपों को अब एएसडी बच्चों के लिए एक ''स्थापित'' उपचार माना जाता है, हालांकि उनसे सामान्य कामकाज की उम्मीद नहीं की जानी चाहिए। वे एएसडी के मुख्य लक्षणों में सुधार कर सकते हैं, मुख्यतः उपचार के पहले 12 महीनों में। व्यवहारिक हस्तक्षेप वे होते हैं जिनमें व्यवहार संशोधन के सिद्धांतों के आधार पर वाद्य सीखने की तकनीक हस्तक्षेप दृष्टिकोण की प्रमुख विशेषता है।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

इवर लोवास और उनके सहयोगियों ने 1960 के दशक में इन गहन व्यवहार हस्तक्षेपों में से एक, एप्लाइड बिहेवियरल एनालिसिस (एबीए) का बीड़ा उठाया। यह वांछनीय व्यवहारों को सुदृढ़ करने और अवांछनीय व्यवहारों को कम करने, नए कौशल सिखाने और बार–बार इनाम–आधारित परीक्षणों के माध्यम से उन्हें सामान्य बनाने का प्रयास करता है, इसके लिए कम छात्र–से–चिकित्सक अनुपात और बहुत गहन हस्तक्षेप (सप्ताह में कम से कम 25 घंटे) की आवश्यकता होती है। इस समय, आत्मकेंद्रित बच्चों के लिए गहन प्रारंभिक हस्तक्षेप के लिए यह एकमात्र साक्ष्य–आधारित दृष्टिकोण है।

मूल रूप से इवर लोवास द्वारा विकसित असतत परीक्षण प्रशिक्षण (डीटीटी), गहन चिकित्सा का सबसे संरचित रूप है। इसमें कौशल को चरणबद्ध तरीके से सिखाने के लिए अधिक असतत घटकों में तोड़ना शामिल हैः चिकित्सक एक निर्देश (प्रोत्साहन) प्रस्तुत करता है, एक प्रतिक्रिया का संकेत देता है, बच्चे की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करता है, और प्रतिक्रिया के आधार पर एक उपयुक्त परिणाम प्रदान करता है। लगभग विशेष रूप से डीटीटी तकनीकों पर आधारित मूल व्यवहार हस्तक्षेप, यंग ऑटिज्म प्रोजेक्ट के तहत कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, लॉस एंजिल्स में विकसित किए गए थे, और हालांकि उन्होंने ध्यान, अनुकरण, आज्ञाकारिता और भेदभाव में लाभ का प्रदर्शन किया है, उनकी आलोचना की गई है क्योंकि सामान्यीकरण की कमी और क्योंकि संरचित सेटिंग वयस्कों और बच्चों के बीच अधिक प्राकृतिक बातचीत का प्रतिनिधित्व नहीं करती है।

इस कारण से, समकालीन एबीए कार्यक्रम विकसित किए गए हैं, जिन्हें अधिक प्राकृतिक सेटिंग्स में पढ़ाया जाता है, जैसे कि निर्णायक प्रतिक्रिया प्रशिक्षण (पीआरटी), प्राकृतिक भाषा शिक्षण प्रतिमान या आकस्मिक शिक्षण, जहां बच्चा बातचीत शुरू करता है, सामान्यीकरण में सुधार करता है। कौशल। वर्तमान साहित्य में, अर्ली इंटेंसिव बिहेवियरल इंटरवेंशन (म्ठप्) शब्द इन सभी दृष्टिकोणों को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए उत्पन्न हुआ है, और यह स्वीकार किया जाता है कि वे अनुकूली कौशल और अभिव्यंजक और ग्रहणशील भाषा कौशल में खुफिया भागफल और सकारात्मक परिवर्तनों को बढ़ावा देते हैं। समकालीन एबीए तकनीकों में नए रुझानों में सकारात्मक व्यवहार समर्थन, कार्यात्मक मूल्यांकन और कार्यात्मक संचार प्रशिक्षण शामिल हैं, इसके ''त्रुटिहीन'' शिक्षण के साथ।

अनुप्रयुक्त व्यवहार विश्लेषण (APPLIED BEHAVIOR ANALYSIS (ABA) :– एप्लाइड बिहेवियर एनालिसिस (एबीए) एक प्रकार का चिकित्सीय हस्तक्षेप है जो सुदृढीकरण तकनीकों के माध्यम से सामाजिक, संचार और सीखने के कौशल में सुधार कर सकता है। सामाजिक कौशल, सीखने के कौशल जैसे सामान्य अनुकूली व्यवहारों में सुधार के अलावा, यह विशिष्ट कौशल सीखने पर ध्यान केंद्रित कर सकता है जैसे कि ठीक मोटर निपुणता, स्वच्छता, सौंदर्य, आदि। कुछ इसे ऑटिज्म व्यवहार चिकित्सा भी कहते हैं लेकिन यह एबीए के अनुप्रयोगों में से एक है। एबीए स्कूलों, घरों और क्लीनिकों सहित विभिन्न स्थितियों में मनोवैज्ञानिक स्थितियों वाले बच्चों और वयस्कों दोनों के लिए प्रभावी है। यह भी दिखाया गया है कि लगातार एबीए थेरेपी सकारात्मक कौशल और व्यवहार में काफी सुधार कर सकती है और भविष्य में सेवाओं की आवश्यकता को कम कर सकती है

एबीए थेरेपी कार्यक्रम मदद कर सकते हैंः –

- भाषा और संचार कौशल में सुधार
- ध्यान, सामाजिक कौशल, स्मृति,
- शिक्षाविदों को बढ़ाएं व्यवहार संबंधी समस्याओं की घटना को कम करें

एप्लाइड बिहेवियर एनालिसिस (एबीए) एक प्रकार की थेरेपी है जो सीखने और व्यवहार संबंधी ट्रेडों के मनोविज्ञान पर आधारित है। एबीए थेरेपी इस बात की समझ को लागू करती है कि व्यवहार वास्तविक जीवन की स्थितियों में कैसे काम करता है, ऐसे व्यवहारों को बढ़ाने के लिए जो सहायक होते हैं और ऐसे व्यवहारों को कम करते हैं जो हानिकारक हैं या सीखने को प्रभावित करते हैं। एप्लाइड बिहेवियर एनालिसिस में व्यवहार को समझने और बदलने के लिए कई तकनीकें शामिल हैं। एबीए लचीला उपचार का एक रूप है जिसे प्रत्येक अद्वितीय व्यक्ति की जरूरतों को पूरा करने के लिए अनुकूलित किया जा सकता है। इसे घर, स्कूल और समुदाय में कई अलग–अलग स्थानों पर भी प्रदान किया जा सकता है। एबीए थेरेपी में एक–से–एक शिक्षण या समूह निर्देश शामिल हो सकते हैं एबीए थेरेपी कार्यक्रम मदद कर सकते हैं ।

एक योग्य व्यवहार मनोवैज्ञानिक डिजाइन करता है और सीधे कार्यक्रम की देखरेख करता है। वे बच्चे के कौशल, जरूरतों, रुचियों, प्राथमिकताओं और पारिवारिक परिस्थितियों के लिए एबीए कार्यक्रम को अनुकूलित करते हैं। विशिष्ट

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

उपचार लक्ष्यों को तैयार करने के लिए एबीए कार्यक्रम बच्चे के मौजूदा कौशल और वरीयताओं के विस्तृत मूल्यांकन के साथ शुरू किया गया है। ऑटिज्म से पीड़ित बच्चे की उम्र और क्षमता के स्तर को ध्यान में रखकर उपचार के लक्ष्य तय किए जाते हैं। लक्ष्यों में विभिन्न कौशल क्षेत्र शामिल हो सकते हैं, जैसे :–

- संचार और भाषा
- सामाजिक कौशल
- स्व–देखभाल व्यवहार
- खेल और आराम
- मोटर कौशल
- सीखना और शैक्षणिक कौशल

निर्देश योजना इनमें से प्रत्येक कौशल को छोटे, ठोस चरणों में विभाजित करती है। चिकित्सक प्रत्येक चरण को एक–एक करके सरल से अधिक जटिल सिखाता है। प्रत्येक चिकित्सा सत्र में डेटा एकत्र करके प्रगति को मापा जाता है। डेटा निरंतर आधार पर लक्ष्यों की ओर बच्चे की प्रगति की निगरानी करने में मदद करता है। चिकित्सक नियमित रूप से आगे की योजना बनाने और उसके अनुसार शिक्षण योजनाओं और लक्ष्यों को समायोजित करने के लिए प्रगति के बारे में जानकारी की समीक्षा करने के लिए परिवार के सदस्यों के साथ मिलते हैं।

एप्लाइड बिहेवियर एनालिसिस में प्रयुक्त 5 तकनीक :– एप्लाइड बिहेवियर एनालिसिस में बच्चों में वांछित परिणाम उत्पन्न करने के लिए कई तकनीकें शामिल हैं जो व्यवहार संशोधन से लाभ उठा सकते हैं। यहाँ उन पाँच मूल्यवान तकनीकों के बारे में बताया गया है :–

- **सकारात्मक सुदृढीकरण (Positive Reinforcement)** :– विशेष आवश्यकता वाला बच्चा जिसे सीखने या सामाजिक संपर्क में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, वह यह नहीं जानता कि कुछ स्थितियों में कैसे प्रतिक्रिया दी जाए। सकारात्मक सामाजिक व्यवहार को प्रोत्साहित करने का एक तरीका भविष्य में व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए तुरंत सकारात्मक सुदृढीकरण का उपयोग करना शामिल है।
- **नकारात्मक सुदृढीकरण (Negative Reinforcement)** :– जब दुर्भावनापूर्ण व्यवहार होते हैं, तो व्यवहार को तुरंत ठीक करने की आवश्यकता होती है। बुरे व्यवहार को ठीक करने का एक अच्छा तरीका बच्चे से वांछित वस्तु या गतिविधि को हटाना है। यह गैर–प्रतिकूल दंड का एक रूप है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि बच्चे के लिए कार्रवाई और परिणाम की प्रासंगिकता को समझने के लिए नकारात्मक सुदृढीकरण सुसंगत होना चाहिए।
- **संकेतों का उपयोग करना :–** संकेत दृश्य या मौखिक संकेत हैं जिनका उपयोग किसी विशेष व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए किया जाता है। मौखिक संकेत कोमल अनुस्मारक होते हैं जबकि दृश्य संकेत और भी कम प्रत्यक्ष होते हैं और यह आपकी आंखों का इशारा या एक नजर हो सकता है। बच्चा इस संकेत को देखेगा और उसे सरल तरीके से व्यवहार करने के लिए याद दिलाया जाएगा। उदाहरण के तौर पर घर में चलते समय अपने जूते उतारना या भोजन से पहले हाथ धोना इसके उदाहरण हो सकते हैं।

कार्य विश्लेषण(Task Analysis) :– यह व्यवहार को सही करने या सुदृढ़ करने के बजाय बच्चे के बारे में जानने में मदद करने के लिए वर्तमान व्यवहार प्रवृत्तियों और कार्यों का एक विश्लेषण मॉडल है। बाल मनोवैज्ञानिक बच्चे को कार्य देता है और देखता है कि वे इसे कैसे करते हैं। यह विश्लेषण कई श्रेणियों में विभाजित हैः

- शारीरिक क्रियाएं
- संज्ञानात्मक क्रियाएं
- दोहराव
- आवंटन
- पर्यावरण

एक बार चिकित्सक ने विश्लेषण कर लिया कि बच्चा कैसे कार्य करता है, इस जानकारी का उपयोग विशेष बच्चे के लिए अन्य कार्यों को तोड़कर आसान बनाने के लिए किया जाता है। चरणों में नीचे जो बच्चे को आसानी से समझ में आ जाएगा।

सामान्यीकरण (Generalization) :– इस मॉडल के माध्यम से, चिकित्सक एक उदाहरण में बच्चे ने जो सीखा है उसे लेता है और इसे अन्य उदाहरणों पर लागू करता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई बच्चा इसे गाते समय वर्णमाला को बोलना जानता है, तो बाल मनोवैज्ञानिक वर्णमाला के बारे में उनका ज्ञान ले सकता है और बच्चे को उनके नाम की वर्तनी सिखाने के लिए इसे लागू करने का प्रयास कर सकता है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को व्यक्तिगत और विशेष सहायता से सबसे अधिक लाभ होता है। व्यावहारिक व्यवहार विश्लेषण का उपयोग करने वाले चिकित्सक इन विशेष तकनीकों और अन्य का उपयोग करते हैं जो उन बच्चों को स्वतंत्र, अच्छी तरह से समायोजित और खुश वयस्क बनाने में मदद करते हैं जिन्हें थोड़ी अधिक सहायता की आवश्यकता होती है।

सकारात्मक सुदृढीकरण (Positive Reinforcement) :– सकारात्मक सुदृढीकरण एबीए में उपयोग की जाने वाली मुख्य रणनीतियों में से एक है। जब किसी व्यवहार के बाद कुछ मूल्यवान (इनाम) होता है, तो एक व्यक्ति के उस व्यवहार को दोहराने की अधिक संभावना होती है। समय के साथ, यह सकारात्मक व्यवहार परिवर्तन को प्रोत्साहित करता है। सबसे पहले, चिकित्सक एक लक्ष्य व्यवहार की पहचान करता है। हर बार जब कोई व्यक्ति व्यवहार या कौशल का सफलतापूर्वक उपयोग करता है, तो उसे इनाम मिलता है। इनाम व्यक्तिगत उदाहरणों के लिए सार्थक है जिसमें प्रशंसा, एक खिलौना या किताब, एक वीडियो देखना, खेल के मैदान या अन्य स्थान तक पहुंच, और बहुत कुछ शामिल हैं। सकारात्मक पुरस्कार व्यक्ति को कौशल का उपयोग जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। समय के साथ यह सार्थक व्यवहार परिवर्तन की ओर जाता है।

पूर्ववृत्त, व्यवहार, परिणाम (Antecedent, Behavior, Consequence) :– पूर्ववृत्त को समझना (व्यवहार होने से पहले क्या होता है) और परिणाम (व्यवहार के बाद क्या होता है) किसी भी एबीए कार्यक्रम का एक और महत्वपूर्ण हिस्सा है। निम्नलिखित तीन चरण ''ए–बी–सी'' हमें व्यवहार सिखाने और समझने में मदद करते हैं :–

1. एक पूर्ववृत्तः यह लक्ष्य व्यवहार से ठीक पहले होता है। यह मौखिक हो सकता है, जैसे आदेश या अनुरोध। यह भौतिक भी हो सकता है, जैसे कोई खिलौना या वस्तु, या प्रकाश, ध्वनि, या वातावरण में कुछ और। एक पूर्ववृत्त पर्यावरण से, किसी अन्य व्यक्ति से आ सकता है, या आंतरिक हो सकता है ।

2. एक परिणामी व्यवहारः यह व्यक्ति की प्रतिक्रिया या पूर्ववर्ती के प्रति प्रतिक्रिया की कमी है। यह एक क्रिया, एक मौखिक प्रतिक्रिया या कुछ और हो सकता है।

3. एक परिणामः यह वही है जो सीधे व्यवहार के बाद आता है, इसमें वांछित व्यवहार का सकारात्मक सुदृढीकरण शामिल हो सकता है, गलत या अनुचित प्रतिक्रियाओं के लिए कोई प्रतिक्रिया नहीं हो सकती है।

।–B&Cs को देखने से हमें यह समझने में मदद मिलती हैः

1. कोई व्यवहार क्यों हो रहा है

2. व्यवहार के दोबारा होने की संभावना है या नहीं, इसके अलग–अलग परिणाम कैसे प्रभावित हो सकते हैं उदाहरण :–

- पूर्ववृत्तः दिन के अंत में शिक्षक कहते हैं ''यह आपके खिलौनों को साफ करने का समय है''।
- व्यवहारः छात्र चिल्लाता है ''नहीं!''
- परिणामः शिक्षक खिलौनों को हटाता है और कहता है ''ठीक है, खिलौने सब हो चुके हैं।''

निरंतर अभ्यास के साथ, छात्र अनुपयुक्त व्यवहार को अधिक सहायक व्यवहार से बदलने में सक्षम होगा। विद्यार्थी के लिए बच्चे की जरूरतों को पूरा करने का यह एक आसान तरीका है ।

एप्लाइड बिहेवियर एनालिसिस (एबीए) एक प्रकार की थेरेपी है जो विशिष्ट व्यवहारों, जैसे सामाजिक कौशल, संचार, पढ़ने और शिक्षाविदों के साथ–साथ अनुकूली सीखने के कौशल, जैसे कि ठीक मोटर निपुणता, स्वच्छता, सौंदर्य, घरेलू क्षमताओं, समय की

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

पाबंदी में सुधार पर केंद्रित है।,और नौकरी की क्षमता। एबीए स्कूलों, कार्यस्थलों, घरों और क्लीनिकों सहित विभिन्न प्रकार की सेटिंग्स में मनोवैज्ञानिक विकारों वाले बच्चों और वयस्कों के लिए प्रभावी है। यह भी दिखाया गया है कि लगातार एबीए व्यवहार और कौशल में काफी सुधार कर सकता है और विशेष सेवाओं की आवश्यकता को कम कर सकता है।

मौखिक व्यवहार विश्लेषण VERBAL BEHAVIOUR ANALYSIS (VBA) :– बी एफ स्किनर की वर्बल बिहेवियर नामक पुस्तक के सिद्धांतों के आधार पर, इस थेरेपी को संचार कौशल सिखाने के लिए डिजाइन किया गया है। जो बात इसे पारंपरिक स्पीच थेरेपी से अलग बनाती है, वह यह है कि इसे बच्चे की प्रेरणा को शब्द के कार्य या उद्देश्य से जोड़ने के लिए डिजाइन किया गया है। बच्चा सीखता है कि भाषा का उद्देश्य चीजों के लिए पूछना, वस्तुओं को लेबल करना, मौखिक निर्देशों को समझना, सवालों के जवाब देना और संवाद करने के लिए वाक्यांशों का उपयोग करना है। यह दृष्टिकोण आत्मकेंद्रित लोगों को शब्दों को उनके उद्देश्यों से जोड़कर भाषा सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है। छात्र सीखता है कि शब्द उन्हें वांछित वस्तु या परिणाम प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं। मौखिक व्यवहार चिकित्सा केवल लेबल (बिल्ली, कार, आदि) के रूप में शब्दों पर ध्यान केंद्रित नहीं करती है। बल्कि, यह सिखाता है कि हम शब्दों का उपयोग क्यों करते हैं और वे अनुरोध करने और विचारों को संप्रेषित करने में कैसे उपयोगी होते हैं। भाषा को प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है, जिन्हें ''संचालक'' कहा जाता है। प्रत्येक ऑपरेटर का एक अलग कार्य होता है। मौखिक व्यवहार चिकित्सा चार शब्द प्रकारों पर केंद्रित है:

- **मैंड (Mand)** :– एक अनुरोध, जैसे ''कुकी,'' एक कुकी के लिए पूछने के लिए
- **चातुर्य (Tact)** :– एक टिप्पणी एक अनुभव साझा करने या ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रयोग किया जाता है, जैसे ''हवाई जहाज'' एक हवाई जहाज को इंगित करने के लिए
- **इंट्रावर्बल (Intraverbal)** :– एक शब्द का इस्तेमाल जवाब देने के लिए किया जाता है या एक प्रश्न का उत्तर दें, जैसे ''आप स्कूल कहाँ जाते हैं?'' ''कैसल पार्क प्राथमिक''
- **प्रतिध्वनि (Echoic)** :– एक दोहराया, या प्रतिध्वनित, शब्द, जैसे ''कुकी?'' ''कुकी!'' यह महत्वपूर्ण है क्योंकि नकल करने से विद्यार्थी को सीखने में मदद मिलेगी।

यह थेरेपी एबीए या स्पीच थेरेपी से कैसे अलग है ? :– अधिकांश असतत परीक्षण और एबीए कार्यक्रम एक अधिक पारंपरिक भाषा प्रणाली से उत्पन्न होते हैं जो ग्रहणशील और अभिव्यंजक (बोली जाने वाली भाषा) कौशल पर केंद्रित है। मौखिक व्यवहार थेरेपी ''मैंड्स'' या कुकी या कैंडी जैसी वांछित वस्तुओं के अनुरोध के साथ शुरू होती है। जल्दी से सीखता है कि किसी के लिए पूछना सार्थक है क्योंकि उन्हें वह मिलता है जो वे चाहते हैं। शुरुआत में पॉइंटिंग को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जाता है। एक बच्चे को मौखिक रूप से संदर्भित करने के लिए बोलने की आवश्यकता नहीं है। उसे बस संवाद करने में सक्षम होना चाहिए।

एररलेस लर्निंग (Errorless Learning) :– वर्बल बिहेवियर थेरेपी ''एररलेस लर्निंग'' नामक तकनीक का उपयोग करती है। त्रुटिरहित शिक्षण का अर्थ है तत्काल और लगातार संकेतों का उपयोग करना ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि छात्र हर बार सही प्रतिक्रिया प्रदान करता है। समय के साथ, ये संकेत कम हो जाते हैं। अंततः विद्यार्थी को सही उत्तर देने के लिए प्रोत्साहन देने की आवश्यकता नहीं रह जाती। अधिकांश कार्यक्रमों में प्रति सप्ताह कम से कम एक से तीन घंटे की चिकित्सा शामिल होती है। अधिक गहन कार्यक्रमों में कई और घंटे शामिल हो सकते हैं। प्रशिक्षक माता–पिता और अन्य देखभाल करने वालों को अपने दैनिक जीवन में मौखिक व्यवहार रणनीतियों का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित करते हैं।,

मौखिक व्यवहार चिकित्सा से किसे लाभ हो सकता है?

मौखिक व्यवहार थेरेपी मदद कर सकती है:–

- छोटे बच्चे भाषा सीखना शुरू कर देते हैं
- विलंबित या अव्यवस्थित भाषा वाले बड़े छात्र
- बच्चे वयस्क जो दृश्य समर्थन या सहायक संचार के अन्य रूपों पर हस्ताक्षर करते हैं या उनका उपयोग करते हैं ।

Notes For Physium
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

संज्ञानात्मक व्यवहार तकनीक (COGNITIVE BEHAVIOR TECHNIQUES) :– कॉग्निटिव बिहेवियरल थेरेपी (सीबीटी) एक टॉकिंग थेरेपी है जो आपके सोचने और व्यवहार करने के तरीके को बदलकर आपकी समस्याओं का प्रबंधन करने में आपकी मदद कर सकती है।

- चिकित्सक या कंप्यूटर–आधारित कार्यक्रम सीबीटी तकनीकों का उपयोग व्यक्तियों को उनके पैटर्न और विश्वासों को चुनौती देने में मदद करने के लिए करते हैं और ''अधिक यथार्थवादी और प्रभावी विचारों के साथ'' सामान्यीकरण, आवर्धक नकारात्मकता, सकारात्मकता को कम करने जैसी सोच में त्रुटियों को प्रतिस्थापित करते हैं, इस प्रकार भावनात्मक संकट और आत्म–पराजय को कम करते हैं व्यवहार।
- कॉग्निटिव बिहेवियरल थेरेपी (सीबीटी) की उत्पत्ति 20वीं सदी की शुरुआत में बिहेवियरल थैरेपी और उनके विकास से हुई है, और 1960 में कॉग्निटिव थेरेपी के विकास के साथ सहसंबद्ध है, और इसके परिणामस्वरूप उनका संलयन हुआ। विभिन्न मनोरोग विकारों के उपचार में कई नैदानिक अध्ययनों द्वारा उनकी प्रभावशीलता का प्रदर्शन किया गया है। आरोन बेक को संज्ञानात्मक चिकित्सा का जनक माना जाता है, और उनका ध्यान शुरू में अवसाद के लक्षित उपचार पर था। उन्होंने सोचा कि अवसाद में विचारों की विकृति होती है जो मुख्य रूप से स्वयं की नकारात्मक धारणा, पर्यावरण की नकारात्मक व्याख्या और भविष्य में नकारात्मक अपेक्षाओं पर केंद्रित होती है। संज्ञानात्मक बिहेवियरल थेरेपी की उच्च प्रभावकारिता अवसाद, सामान्यीकृत चिंता विकार, सामाजिक भय, अभिघातजन्य तनाव विकार, और अवसादग्रस्तता और चिंता विकारों वाले बच्चों के उपचार में प्रदर्शित की जाती है।
- संज्ञानात्मक व्यवहार थेरेपी के बुनियादी सिद्धांतों में संज्ञानात्मक पुनर्गठन शामिल है, जिसमें चिकित्सक और रोगी विघटनकारी सोच पैटर्न को बदलने के लिए मिलकर काम करते हैं। इसमें व्यवहारिक सक्रियता शामिल है, जिसमें रोगी आनंददायक गतिविधियों में भाग लेने में आने वाली बाधाओं को दूर करना सीखते हैं। साथ ही, यह विशिष्ट, वर्तमान समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करता है और यह समय–सीमित, आर्थिक और लक्ष्योन्मुखी है। व्यक्तिगत या समूह सत्रों में, समस्याओं (व्यवहार, भावनाओं और सोच के संदर्भ में) की पहचान की जाती है। दृष्टिकोण शैक्षिक है। चिकित्सक संरचित सीखने के अनुभवों का उपयोग करता है जो रोगियों को उनके नकारात्मक विचारों और मानसिक छवियों की निगरानी और लिखने के लिए सिखाता है। लक्ष्य यह पहचानना है कि वे विचार उनके मनोदशा, व्यवहार और शारीरिक स्थिति को कैसे प्रभावित करते हैं। चिकित्सक महत्वपूर्ण मुकाबला कौशल भी सिखाते हैं, जैसे समस्या समाधान और सुखद अनुभव शेड्यूल करना। मरीजों से उनके सीखने में सक्रिय भूमिका निभाने की उम्मीद की जाती है, और यही कारण है कि उन्हें प्रत्येक सत्र में होमवर्क असाइनमेंट दिया जाता है जो कि संज्ञानात्मक–बिहेवियरल थेरेपी में मुख्य बुनियादी बातों में से एक है। यदि आपने सप्ताह में केवल एक घंटे के लिए स्कूल गुणा तालिका में सीखा था, तो आप शायद अभी भी सोच रहे होंगे कि 6•7 कितना है। मनोचिकित्सा के साथ भी ऐसा ही हैय लक्ष्य को प्राप्त करने में बहुत लंबा समय लगेगा यदि व्यक्ति जो कर रहा है वह सप्ताह में केवल एक घंटे सिखाई जाने वाली तकनीकों और विषयों के बारे में सोच रहा है। इसलिए, संज्ञानात्मक व्यवहार चिकित्सक रोगियों को होमवर्क सौंपते हैं और उन्हें सिखाई जाने वाली तकनीकों को प्रोत्साहित करते हैं।

सीबीटी में कदम :–

चरण 1: महत्वपूर्ण व्यवहारों की पहचान करें ।

चरण 2: निर्धारित करें कि क्या महत्वपूर्ण व्यवहार अधिकता या कमी हैं ।

चरण 3: आवृत्ति, अवधि या तीव्रता के लिए महत्वपूर्ण व्यवहार का मूल्यांकन करें (आधार रेखा प्राप्त करें)

चरण 4: यदि अधिक है, तो आवृत्ति, अवधि को कम करने का प्रयास करें , या व्यवहार की तीव्रताय यदि कमी है, तो व्यवहार बढ़ाने का प्रयास करें।

सीबीटी कैसे काम करता है?

- सीबीटी इस अवधारणा पर आधारित है कि आपके विचार, भावनाएं, शारीरिक संवेदनाएं और कार्य आपस में जुड़े हुए हैं, और यह कि नकारात्मक विचार और भावनाएं आपको एक दुष्चक्र में फंसा सकती हैं सीबीटी में, समस्याओं को पांच मुख्य क्षेत्रों में विभाजित किया जाता हैय स्थितियाँ, विचार, भावनाएँ, शारीरिक भावनाएँ, कार्य।
- सीबीटी इन पांच क्षेत्रों के आपस में जुड़े होने और एक दूसरे को प्रभावित करने की अवधारणा पर आधारित है। उदाहरण के लिए, एक निश्चित स्थिति के बारे में आपके विचार अक्सर प्रभावित कर सकते हैं कि आप शारीरिक और भावनात्मक रूप से कैसा महसूस करते हैं, साथ ही साथ प्रतिक्रिया में आप कैसे कार्य करते हैं।

सीबीटी सत्रों के दौरान क्या होता है :–

- यदि सीबीटी की सिफारिश की जाती है, तो आप आमतौर पर सप्ताह में एक बार या हर दो सप्ताह में एक बार चिकित्सक के साथ सत्र करेंगे। उपचार का कोर्स आमतौर पर पांच से 20 सत्रों तक रहता है, प्रत्येक सत्र 30–60 मिनट तक चलता है।
- सत्रों के दौरान, आप अपने चिकित्सक के साथ अपनी समस्याओं को उनके अलग–अलग हिस्सों में बांटने के लिए काम करेंगे – जैसे कि आपके विचार, शारीरिक भावनाएं और कार्य ।
- आप और आपका चिकित्सक इन क्षेत्रों का विश्लेषण करेंगे कि क्या वे अवास्तविक या अनुपयोगी हैं और यह निर्धारित करने के लिए कि उनका एक दूसरे पर और आप पर क्या प्रभाव पड़ता है। तब आपका चिकित्सक आपको यह पता लगाने में मदद करेगा कि अनुपयोगी विचारों और व्यवहारों को कैसे बदला जाए।
- यह निर्धारित करने के बाद कि आप क्या बदल सकते हैं, आपका चिकित्सक आपको इन परिवर्तनों का अभ्यास करने के लिए कहेगा।
- इससे आपको अपनी समस्याओं का प्रबंधन करने और उन्हें अपने जीवन पर प्रभाव डालने से रोकने में मदद मिलेगी।

सीबीटी कैसे अलग है?

- व्यावहारिक यह विशिष्ट समस्याओं की पहचान करने में मदद करता है और उन्हें हल करने का प्रयास करता है ।
- अपने जीवन के बारे में स्वतंत्र रूप से बात करने के बजाय अत्यधिक संरचित, आप और आपके चिकित्सक विशिष्ट समस्याओं पर चर्चा करते हैं और आपको प्राप्त करने के लिए लक्ष्य निर्धारित करते हैं।
- वर्तमान समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं यह मुख्य रूप से आप कैसे सोचते हैं और पिछले मुद्दों को हल करने का प्रयास करने के बजाय अभी कार्य करें ।
- सहयोगात्मक – आपका चिकित्सक आपको यह नहीं बताएगा कि क्या करना हैय वे आपकी वर्तमान कठिनाइयों का समाधान खोजने के लिए आपके साथ काम करेंगे ।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

सीबीटी के उपयोग को कई अलग–अलग मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों के इलाज का एक प्रभावी तरीका दिखाया गया है। अवसाद या चिंता विकारों के अलावा, सीबीटी भी लोगों की मदद कर सकता हैः

- जुनूनी बाध्यकारी विकार (obsessive compulsive disorder) (OCD)
- आतंक विकार ।
- अभिघातजन्य तनाव विकार (post&traumatic stress disorder) (पीटीएसडी)।
- फोबिया।
- खाने के विकार जैसे एनोरेक्सिया और बुलिमिया।
- नींद की समस्या जैसे अनिद्रा की समस्या संबंधित शराब का दुरुपयोग ।

Unit :- 3.3 Social Strategies and Approaches (e.g.,social stories, Comic strips, Peer-Mediated Programs) सामाजिक रणनीतियाँ और दृष्टिकोण (जैसे, सामाजिक कहानियाँ, कॉमिक स्ट्रिप्स, सहकर्मी–मध्यस्थ कार्यक्रम) :– ऑटिज्म से पीड़ित व्यक्तियों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के प्रावधान उन्हें वयस्कता में यथासंभव स्वतंत्र जीवन जीने में सक्षम बनाने के लिए तैयार किए गए हैं। इसका तात्पर्य यह है कि शिक्षा व्यक्तियों को कार्य कौशल प्रदान करेगी जो उन्हें रोजगार प्राप्त करने, रोजगार

प्राप्त करने, अपनी नौकरी बनाए रखने, स्वतंत्र रूप से रहने में सक्षम होने और पर्याप्त अवकाश कौशल प्राप्त करने के योग्य बनाएगी। फिर भी कुछ शैक्षिक अवसर जो वर्तमान में मौजूद हैं वे संज्ञानात्मक कौशल के विकास और 'शिक्षाविदों' पर अधिक केंद्रित हैं और जब वे ऑटिज्म से पीड़ित होते हैं तो व्यक्तियों की जरूरतों पर थोड़ा ध्यान देते हैं। उपयुक्त शैक्षिक अवसरों की यह निकट–अनुपस्थिति रोजगार की संभावना को गंभीर रूप से सीमित करती है – और इसलिए, स्वतंत्र जीवन के अवसर – ऑटिज्म से पीड़ित अधिकांश व्यक्तियों के लिए। ऑटिज्म से पीड़ित वयस्कों के लिए वयस्कों के रूप में स्वतंत्र होने के विकल्पों को अधिकतम करने के लिए, वर्तमान सेवाओं और योजना को व्यावसायिक कौशल, नौकरी के अवसर, रहने के विकल्प और मनोरंजक अवसरों में प्रशिक्षण की आवश्यकता को भी ध्यान में रखना चाहिए।

संचार कौशल (Communication Skills) :– ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (एएसडी) से पीड़ित कई बच्चों के लिए भाषा का उपयोग करना और अन्य लोगों के साथ संवाद करना एक चुनौती हो सकती है। लेकिन मदद और समझ से ये बच्चे संचार कौशल विकसित कर सकते हैं।

- ऑटिज्म से पीड़ित बच्चे के लिए सबसे अच्छा, सबसे लक्षित संचार उपचार कार्यक्रम प्रदान करने के लिए, एक भाषण–भाषा रोगविज्ञानी (एसएलपी) द्वारा एक व्यापक संचार मूल्यांकन किए जाने की आवश्यकता है। इस मूल्यांकन के लिए व्यावहारिक भाषा कौशल (कार्यात्मक और सामाजिक संचार) के साथ–साथ अर्थ भाषा कौशल (भाषा का अर्थ–सामग्री और संदर्भ सहित) का मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। आत्मकेंद्रित की अनूठी प्रकृति के कारण, मूल्यांकन के लिए एक टीम प्रयास की आवश्यकता होती है, जिसमें परिवार, शिक्षक और अन्य लोग शामिल होते हैं जो बच्चे को अच्छी तरह से जानते हैं, और इसमें मानकीकृत परीक्षण से अधिक शामिल होना चाहिए। उपचार के निर्णय लेने के लिए और एक आधार रेखा प्रदान करने के लिए बच्चे की एक पूरी तस्वीर की आवश्यकता होती है जिसके द्वारा प्रगति को मापा जा सकता है।
- यहीं से कार्यात्मक संचार प्रशिक्षण (थ्ब्ज) आता है। थ्ब्ज में एक व्यक्ति को वांछित अंत प्राप्त करने के लिए भाषा, संकेतों औरध्या छवियों के साथ जानकारी देने का एक विश्वसनीय तरीका सिखाना शामिल है। इसे ''कार्यात्मक'' कहा जाता है क्योंकि यह बच्चों को केवल एक वस्तु को लेबल करना नहीं सिखाता है । बल्कि कुछ आवश्यक या वांछित प्राप्त करने के लिए शब्दों या संकेतों का उपयोग करने पर ध्यान केंद्रित करता है– एक भोजन, एक खिलौना, एक गतिविधि, बाथरूम की यात्रा, किसी चीज से ब्रेक।
- एफसीटी में बच्चों को भाषा और संचार के बारे में सिखाने के लिए सकारात्मक सुदृढीकरण का उपयोग शामिल है, ताकि उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से बातचीत करने की उनकी क्षमता में वृद्धि हो सके।

सामाजिक कहानियां (Social Stories) :– सामाजिक कहानियाँ एक शिक्षक और सलाहकार कैरोल ग्रे द्वारा बनाई गई थीं। 1990 में, उसने अपने ऑटिस्टिक छात्रों को स्कूल–आधारित स्थितियों की एक श्रृंखला के लिए तैयार करने में मदद करने के लिए ''सामाजिक कहानियां'' बनाने के विचार के साथ प्रयोग करना शुरू किया। कई दशकों के दौरान, उन्होंने एक प्रणाली और दृष्टिकोण को पूरा किया, जिसका उन्होंने पेटेंट कराया है। जबकि कई लोग अपनी सामाजिक कहानियां बनाते हैं । 1990 के बाद से, कुछ शोधकर्ताओं ने सामाजिक कहानियों की प्रभावकारिता का पता लगाया है। अधिकांश ने इस दृष्टिकोण को उपयोगी पाया है, हालांकि कुछ मिश्रित परिणाम हैं। स्पष्ट रूप से, सामाजिक कहानियां तभी उपयोगी हो सकती हैं जब दर्शक सामग्री को समझने और कार्य करने में व्यस्त, रुचि रखने वाले और सक्षम हों। सामाजिक कहानियां ऑटिस्टिक बच्चों को सामाजिक स्थितियों की व्याख्या करती हैं और उन्हें सामाजिक रूप से उपयुक्त व्यवहार और प्रतिक्रियाओं को सीखने में मदद करती हैं। इन कहानियों को कभी–कभी सामाजिक लिपियों, सामाजिक आख्यानों या कहानी–आधारित हस्तक्षेप कहा जाता है।

कैरल ग्रे के अनुसार, एक अच्छी सामाजिक कहानी के मानदंड संक्षेप में इस प्रकार हैं:

1. एक सहायक, सार्थक, वर्णनात्मक तरीके से सटीक जानकारी साझा करें।

2. अपने दर्शकों (ऑटिज्म से पीड़ित व्यक्ति) और वर्णित कौशल, अवधारणा या स्थिति के प्रति उसके दृष्टिकोण को समझें।

3. प्रत्येक सामाजिक कहानी में एक शीर्षक, परिचय, मुख्य भाग और सारांश निष्कर्ष शामिल करें।

Notes For Pyssun
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

4. लिखते समय, पहले या तीसरे व्यक्ति की आवाज का प्रयोग करें, सकारात्मक स्वर रखें, बिल्कुल शाब्दिक और सटीक रहें।

5. प्रमुख प्रश्नों के उत्तर कौन, क्या, कहाँ, क्यों, कब और कैसे दें।

6. वर्णनात्मक वाक्यों के साथ–साथ कोचिंग वाक्यों को भी शामिल करें।

7. जितना आप निर्देशित करते हैं उससे अधिक का वर्णन करें।

8. अपनी सामाजिक कहानियों को प्रस्तुत करने से पहले उनकी समीक्षा करें और उन्हें परिष्कृत करें।

9. लिखने से पहले योजना बनाएं, परिणामों की निगरानी करें, आवश्यकतानुसार मिक्स एंड मैच करें, निर्देश और तालियां दोनों दें।

10. दर्शकों के लिए कम से कम 50: ''तालियाँ'' (पुष्टि) शामिल करें।

सामाजिक कहानियों के सामान्य उपयोग

• बच्चों (या वयस्कों) को एक साधारण कार्य पूरा करना सिखाएं जैसे जैकेट निकालना और लंचबॉक्स को दूर रखना।

• एक जटिल या चुनौतीपूर्ण स्थिति तैयार करने में व्यक्तियों की सहायता करें जैसे कि एक सामाजिक घटना या एक आउटिंग जिसमें सामाजिक अपेक्षाएं औरध्या संवेदी हमले शामिल होने की संभावना है।

• शरीर की भाषा, चेहरे के भाव, या मुखर स्वरों को समझने और उनका जवाब देने में व्यक्तियों की सहायता करें।

• एक समान सामाजिक कौशल समूह में विकल्प प्रदान करें।

• शादी, नौकरी के लिए इंटरव्यू या तारीख जैसे अनोखे आयोजनों के लिए लोगों को तैयार करें।

सामाजिक कहानियों का दुरुपयोग :– सामाजिक कहानियां सरल होती हैं, उनका दुरुपयोग करना आसान होता है और उन्हें गलत तरीके से बनाया जाता है। सामाजिक कहानियां बच्चों के ठीक से व्यवहार करने के बारे में आख्यान नहीं हैं, और वे कार्यों को पूरा करने या उचित व्यवहार करने के लिए निर्देशों का एक समूह नहीं हैं। सामाजिक कहानियाँ बनाते समय, लेखकों को इससे बचना चाहिए:

• ऐसी कहानियां जो विवरण को शामिल करने के बजाय लगभग पूरी तरह से निर्देशों से बनी होती हैं

• एक कहानी जो दूसरे व्यक्ति का उपयोग करती है ।

• रूपक, जटिल भाषा, और अन्य लेखन जो समझ में नहीं आ सकते हैं।

• कहानियां जो हैं पूरी तरह से सटीक नहीं ।

• ऐसी कहानियां जो निर्णय या धमकी का सुझाव देती हैं ।

सामाजिक अध्ययन के निर्माण में एक अन्य सामान्य त्रुटि दृश्य का दुरुपयोग है। छवियों को यथासंभव यथार्थवादी, सटीक और सार्थक बनाने का इरादा है। फिर भी, सामाजिक कहानियों के कई निर्माता क्लिप आर्ट, इमोजी और अन्य वस्तुओं के साथ अपना काम करते हैं जो कहानी को ''सजाते हैं'' लेकिन इसे पढ़ने वाले व्यक्ति को कोई अर्थ नहीं देते हैं।

कॉमिक स्ट्रिप्स (Comic strips) :– कैरल ग्रे द्वारा बनाई गई कॉमिक स्ट्रिप बातचीत, बातचीत के सरल दृश्य प्रतिनिधित्व हैं। उन्होंने दिखाया :–

• बातचीत में वास्तव में कही गई बातें।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

• लोग कैसा महसूस कर रहे होंगे ।

• लोगों के इरादे क्या हो सकते हैं।

कॉमिक स्ट्रिप वार्तालाप सामाजिक बातचीत और बातचीत के अमूर्त पहलुओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए छड़ी के आंकड़े और प्रतीकों का उपयोग करते हैं, और एक बयान या संदेश की भावनात्मक सामग्री का प्रतिनिधित्व करने के लिए रंग का उपयोग करते हैं।

कैरल ग्रे की कॉमिक स्ट्रिप वार्तालापों से, 1994 :– बातचीत के विभिन्न तत्वों को दृष्टिगत रूप से प्रस्तुत करके, सामाजिक संचार के कुछ अधिक सारगर्भित पहलुओं को अधिक 'ठोस' बना दिया जाता है और इसलिए उन्हें समझना आसान हो जाता है। कॉमिक स्ट्रिप वार्तालाप में, माता–पिता, देखभाल करने वालों या शिक्षकों के समर्थन और मार्गदर्शन की पेशकश के साथ, ऑटिस्टिक व्यक्ति मुख्य भूमिका निभाता है।

- आप जिस व्यक्ति का समर्थन कर रहे हैं, उसे बात करते समय ड्राइंग से परिचित कराने के लिए और सामान्य सामाजिक अंतःक्रियाओं की नकल करने के लिए छोटी–छोटी बातों (उदाहरण के लिए, मौसम के बारे में बात करना) से शुरू करें।
- किसी विशिष्ट स्थिति या सामाजिक संपर्क के प्रकार के बारे में कई तरह के प्रश्न पूछें। ऑटिस्टिक व्यक्ति अपनी प्रतिक्रिया बोलकर और चित्र बनाकर उत्तर देता है।
- एक गाइड के रूप में रेखाचित्रों का उपयोग करके आपने जिस घटना या स्थिति पर चर्चा की है उसका सारांश दें।
- इस बारे में सोचें कि पहचानी गई किसी भी समस्या या चिंताओं को आप कैसे दूर कर सकते हैं।
- जटिल परिस्थितियों के लिए, या जिन लोगों को घटनाओं को क्रम से रिपोर्ट करने में कठिनाई होती है, उनके लिए कॉमिक स्ट्रिप बॉक्स का उपयोग किया जा सकता है, या ड्रॉइंग को उसी क्रम में क्रमांकित किया जा सकता है जिसमें वे घटित होते हैं।

कॉमिक स्ट्रिप वार्तालापों का उपयोग भविष्य में ऐसी स्थिति की योजना बनाने के लिए किया जा सकता है जो चिंता या चिंता का कारण हो सकती है, उदाहरण के लिए कोई परीक्षा या सामाजिक घटना। हालाँकि, याद रखें कि योजनाएँ कभी–कभी बदल सकती हैं। जानकारी को इस तरह से प्रस्तुत करना महत्वपूर्ण है जो किसी स्थिति में अप्रत्याशित परिवर्तन की अनुमति देता है।

पीयर–मध्यस्थता कार्यक्रम (Peer & Mediated Programs) :–

पीयर–मध्यस्थता निर्देश और हस्तक्षेप (पीएमआईआई) – या किसी अन्य विकलांग बच्चे के साथ लागू किए गए किसी भी निर्देश या हस्तक्षेप को विभिन्न तरीकों से लागू किया जा सकता है। केवल एक शिक्षक या चिकित्सक और बच्चे को शामिल करने के बजाय, च्डप्प् में एक या अधिक साथियों को शामिल किया जाता है जो शिक्षण में भूमिका निभाते हैं। ,

सहकर्मी–मध्यस्थ कार्यक्रम को लागू करने के कुछ लक्ष्य हैं :–

1. एएसडी वाले छात्रों के साथ बात करने और खेलने के लिए साथियों की रणनीतियां सिखाएं ।

2. एएसडी वाले छात्रों और उनके आम तौर पर विकासशील साथियों के बीच बातचीत बढ़ाएं ।

3. वयस्क समर्थन को कम से कम करें।

PMII न केवल एक हस्तक्षेप बल्कि विभिन्न तरीकों के समूह का वर्णन करता है। च्डप्प् ने अपने साथियों को प्राकृतिक मॉडल के रूप में, साथियों को प्रशिक्षकों के रूप में उपयोग करते हुए, और सामाजिक कौशल प्रशिक्षण में, कक्षा–व्यापी स्वरूपों में प्रभावी दिखाया है। नीचे कुछ उदाहरण दिए गए हैं कि कैसे च्डप्प् को विभिन्न शिक्षार्थियों के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए अनुकूलित किया जा सकता है।

सहकर्मी–मध्यस्थ निर्देश और हस्तक्षेप न केवल व्यक्तिगत शिक्षार्थी और एक सहकर्मी के साथ, बल्कि कक्षा में सभी बच्चों के साथ लागू किए जा सकते हैं। कभी–कभी समूह–उन्मुख आकस्मिकताओं के रूप में जाना जाता है, इन हस्तक्षेपों में सभी

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

साथियों के लिए इनाम या प्रेरणा की प्रणाली शामिल होती है जो व्यक्तिगत शिक्षार्थी के लिए बातचीत और उपयुक्त व्यवहार को बढ़ावा देने में मदद करती है। इसमें बच्चों के बीच बातचीत को बढ़ावा देने के लिए कक्षा या क्लिनिक के वातावरण की भौतिक विशेषताओं को बदलना भी शामिल हो सकता है। पीयर मॉडलिंग हस्तक्षेप

कुछ PMII विधियाँ उपयुक्त व्यवहार के एक प्राकृतिक मॉडल के रूप में पीयर का लाभ उठाती हैं। कभी–कभी ऑब्जर्वेशनल लर्निंग के रूप में जाना जाता है, यह तकनीक ऑटिज्म से पीड़ित बच्चे को सहकर्मी का निरीक्षण करने और बाद में मॉडल की नकल करने पर केंद्रित है। अनुसंधान से पता चलता है कि एक सहकर्मी मॉडल का व्यवहार एएसडी वाले बच्चों के लिए वयस्क मॉडल के समान ही प्रभावी है। पीयर–मॉडलिंग का उपयोग एएसडी वाले बच्चे को एक सहकर्मी से प्राकृतिक सामाजिक संकेतों को आरंभ करने और प्रतिक्रिया करने के लिए सीखने में मदद करने के लिए भी किया जा सकता है।

पीयर ट्यूटरिंग इंटरवेंशन :– पीयर ट्यूटरिंग इंटरवेंशन च्डप्प के असंख्य तरीकों का वर्णन करता है जहां पीयर विदाउट डिसेबिलिटी इंस्ट्रक्टर की भूमिका ग्रहण करता है। सहकर्मी शिक्षण बातचीत के दौरान, सहकर्मी निर्देश प्रदान कर सकता है, अच्छे व्यवहार के लिए पुरस्कार या सकारात्मक सुदृढीकरण प्रदान कर सकता है, या सुधारात्मक प्रतिक्रिया प्रदान कर सकता है। अधिकांश पीयर–ट्यूटरिंग इंटरवेंशन में, पीयर पहले से ही ट्रेनिंग लेता है लेकिन फिर इंटरवेंशन को स्वतंत्र रूप से लागू कर सकता है। कुछ पीयर–ट्यूटरिंग इंटरवेंशन में रिवर्स शामिल होता है, जहां ऑटिज्म से पीड़ित बच्चा ट्यूटर के रूप में कार्य करता है, उचित निर्देश देता है और एक सहकर्मी को सुधारात्मक फीड देता है।

सामाजिक कौशल प्रशिक्षण (Social Skills Training) :– सामाजिक कौशल विकसित करने से संबंधित लक्ष्यों वाले शिक्षार्थियों के लिए, पीएमआईद्य हस्तक्षेपों में सामाजिक कौशल प्रशिक्षण शामिल हो सकता है। कभी–कभी सहकर्मी नेटवर्क के रूप में जाना जाता है, ये सामाजिक कौशल प्रशिक्षण समूह छोटे समूहों में एक विशिष्ट सामाजिक कौशल का अभ्यास करते हैं। समूह एक प्रतिक्रिया पर ध्यान केंद्रित कर सकता है, जैसे कि बारी–बारी से बातचीत करना , या उपयुक्त सामाजिक व्यवहारों को मॉडलिंग करने या मित्रता विकसित करने पर इसका व्यापक ध्यान हो सकता है। सामाजिक अंतःक्रियाओं पर हस्तक्षेप रणनीतियों के प्रभावों को निर्धारित करने के लिए बाल प्रगति की लगातार निगरानी एक महत्वपूर्ण घटक होगा। प्रत्यक्ष अवलोकन शिक्षकों को बच्चों के सामाजिक जुड़ाव की गुणवत्ता और मात्रा दोनों का आकलन करने की अनुमति देगा। उदाहरण के लिए, शिक्षकों को मूल्यांकन करना चाहिए ।

- क्या सहकर्मी लक्ष्य बच्चे के साथ बातचीत शुरू करता है ।
- क्या लक्षित बच्चा साथियों की पहल पर प्रतिक्रिया करता है ।
- क्या लक्षित बच्चा सहकर्मी के साथ पहल करता है।
- क्या सहकर्मी लक्षित बच्चे को जवाब देता है।
- क्या लक्षित बच्चा किसी अनुचित कार्य में संलग्न है ।

Unit :- 3.4 Strategies and Approaches (e.g., Learning Experiences and Alternate Program for Pre-schoolers and their Parents (LEAP), Early Start Denver Model (ESDM), The Joint Attention, Symbolic Play, Engagement & Regulation (JASPER), Floortime) रणनीतियाँ और दृष्टिकोण (जैसे, सीखने के अनुभव और पूर्व के लिए वैकल्पिक कार्यक्रम – स्कूली छात्र और उनके माता–पिता (LEAP), अर्ली स्टार्ट डेनवर मॉडल (ESDM), द जॉइंट ध्यान, प्रतीकात्मक खेल, सगाई और विनियमन), फ्लोरटाइम) ।

JASPER (जैस्पर) :– संयुक्त ध्यान, प्रतीकात्मक खेल, सगाई और विनियमन (जैस्पर) दृष्टिकोण को ऑटिज्म अनुसंधान और उपचार केंद्र में डॉ कोनी कसारी(क्त. ब्वददपम ज्ञेंतप) द्वारा विकसित किया गया था। यह विकासात्मक और व्यवहारिक सिद्धांतों के एकीकरण पर आधारित एक उपचार दृष्टिकोण है। यह मॉडल संयुक्त ध्यान, नकल और खेल के संदर्भ में सामाजिक–संचार की नींव को लक्षित

करने के लिए प्राकृतिक रणनीतियों का उपयोग करता है। हस्तक्षेप के प्राथमिक कार्यान्वयनकर्ताओं में माता–पिता और शिक्षक शामिल हैं जिनका अंतिम लक्ष्य वातावरण और गतिविधियों में सामान्यीकरण को बढ़ावा देना और समय के साथ प्रगति को बनाए रखना है।

संयुक्त ध्यान, प्रतीकात्मक खेल, सगाई और विनियमन (जेएसपीईआर) दृष्टिकोण ऑटिज्म वाले बच्चों के लिए मुख्य कमी वाले क्षेत्रों की पहचान करता है और उनका इलाज करता है। इन मुख्य घाटे वाले क्षेत्रों में संयुक्त ध्यान, प्रतीकात्मक खेल, जुड़ाव और विनियमन शामिल हैं और इन्हें जैस्पर उपचार के चार मुख्य लक्ष्य माना जाता है। बुनियादी जैस्पर रणनीतियों को इन लक्षित क्षेत्रों में सुधार के लिए संरचना और लचीलेपन के संतुलन के साथ प्राकृतिक प्रतीकात्मक खेल सत्रों में एकीकृत किया गया है। रणनीतियों में शामिल हैंय मॉडलिंग, पदानुक्रम को बढ़ावा देना, संयुक्त ध्यान का अनुकरण और विस्तार करना, भाषा और खेल के साथ–साथ बच्चे की भाषा से मेल खाने के लिए और बच्चे के हितों के आधार पर खेल को समायोजित करना।

संयुक्त ध्यान, प्रतीकात्मक खेल और विनियमन (जेएसपीईआर) रणनीतियों का परीक्षण 12 महीने से 8 वर्ष की उम्र के बच्चों के साथ किया गया है और अन्य व्यवहार आधारित हस्तक्षेपों के साथ अच्छी तरह से काम करने के लिए दिखाया गया है। एक बार प्रारंभिक आकलन पूरा हो जाने के बाद एक हस्तक्षेप योजना तैयार की जाती है और उपचार रणनीतियों को सीखने के लिए वयस्कों को प्रति सप्ताह दो बार सत्रों की एक श्रृंखला के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। श्रौच्म्त दृष्टिकोण को स्वाभाविक रूप से विशेष शिक्षा कक्षाओं, समावेशन और बच्चे के घर जैसी सेटिंग्स में शामिल किया जा सकता है।

मुख्य मूल्यों में शामिल हैं :–

- सीधे संयुक्त ध्यान कौशल का मॉडलिंग और शिक्षण।
- ध्यान समन्वय करने की क्षमता में वृद्धि ।
- खेल कौशल में विविधता और लचीलेपन में वृद्धि।
- कार्यात्मक खेल में वृद्धि और प्रतीकात्मक खेल के उच्च स्तर तक पहुंचें।
- बच्चों की सगाई की स्थिति में सुधार ।
- अवसरों को बढ़ाने के लिए जुड़ाव बढ़ाना सीखने और सामाजिक संचार के लिए भावनात्मक और व्यवहारिक विनियमन बढ़ाएँ ।
- आत्म–उत्तेजक व्यवहार कम करें ।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY

JASPER का अनुभव कई बच्चों के साथ किया गया है, जिनकी उम्र 12 महीने से लेकर 8 साल तक की है, जिसमें विकासात्मक क्षमताओं की एक विस्तृत श्रृंखला है। इसमें माता–पिता, शिक्षकों, पैराप्रोफेशनल और चिकित्सकों के लिए आवेदन है। श्रौच्म्त अन्य व्यवहार–आधारित उपचारों के संयोजन में अच्छी तरह से काम करता है और इसे स्वाभाविक रूप से समावेश और विशेष शिक्षा कक्षाओं और घर में हर दिन की गतिविधियों में शामिल किया जा सकता है। केवल आवश्यक सामग्री विकास के लिए उपयुक्त खिलौने या गतिविधियाँ हैं।

पूर्वस्कूली और उनके माता–पिता के लिए सीखने के अनुभव और वैकल्पिक कार्यक्रम (एलईएपी) :– LEAP इसके लिए एक संक्षिप्त शब्द हैः लर्निंग एक्सपीरियंस :– प्रीस्कूलर और माता–पिता के लिए एक वैकल्पिक कार्यक्रम। हमारी विशेष शिक्षा प्रीस्कूल ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार से पीड़ित पूर्वस्कूली बच्चों और आम तौर पर विकसित हो रहे साथियों को उच्च गुणवत्ता वाली प्रारंभिक हस्तक्षेप सेवाएं प्रदान करती है।

LEAP एक प्रारंभिक बचपन के वातावरण में ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकारों वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए एक प्राकृतिक, समावेशी विकासात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है। यह दृष्टिकोण आत्मकेंद्रित के साथ बच्चों के कौशल को बातचीत के माध्यम से बढ़ाने और आम तौर पर विकासशील साथियों के साथ खेलने पर केंद्रित है। स्म।च मॉडल बचपन के विशेष शिक्षा इतिहास में सबसे व्यापक रूप से मान्य हस्तक्षेप कार्यक्रमों में से एक है।

परिवार का समर्थन (Family Support) :– LEAP पूर्वस्कूली कार्यक्रम में भाग लेने वाले बच्चों की सफलता के लिए परिवार की भागीदारी आवश्यक है। परिवारों को उनके बच्चे द्वारा सीखे जा रहे कौशल को बेहतर ढंग से समझने और सुदृढ़ करने में मदद करने के लिए, लीप प्रीस्कूल माता–पिता के लिए बुनियादी व्यवहार प्रबंधन प्रशिक्षण प्रदान करता है। यह प्रशिक्षण माता–पिता को अपने बच्चों को घर पर नए कौशल सिखाने के लिए आवश्यक ज्ञान प्रदान करता है।

LEAP ऑस्टिस्टिक स्पेक्ट्रम पर छोटे बच्चों के लिए एक बहुआयामी कार्यक्रम है। इसने कई तरह की रणनीतियों को जोड़ा जैसे कि एप्लाइड बिहेवियर एनालिसिस, पीयर–मध्यस्थता निर्देश, आकस्मिक शिक्षण, स्व–प्रबंधन प्रशिक्षण, प्रोत्साहन रणनीति और व्यवस्थित माता–पिता का प्रशिक्षण। इसे पेंसिल्वेनिया में फिलिप स्ट्रेन द्वारा ऑटिज्म से पीड़ित बच्चों और आमतौर पर विकासशील बच्चों दोनों के लिए विकसित किया गया था। लीप में एक एकीकृत प्रीस्कूल कार्यक्रम और माता–पिता के लिए एक व्यवहार कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम के घटक हैं। सेवाओं में माता–पिता की भागीदारी और प्रशिक्षण शामिल हैं।

कार्यक्रम एक–से–एक हस्तक्षेप प्रदान नहीं करता है; इसके बजाय, सेवाओं में एक शिक्षक और एक सहायक द्वारा प्रदान किए जाने वाले कक्षा निर्देश के प्रति सप्ताह 15 घंटे शामिल होते हैं, जो 10 आम तौर पर विकासशील बच्चों और ऑटिज्म से पीड़ित 3 से 4 बच्चों के साथ कार्यक्रम को लागू करते हैं। एक पूर्णकालिक भाषण चिकित्सक और अनुबंधित व्यावसायिक और भौतिक चिकित्सक भी बच्चों के साथ विशेष रूप से व्यवस्थित कक्षाओं में काम करते हैं जो बाल–निर्देशित खेल का समर्थन करने के लिए डिजाइन किए गए हैं। पाठ्यक्रम का प्राथमिक लक्ष्य ऑटिज्म से पीड़ित बच्चों को विशिष्ट प्रीस्कूल गतिविधियों से अवगत कराना है और आवश्यक होने पर ही ऑटिज्म से पीड़ित बच्चों के लिए विशिष्ट पाठ्यक्रम को अनुकूलित करना है। स्वतंत्र खेल कौशल को सहकर्मी मॉडल का उपयोग करके और लक्ष्य व्यवहार को बढ़ावा देने, लुप्त करने और मजबूत करने द्वारा सुगम बनाया जाता है।

Early Start Denver Model (ESDM) :– अर्ली स्टार्ट डेनवर मॉडल (ईएसडीएम) 12–48 महीने की उम्र के बीच ऑटिज्म से पीड़ित बच्चों के लिए एक व्यवहारिक चिकित्सा है। माता–पिता और चिकित्सक सकारात्मक और मजेदार संबंध बनाने के लिए खेल का उपयोग करते हैं। खेल और संयुक्त गतिविधियों के माध्यम से, बच्चे को भाषा, सामाजिक और संज्ञानात्मक कौशल को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

- सामान्य बच्चा सीखने और विकास की समझ के आधार पर ।
- सकारात्मक संबंध बनाने पर ध्यान केंद्रित ।
- शिक्षण प्राकृतिक खेल और रोजमर्रा की गतिविधियों के दौरान होता है ।
- बातचीत और संचार को प्रोत्साहित करने के लिए खेल का उपयोग करता है ।

ईएसडीएम थेरेपी का उपयोग घर पर, क्लिनिक में या स्कूल सहित कई सेटिंग्स में किया जा सकता है। थेरेपी समूह सेटिंग्स और आमने–सामने दोनों में प्रदान की जाती है।

यह सीखने की शैलियों और क्षमताओं की एक विस्तृत श्रृंखला वाले बच्चों के लिए प्रभावी पाया गया है। मैक्ड बच्चों को उनके सामाजिक कौशल, भाषा कौशल और संज्ञानात्मक कौशल में प्रगति करने में मदद कर सकता है। जिन बच्चों के पास सीखने की महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं, वे उतना ही लाभ उठा सकते हैं जितना कि बिना सीखने की चुनौतियों के।

माता–पिता की भागीदारी ईएसडीएम कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। चिकित्सक को अपने द्वारा उपयोग की जाने वाली रणनीतियों की व्याख्या और मॉडल करना चाहिए ताकि परिवार घर पर उनका अभ्यास कर सकें।

ईएसडीएम डेनवर मॉडल पर आधारित है, जो आम तौर पर एएसडी वाले बड़े बच्चों पर लागू होता है। मैक्ड का प्रारंभिक संस्करण ळमतंसकपदम वृंवद, चे.क द्वारा विकसित किया गया था। और **सैली रोजर्स**, पीएच.डी. एएसडी के कुछ रूप वाले बच्चों के लिए प्रारंभिक व्यवहार चिकित्सा दृष्टिकोण के रूप में। जैसा कि उल्लेख किया गया है, यह 12–48 महीनों के बीच आयु समूह पर केंद्रित है और यह applied behavioral analysis (ABA) के तरीकों पर आधारित है। मैक्ड को इस तरह से बनाया

गया है कि पाठधचिकित्सा विभिन्न सेटिंग्स में हो सके। सकारात्मक संबंधों और संबंधित संबंधपरक कौशल के विकास की दिशा में काम करने के लिए माता–पिता और चिकित्सक दोनों खेल–आधारित चिकित्सा का उपयोग कर सकते हैं, चाहे वे कहीं भी हों। यह नाटक ''लर्निंग' थेरेपी इस ज्ञान पर आधारित है कि 'सामान्य बच्चे का विकास कहाँ होना चाहिए। 'सामान्य' विकास के ज्ञान का उपयोग करते हुए, ईएसडीएम पाठ्यक्रम विशेष रूप से उन क्षेत्रों को लक्षित करता है जिनमें एएसडी वाले बच्चों को अतिरिक्त कठिनाई हो सकती है। इन विशिष्ट क्षेत्रों में आमतौर पर शामिल हैं सामाजिक संपर्क कौशल, कौशल सेट को एकीकृत करने की क्षमता, और संबंधों को बनाने और बनाए रखने की क्षमता। ईएसडीएम गहन परीक्षण और अनुभवजन्य रूप से सत्यापित शिक्षण तकनीकों पर निर्भर करता है जो एबीए विधियों और क्षेत्र–परीक्षणित शिक्षण प्रथाओं पर आधारित हैं। सबसे ऊपर, यह प्रयास करता है ।

अर्ली स्टार्ट डेनवर मॉडल की कुछ प्रमुख विशेषताएं हैं :–

- डीप पैरेंटल इंटरेक्शन प्ले–बेस्ड थेरेपी
- भाषा और संचार पाठ एक प्रभाव–आधारित और सकारात्मक संबंध के भीतर दिया जाता है।
- सकारात्मक प्रभाव और पारस्परिक गतिशीलता पर जोर।
- एबीए संयुक्त गतिविधियों से तैयार की गई प्राकृतिक रणनीतियाँ जो साझा भागीदारी को सुदृढ़ करता है ।
- 'सामान्य' बचपन के विकास लक्ष्यों के प्रति संवेदनशीलता।

ईएसडीएम एएसडीएस वाले बच्चों और उनके माता–पिता को शैक्षिक और विकासात्मक कार्यक्रमों के लिए तैयार करता है, जिन्हें संभवतः जीवन में बाद में सुझाया या प्रोत्साहित किया जाएगा (जैसे डेनवर मॉडल)। ESDM के समर्थकों का मानना है कि यह कम उम्र में बच्चों में संबंध–केंद्रित व्यवहार स्थापित करने का आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य करता है, जो जीवन में बाद में बड़े सामाजिक समूहों (जैसे स्कूल के वातावरण) में उनके एकीकरण का अभिन्न अंग साबित होगा। आज, ईएसडीएम एएसडी बच्चों की सहायता के लिए एक अनिवार्य उपकरण बन गया है जो अपने सामाजिक संदर्भ के अन्य सदस्यों से जुड़ने के लिए संघर्ष करते हैं और जो अन्य संबंधित कार्यों को सीखने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।

संयुक्त ध्यान (The Joint Attention) :– JASPER में रणनीतियाँ साझा करने के उद्देश्यों के लिए वस्तुओं और लोगों के बीच ध्यान को समन्वित करते हुए संयुक्त ध्यान कौशल को बढ़ावा देती हैं। उदाहरणों में लोगों और वस्तुओं के बीच देखना, दिखाना और दिखाने की ओर इशारा करना शामिल है। जबकि सामान्य बच्चों में संयुक्त ध्यान स्वाभाविक रूप से विकसित होता है, ऑटिज्म से पीड़ित लोगों को इन कौशलों को सक्रिय रूप से सीखना चाहिए। हमारे अध्ययनों से पता चलता है कि जब संयुक्त ध्यान कौशल को सीधे तौर पर तैयार किया जाता है और सिखाया जाता है, तो ऑटिज्म से पीड़ित बच्चे अधिक संयुक्त ध्यान का उपयोग करते हैं। इससे जुड़ाव और सीखने में वृद्धि होती है। संयुक्त ध्यान एक व्यवहार है जिसमें दो लोग एक दूसरे के साथ बातचीत करने के उद्देश्य से किसी वस्तु या घटना पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यह प्रारंभिक सामाजिक और संचारी व्यवहार का एक रूप है।

संयुक्त ध्यान में किसी अन्य व्यक्ति के साथ किसी चीज (जैसे अन्य लोगों, वस्तुओं, एक अवधारणा, या एक घटना) पर एक सामान्य ध्यान साझा करना शामिल है। इसके लिए ध्यान हासिल करने, बनाए रखने और स्थानांतरित करने की क्षमता की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, एक माता–पिता और बच्चा दोनों उस खिलौने को देख सकते हैं जिसके साथ वे खेल रहे हैं या एक ट्रेन को गुजरते हुए देख सकते हैं। संयुक्त ध्यान (जिसे 'साझा ध्यान' के रूप में भी जाना जाता है) आंखों के संपर्क, हावभाव (जैसे तर्जनी का उपयोग करके इंगित करना) या बोले गए शब्दों सहित स्वरों का उपयोग करके प्राप्त किया जा सकता है ।

जब एक व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के साथ अपने ध्यान केंद्रित करने के उद्देश्य से समन्वय करता है, तो हम व्यवहार को ''संयुक्त ध्यान'' के रूप में संदर्भित करते हैं। संयुक्त ध्यान में दो लोग शामिल हैं जो एक ही चीज पर ध्यान दे रहे हैं, जानबूझकर और सामाजिक कारणों से। उदाहरण के लिए, कल्पना कीजिए कि एक शिक्षक अपनी मेज की ओर इशारा करता है और एक बच्चे से कहता है, ''उस बड़े सेब को देखो'' बच्चा उस जगह को देखता है जहां शिक्षक ने इशारा किया है और सेब को देखता है। इस स्थिति में, शिक्षक और बच्चा संयुक्त ध्यान में लगे हुए हैं–अर्थात, उन्होंने उद्देश्य से सेब पर ध्यान साझा किया।

प्रारंभिक संयुक्त ध्यान कौशल में एक बच्चा शामिल हो सकता है जो एक वयस्क द्वारा उठाए जाने के लिए या किसी अन्य व्यक्ति के साथ एक किताब के एक ही पृष्ठ को देख रहा है। आगे विकसित कौशल में एक खेल पर ध्यान केंद्रित करना या वस्तुओं का अनुरोध करना शामिल हो सकता है, जैसे कि पसंदीदा खिलौना भोजन। संयुक्त ध्यान दो तरह से हो सकता हैः

1. संयुक्त ध्यान देना इस मामले में, बच्चा सामाजिक संपर्क शुरू करता है। उदाहरण के लिए, बच्चा एक खिलौने की ओर इशारा कर सकता है, और अपने माता–पिता की ओर भी देख सकता है ताकि वे उसे भी देख सकें। बड़े बच्चे ध्यान आकर्षित करने के लिए स्वरों का प्रयोग कर सकते हैं । संयुक्त ध्यान देना यह संकेत दे सकता है कि बच्चा सामाजिक रूप से प्रेरित है।
2. संयुक्त ध्यान का जवाब इस परिदृश्य में, बच्चा संयुक्त ध्यान आकर्षित करने के लिए किसी और के प्रयासों का जवाब देता है। उदाहरण के लिए, माता–पिता क गेंद की ओर इशारा करते हैं और कहते हैं, ''गेंद को देखो!''। बच्चा गेंद को देखने के लिए माता–पिता की निगाहों और हावभाव (उदाहरण के लिए तर्जनी का उपयोग करके) का अनुसरण करके प्रतिक्रिया करता है। जवाब देना, संयुक्त ध्यान देने की तुलना में आसान है।
3. सामाजिक–संचार और संज्ञानात्मक कौशल विकसित करने के लिए संयुक्त ध्यान स्थापित करने में सक्षम होना महत्वपूर्ण है। आमतौर पर विकासशील बच्चों में, जन्म के तुरंत बाद संयुक्त ध्यान कौशल विकसित होने लगते हैं और तीन साल की उम्र तक, बच्चे आमतौर पर वयस्कों और साथियों से संयुक्त ध्यान प्राप्त करने और बनाए रखने में सक्षम होते हैं।
4. संयुक्त ध्यान कौशल के बिना, बच्चों के लिए अपने देखभाल करने वालों और साथियों के साथ बातचीत करना और संबंध विकसित करना मुश्किल हो सकता है। संयुक्त ध्यान महत्वपूर्ण सामाजिक कौशल विकसित करने में मदद करता है जैसे बंधन और दूसरे के दृष्टिकोण को देखना।

ऑटिज्म से पीड़ित बच्चों को संयुक्त ध्यान देने में कठिनाई हो सकती है, क्योंकि उन्हें किसी वस्तु और व्यक्ति पर ध्यान देते समय बातचीत करना मुश्किल हो सकता है। इसके परिणामस्वरूप दूसरों के साथ बातचीत करने और संवाद करने के अवसर चूक सकते हैं। साथ ही, ऑटिज्म से पीड़ित व्यक्ति के लिए अपनी इच्छाओं और जरूरतों को पूरा करना मुश्किल हो सकता है। संयुक्त ध्यान के लिए आवश्यक कौशल में शामिल हैं :–

- एक सामाजिक साथी (अर्थात, जिस व्यक्ति के साथ आप बातचीत कर रहे हैं) को उन्मुख करना और उसमें शामिल होना लोगों और वस्तुओं के बीच टकटकी लगाना।
- किसी अन्य व्यक्ति के साथ भावनात्मक स्थिति साझा करना ।
- किसी अन्य व्यक्ति की नजर और बिंदु का अनुसरण करना ।
- किसी अन्य व्यक्ति का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम होना ।
- अनुभव साझा करने के उद्देश्य से वस्तुओं या घटनाओं।

प्रतीकात्मक खेल (Symbolic Play) :– जैस्पर का प्राथमिक लक्ष्य बच्चों के खेल कौशल की विविधता को बढ़ाना है। उपयुक्त नाटक कृत्यों को मॉडल किया जाता है, खेल की दिनचर्या में संयुक्त ध्यान की सुविधा होती है, और खेल के प्रकारों में अधिक विविधता को प्रोत्साहित किया जाता है। समग्र लक्ष्य बच्चे को खेलने में उनकी विविधता और लचीलेपन को बढ़ाने और खेल के उच्च स्तर तक पहुंचने में मदद करना है। यद्यपि प्रतीकात्मक खेल के स्तर तक पहुँचना एक अंतिम लक्ष्य है, बच्चे के विकास के स्तर के आधार पर कार्यात्मक खेल को भी लक्षित किया जाता है। खेल एक बच्चे को सामाजिक अंतःक्रियाओं का पूर्वाभ्यास करने, उपन्यास विचारों को उत्पन्न करने, प्रतीकात्मकता के साथ खिलौना बनाने और कथा कौशल विकसित करने के कुछ अवसर प्रदान करता है जो जीवन में बाद में हमारी सेवा करते हैं, विशेष रूप से हमारी अत्यधिक सामाजिक दुनिया में। वास्तव में, जो बच्चे विकास की शुरुआत में अधिक जटिल खेल में संलग्न होते हैं, वे बाद की उम्र में अधिक सामाजिक क्षमता दिखाते हैं। किसी अन्य व्यक्ति को खेलने के लिए आमंत्रित करने, या किसी अन्य के नेतृत्व का अनुसरण करने का अवसर जोड़ें, और दूसरों के साथ काम करने की नींव निर्धारित है। ऑटिज्म से पीड़ित बच्चों के लिए, हालांकि, ये अवसर इतनी आसानी से खुद को पेश नहीं करते हैं। फिर भी इन बच्चों के लिए खेल अभी भी एक महत्वपूर्ण विकासात्मक उपकरण है। चिकित्सकों के लिए, यह उपचार प्रदान करने के लिए एक प्रमुख क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है जो एक बच्चे के सामाजिक कौशल, भाषा और कुछ संज्ञानात्मक क्षमताओं में सुधार कर सकता है।

Notes For Pvssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

ऑटिज्म से पीड़ित बच्चों का आकलन करने में, चिकित्सक कई अलग–अलग प्रकार के खेल को देखते हैं। प्रतीकात्मक नाटक में अन्य वस्तुओं की क्रियाओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए वस्तुओं या क्रियाओं का उपयोग शामिल है। आत्मकेंद्रित में, प्रतीकात्मक खेल में अक्सर देरी होती है, और सहज खेल कम बार–बार होता है, कम जटिल होता है और इसमें उस नवीनता का अभाव होता है जो आमतौर पर विकासशील बच्चे प्रदर्शित करते हैं। प्रतीकात्मक नाटक ढोंग नाटक के लिए सिर्फ एक और शब्द है। 3 साल की उम्र तक, अधिकांश बच्चों ने काफी परिष्कृत उपकरण विकसित कर लिए हैं ।

वे खिलौनों का उपयोग ठीक वैसे ही कर सकते हैं जैसे वे एक दिखावा रसोई के साथ ''घर'' खेल रहे हैं और प्लास्टिक का खाना खा रहे हैं। या वे अपना खुद का ढोंग कर सकते हैं, जैसे कि एक बॉक्स को किले में बदलना।

लापता वस्तुओं के साथ खेल गतिविधियों की व्यवस्था करने से बच्चों के लिए प्रतीकात्मक खेल में शामिल होने के अवसर बढ़े। इस तरह के कौशल की कमी वाले ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार वाले बच्चों में जटिल खेल व्यवहार को स्थापित करने और सुधारने के लिए प्रारंभिक चरण के रूप में प्रशिक्षण प्रक्रिया का उपयोग नैदानिक और शैक्षिक सेटिंग्स में किया जा सकता है।

Engagement & Regulation :–

एंगेजमेंट (Engagement) :– JASPER हस्तक्षेप के दौरान दूसरों के साथ बच्चे के जुड़ाव की स्थिति में सुधार करने के लिए कई रणनीतियों का उपयोग करता है। लक्ष्य बच्चे को अन्य लोगों के साथ संयुक्त जुड़ाव के उच्च राज्यों में अव्यक्त या पूरी तरह से वस्तुओं पर केंद्रित होने से रोकना है, और उनकी विविधता और लचीलेपन को बढ़ाने के लिए उन्हें खेल के उच्च स्तर तक पहुंचने में सक्षम बनाना है। जुड़ाव में वृद्धि से सामाजिक संचार और सीखने के अवसरों में वृद्धि होती है।

विनियमन (Regulation) :– यह दृष्टिकोण भावना और व्यवहार विनियमन के महत्व पर बल देता है। स्व–उत्तेजक व्यवहारों को संभालने के लिए रणनीतियों की एक श्रृंखला नियोजित की जाती है जो सीखने, जुड़ाव की कमी और विनियमन में हस्तक्षेप करती है।

Floortime :– ऑटिज्म से पीड़ित बच्चों के लिए थेरेपी। हस्तक्षेप को फ्लोरटाइम कहा जाता है क्योंकि माता–पिता अपने स्तर पर बच्चे के साथ खेलने और बातचीत करने के लिए फर्श पर उतर जाते हैं। फ्लोरटाइम ABA का एक विकल्प है और कभी–कभी ।ठ। उपचारों के संयोजन में इसका उपयोग किया जाता है। लक्ष्य वयस्कों के लिए बच्चों को उनके ''संचार के मंडल'' का विस्तार करने में मदद करना है। वे अपने विकास के स्तर पर बच्चे से मिलते हैं और अपनी ताकत का निर्माण करते हैं।

. चिकित्सक और माता–पिता बच्चों को उन गतिविधियों के माध्यम से संलग्न करते हैं जो प्रत्येक बच्चा आनंद लेता है। वे बच्चों के खेल में प्रवेश करते हैं। वे बच्चे के नेतृत्व का पालन करते हैं।

फ्लोरटाइम का उद्देश्य बच्चे को छह प्रमुख मील के पत्थर तक पहुंचने में मदद करना है जो भावनात्मक और बौद्धिक विकास में योगदान करते हैं:

- आत्म–नियमन और दुनिया में रुचि
- अंतरंगता, या रिश्तों में जुड़ाव
- दोतरफा संचार
- जटिल संचार
- भावनात्मक विचार
- भावनात्मक सोच

चिकित्सक माता–पिता को सिखाते हैं कि अपने बच्चों को अधिक से अधिक जटिल बातचीत में कैसे निर्देशित किया जाए। यह प्रक्रिया, जिसे ''संचार के उद्घाटन और समापन मंडल'' कहा जाता है, फ्लोरटाइम दृष्टिकोण के लिए केंद्रीय है।

Unit :- 3.5 Consideration for Learning and Teaching Methods in ASD (एएसडी में सीखने और सिखाने के तरीकों पर विचार) :– एएसडी के साथ बच्चों को पढ़ाना (ज्मंबीपदह बैपसकतमद ूपजी ै।क) :–शिक्षण रणनीतियों का चयन करते समय, हम

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY SPECIAL EDUCATION

सभी जानते हैं कि 'एक आकार सभी फिट बैठता है' लागू नहीं होता है। प्रत्येक बच्चे के व्यक्तित्व को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है। लेकिन इससे परे एक और पहलू है जिसे ऑटिज्म से पीड़ित बच्चों को पढ़ाते समय ध्यान में रखना चाहिए।

आत्मकेंद्रित एक आबादी है जो एक विशिष्ट रूप से भिन्न विकास पथ लेती है। जबकि प्रत्येक बच्चे की अपनी विशिष्ट शैली होती है, बड़ी संख्या में ऑटिज्म से पीड़ित बच्चों में कुछ विशिष्ट समानताएँ होती हैं। ये, उनकी ताकत और कमजोरियों के असमान पैटर्न के अलावा, कुछ अनूठी सीखने की विशेषताएं हैं जिन पर उनके शैक्षिक प्रभाव के लिए विचार किया जाना चाहिए।

सामान्यीकरण (Generalisation) :– किसी कौशल को विभिन्न परिस्थितियों में लागू करने की क्षमता को सामान्यीकरण कहा जाता है। परिस्थितियों, समय और लोगों के बीच सीखे गए कौशल को सामान्य बनाने के अवसर दिए जाने चाहिए।

कंक्रीट से अमूर्त (Concrete to abstract) :– ऑटिज्म से पीड़ित बच्चों को कल्पना की कठिनाइयों के कारण अमूर्त अवधारणाओं को समझना मुश्किल हो सकता है। क्योंकि वे ठोस रूप से ध्यान केंद्रित करते हैं, उन्हें अक्सर कार्यों के सटीक क्रम को याद रखने में कठिनाई होती है। यहाँ फिर से दृश्य मदद करते हैं। इसके अलावा, शिक्षण हमेशा ठोस वस्तुओं से शुरू होता है और फिर अमूर्त अवधारणाओं की ओर बढ़ता है। सीखना अनुभवात्मक होना चाहिए और वास्तविक जीवन की स्थितियों से संबंधित होना चाहिए।

Rote learners :– ऑटिज्म से पीड़ित बच्चों की रटने की याददाश्त उत्कृष्ट होती है और वे इसका उपयोग समझने में अपनी कठिनाइयों की भरपाई के लिए कर सकते हैं। इसलिए भाषा कौशल पर काम करना अनिवार्य है।.

शाब्दिक समझ (Literal understanding) :– चूंकि ऑटिज्म से पीड़ित बच्चे शाब्दिक दुभाषिए हैं, इसलिए संचार में स्पष्ट और ठोस होना आवश्यक है। विडंबना, व्यंग्य और रूपकों से बचना सबसे अच्छा है। ऑटिज्म से पीड़ित बच्चों को साझा ध्यान कार्यों में कठिनाई हो सकती है जिसमें यह समझना शामिल है कि दूसरा व्यक्ति क्या सोच रहा है। यह एक ऐसा कौशल है जो किसी भी शिक्षण स्थिति में महत्वपूर्ण है और ऑटिज्म से पीड़ित लोगों में सीखने की कठिनाई के मुख्य क्षेत्रों में से एक पर प्रकाश डालता है।

पढ़ना (Reading) :– एएसडी वाले कई छात्रों के पास मजबूत दृश्य कौशल होते हैं और अक्सर एक अधिक पारंपरिक ध्वन्यात्मकता कार्यक्रम की तुलना में संपूर्ण शब्द दृष्टि पहचान दृष्टिकोण के माध्यम से पढ़ना सीखने में अधिक सफल होते हैं। जिन शब्दों के लिए छात्रों के पास अनुभव या ज्ञान का कोई आधार नहीं है, उन शब्दों की तुलना में, जो अर्थपूर्ण होते हैं, आमतौर पर छात्रों के लिए पढ़ना सीखना आसान होता है। पढ़ना सीखने के शुरुआती चरणों में, छात्रों को आत्मविश्वास की भावना विकसित करने में सक्षम बनाना महत्वपूर्ण है। वर्णमाला जानने और ध्वनि प्रतीक संघों को जानने के लिए आमतौर पर पढ़ना सीखने के लिए पूर्वापेक्षा कौशल के रूप में माना जाता है, एएसडी वाले कई छात्रों को अक्सर इन पूर्वापेक्षा कौशल प्राप्त करने में कठिनाई होती है। कुछ छात्र वर्णमाला के अक्षरों और अक्षरों की ध्वनियों को रटकर सुनाने में सक्षम हैं, लेकिन हो सकता है कि वे इसे धाराप्रवाह तरीके से डिकोडिंग शब्दों पर लागू करने में असमर्थ हों। पढ़ने के प्रवाह की दर छात्रों के शब्दों के संदेश को समझने की क्षमता को प्रभावित करेगी। यदि किसी छात्र को कठिन डिकोडिंग प्रक्रिया पर अधिक संज्ञानात्मक ध्यान देने की आवश्यकता है, तो संभावना है कि छात्र की समझ में कमी आएगी कि शब्द क्या कह रहे हैं।

लेखन (Writing) :– जबकि एएसडी वाले कुछ छात्र मुद्रण और हस्तलेखन में कुशल होते हैं, कई अन्य को ठीक मोटर कौशल के साथ कठिनाइयों के कारण लिखित कार्यों में कठिनाई होती है। लिखित गतिविधियों में आवश्यक दृश्य–मोटर समन्वय और ठीक मोटर आंदोलन बेहद निराशाजनक हो सकते हैं और छात्र जो कुछ भी लिख रहे हैं उसकी सामग्री से प्रिंट उत्पादन की भौतिक प्रक्रिया पर ध्यान हटा सकते हैं। लिखावट की कठिनाइयों को आज स्कूलों में एएसडी वाले छात्रों के लिए अकादमिक भागीदारी के लिए सबसे महत्वपूर्ण बाधाओं में से एक के रूप में पहचाना गया है।

ऐसे कई तरीके हैं जिनसे छात्रों के लेखन कौशल में सीमाओं को बढ़ाने और क्षतिपूर्ति करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा सकता है। यदि ठीक मोटर कौशल भागीदारी और शैक्षणिक कार्य में बाधा है, तो सहायक प्रौद्योगिकी के विकल्प की तलाश करें।

कीबोर्ड, वर्ड प्रोसेसर और लेखन सॉफ्टवेयर के उपयोग ने एएसडी वाले कई छात्रों के लिए लेखन प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाया है। छात्रों के लिए कीबोर्ड का उपयोग करना सीखना एक मूल्यवान कौशल है। एएसडी वाले कई छात्रों के लिए, कंप्यूटर का उपयोग करना एक अत्यधिक पसंदीदा गतिविधि है। एक लेखन उपकरण के रूप में कीबोर्ड का उपयोग करना

Notes For Physium
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

सीखने के लिए छात्र को सिखाएं और प्रोत्साहित करें। यह अक्सर एएसडी से जुड़ी मोटर नियोजन कठिनाइयों के लिए एक उचित आवास है। जबकि प्रिंट करना सीखना कई लोगों के लिए एक उपयोगी अभ्यास हो सकता है, जब छात्रों की कलमकारी की कठिनाइयाँ उनके ज्ञान को प्रदर्शित करने की क्षमता को बाधित करती हैं और व्यवहार में गड़बड़ी पैदा करती हैं, तो कीबोर्ड का उपयोग व्यवहार्य विकल्प होता है।

गणित एएसडी वाले कई छात्रों के लिए :–

गणित में भागीदारी अकादमिक पाठ्यक्रम का एक चुनौतीपूर्ण पहलू हो सकता है। इसके कई कारण हैं:–

• यद्यपि कई गणितीय अवधारणाओं को दृश्य उदाहरणों के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है, वे अक्सर परिष्कृत मौखिक निर्देश के साथ होते हैं। • गणित निर्देश की भाषा की अपनी शब्दावली होती है, और निर्देश की शुद्धता और शब्दों का उपयोग एक प्रशिक्षक से दूसरे में भिन्न हो सकता है।

• गणितीय शब्दावली बहुत जटिल हो सकती है और उन छात्रों के लिए चुनौतीपूर्ण है जो रोजमर्रा की बातचीत की भाषा को संसाधित करने में संघर्ष करते हैं।

• संख्या के मौखिक, शब्दावली और प्रतिनिधित्वात्मक अभिव्यक्तियों के साथ–साथ अंकों के रूप में प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व भी होता है,

• गणितीय संचालन आमतौर पर एक पेंसिल के साथ किया जाता है। एएसडी वाले कई छात्रों को ठीक मोटर कठिनाइयाँ होती हैं और अंकों को बनाना और उन्हें कागज पर हेरफेर करना सीखना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

Unit :- 4

Teaching strategies for students with ID

(आईडी वाले छात्रों के लिए शिक्षण रणनीतियाँ)

Unit :- 4.1 Teaching strategies for developing personal and social skills in students with ID (आईडी वाले छात्रों में व्यक्तिगत और सामाजिक कौशल विकसित करने के लिए शिक्षण रणनीतियां) :–

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

व्यक्तिगत कौशल (च्मतेवदंस ेापससे) :– खाने, कपड़े पहनने और व्यक्तिगत स्वच्छता से संबंधित कौशल एक अर्ध–स्वतंत्र जीवन जीने की इच्छा रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए आवश्यक हैं। इन बुनियादी कौशलों के अलावा हम घर और समुदाय में जीवन को नेविगेट करने के लिए प्रतिदिन उपयोग किए जाने वाले कई कौशल हैं। व्यवस्थित योजना और शिक्षण के साथ, बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों का उच्च क्षमता समूह माध्यमिक स्तर तक पहुँचने तक अपने आप खाना–पीना, कपड़े पहनना, ब्रश करना और स्नान करना सीख जाता है। हालांकि, उनमें से कुछ को नहाने और कपड़े पहनने में न्यूनतम सहायता की आवश्यकता हो सकती है। इस स्तर पर निम्नलिखित पाठ्यचर्या सामग्री को प्राथमिक पाठ्यचर्या के विस्तार के रूप में शामिल करने की आवश्यकता है।

पाठ्यचर्या सामग्री में विभिन्न प्रकार के नाश्ते के सामान और मिठाइयाँ खाने जैसी गतिविधियाँ शामिल होनी चाहिए (जैसे। गुलाब जामुन / रसगुल्ला / पायसम को चम्मच से खाना, चपाती का एक छोटा टुकड़ा दाहिने हाथ से लेना और थोड़ी मात्रा में करी / दाल लेना और जब बच्चे सामाजिक कार्यों और कैफेटेरिया में भाग लेते हैं, पानी ले जाते हैं, बोतलों में पानी भरते हैं, प्रबंधनीय कपड़े, बेड कवर ध चादरें मोड़ते हैं, चित्र काटते हैं, चिपकाते हैं, कागजों को मोड़ते हैं और उन्हें कवर में डालते हैं, तो उचित खाने / टेबल शिष्टाचार दिखाते हैं। नियमित गतिविधियां। छात्र की क्षमता को कभी कम मत समझो। उसे विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराएं और सीखने में सहायता करें।

- बच्चों को विभिन्न प्रकार के नाश्ते और खाने का अवसर प्रदान करें जो आमतौर पर घर पर तैयार किए जाते हैं और बाहर उपलब्ध होते हैं क्योंकि अलग–अलग वस्तुओं को खाने के लिए अलग–अलग कौशल की आवश्यकता होती है।

- उन्हें विभिन्न प्रकार के खाने के वातावरण में उजागर करने के लिए स्कूल गतिविधि के एक भाग के रूप में खाने के स्थानों पर ले जाएं।
- बच्चों को यह तय करने दें कि वे क्या खाना चाहते हैं और आइटम ऑर्डर करें।
- उन्हें अक्षरों को मोड़ने और लिफाफे में डालने और चिपकाने का अनुभव दें। हर संगठन के पास करने के लिए बहुत सारे पत्राचार होते हैं। प्रारंभिक प्रशिक्षण के बाद छात्रों को उन्हें गतिविधि दी जा सकती है।
- नैपकिन, तौलिये, या टेबल क्लॉथ को मोड़ना स्कूल में सिखाया जा सकता है क्योंकि इन सामग्रियों का उपयोग स्कूल में विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन के दौरान किया जाता है।
- स्कूल पूरे साल राष्ट्रीय त्योहारों, जन्मदिन पार्टियों, खेल दिवस, वार्षिक दिवस और ऐसे समारोहों का जश्न मनाते हैं। इस स्तर पर छात्र सजावट, बैठने की व्यवस्था, भोजनध्नाश्ते की व्यवस्था में शामिल हो सकते हैं।
- माता–पिताध्परिवार के सदस्यों को घर पर भी इन सभी गतिविधियों में अपने बच्चों को शामिल करने के लिए सूचित करें ताकि प्रशिक्षण का स्थानांतरण और सामान्यीकरण प्राप्त हो सके। चरणों में कौशल को तोड़ें / कार्य–विश्लेषण करें।
- मॉडल लक्षित कौशल, फिर अभ्यास के अवसर प्रदान करें।
- प्रत्येक चरण को प्रदर्शित करने के लिए चित्रोंध्आइकनों के साथ दृश्य अनुसूचियों का उपयोग करें। व्यवस्थित रूप से फीका स्वतंत्रता को बढ़ावा देने का संकेत देता है।
- जैसा उपयुक्त हो, व्यावसायिक जागरूकता और अन्वेषण सिखाएं। प्रासंगिक संदर्भों में सामग्री पढ़ाएं। सामग्री या सेटिंग्स में जानकारी को सामान्य बनाने के लिए छात्रों को सुदृढ़ करें। छात्रों को उनके द्वारा सीखी गई जानकारी को लागू करने के कई अवसर प्रदान करें।
- दैनिक जीवन और आत्म–देखभाल से संबंधित जीवन कौशल स्पष्ट रूप से सिखाएं।
- ऐसे अनुभवों की योजना बनाएं जो छात्र की दुनिया के लिए प्रासंगिक हों।
- अन्य सेटिंग्स (फील्ड ट्रिप) पर कौशल लागू करने के तरीके खोजें।
- विकर्षण और अति–उत्तेजना की संभावना को कम करें।

एक समय में एक कौशल पर ध्यान केंद्रित करना निःशक्त बच्चों को रोजमर्रा की गतिविधियाँ बहुत चुनौतीपूर्ण लग सकती हैं, इसलिए एक समय में केवल एक ही चीज सिखाने पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, प्रमस्तिष्क पक्षाघात से पीड़ित बच्चा केवल सीधी कुर्सी पर बैठने के लिए बहुत अधिक शारीरिक और मानसिक ऊर्जा का उपयोग कर सकता है, इसलिए उसके लिए बैठे–बैठे कुछ और करना कठिन हो सकता है। विकलांग बच्चों के लिए, यह विकर्षणों को कम करने में भी मदद करता है और यह सुनिश्चित करता है कि आपके बच्चे का वातावरण उनके सीखने के लिए स्थापित किया गया है।

निर्देशः बताकर पढ़ाना यह बच्चों को क्या करना है या कैसे करना है, यह समझाकर सिखाना है। यदि आप शुरू करने से पहले कुछ योजना बनाते हैं तो यह रणनीति सबसे अच्छा काम करती है।

मॉडलिंगः दिखाकर शिक्षणः दृश्य प्रतिनिधित्व बच्चे आपको देखकर सीखते हैं कि क्या करना है और कैसे करना है। इसे मॉडलिंग कहते हैं। इसका मतलब है कि आप अपने बच्चे को क्या करना है, यह दिखाकर बहुत सी बातें सिखा सकते हैं। उदाहरण के लिए, आप अपने बच्चे को खिलौनों को पैक करने, कप धोने या पालतू जानवर को खिलाने के बारे में 'बताने' के बजाय 'दिखाने' की अधिक संभावना रखते हैं।

आप अपने बच्चे को दूसरों के साथ बातचीत करने का तरीका सिखाने के लिए मॉडलिंग का उपयोग भी कर सकते हैं – उदाहरण के लिए, शिक्षक से मदद मांगना, या किसी अन्य व्यक्ति से अपना परिचय देना। और मॉडलिंग कौशल सिखाने का एक शानदार तरीका है जिसे शब्दों में समझाना मुश्किल है, जैसे शरीर की भाषा और आवाज का स्वर।

मॉडलिंग भी एक अच्छा विकल्प हो सकता है यदि आपके बच्चे को आपसे आँख मिलाना मुश्किल लगता है। मॉडलिंग का मतलब है कि आपका बच्चा आपके कार्यों और व्यवहार को तब देख सकता है जब आप उन्हें दिखाते हैं कि क्या करना है, न कि आपके चेहरे पर जैसा आप उन्हें बताते हैं।

Notes For Pyqsum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

चरण–दर–चरण शिक्षणः कार्य विश्लेषण कुछ कार्य या गतिविधियाँ जटिल होती हैं या एक क्रम में होने की आवश्यकता होती है। इनके लिए, आप कार्य को छोटे–छोटे चरणों में तोड़ सकते हैं, और अपने बच्चे को एक बार में कदम सिखा सकते हैं।

चरण–दर–चरण शिक्षण का विचार एक समय में एक कदम पढ़ाना है। जब आपके बच्चे ने पहला कदम सीख लिया है, तो आप अगला कदम सिखाते हैं, फिर अगला कदम, और इसी तरह। आप तब तक चलते रहें जब तक कि आपका बच्चा पूरे काम को अपने आप नहीं कर लेता। आप अपने बच्चे को प्रत्येक चरण सीखने में मदद करने के लिए निर्देशों और मॉडलिंग का उपयोग कर सकते हैं।.

पीछे के चरणों के साथ शिक्षण(Teaching with backwards steps) :– पीछे की ओर श्रृंखलाबद्ध करना अक्सर पहले चरण के बजाय अंतिम चरण से शुरू करके तैयार होने जैसे जटिल कार्य को सिखाना एक अच्छा विचार है। इसे पिछड़ा शिक्षण कहते हैं।

Social skills (सामाजिक कौशल) :– सामाजिक कौशल को एक दूसरे के साथ बातचीत और संवाद करने के लिए उपयोग किए जाने वाले कौशल के सेट के रूप में परिभाषित किया गया है। इन कौशलों में दैनिक संपर्क कौशल शामिल हैं जैसे साझा करना, मोड़ लेना और दूसरों को बिना रुकावट के बात करने की अनुमति देना। क्रैचोविल और फ्रेंच (1984) के अनुसार सामाजिक कौशल मौखिक और अशाब्दिक व्यवहार सीखे जाते हैं जो एक विशिष्ट सामाजिक संदर्भ में किए जाते हैं। दूसरों के साथ संबंध बनाने और बनाए रखने के लिए सामाजिक कौशल आवश्यक हैं। ये कौशल धीरे–धीरे सीखने के माध्यम से हासिल किए जा सकते हैं और संस्कृति में मौजूद विभिन्न सामाजिक एजेंटों से काफी हद तक प्रभावित होते हैं। समाज में सीखने और प्राप्त करने की इस प्रक्रिया को समाजीकरण कहा जाता है और जब इन कौशलों को पर्याप्त रूप से निष्पादित किया जाता है तो उन्हें सामाजिक योग्यता कहा जाता है। सामाजिक क्षमता में सामाजिक कौशल और अनुकूली व्यवहार दोनों शामिल हैं। परिवार, पड़ोस और स्कूल के वातावरण के प्रभाव के कारण बच्चे अपने सामाजिक लक्षणों में बहुत भिन्न होते हैं जो एक समाज की महत्वपूर्ण इकाइयाँ हैं। स्कूल और कक्षाएँ सामाजिक वातावरण हैं जहाँ बच्चे एक अंतःक्रियात्मक संदर्भ में होने वाली निर्देशात्मक गतिविधियों से प्रभावी ढंग से कार्य करते हैं।

समूह के सदस्य और समुदाय के हिस्से के रूप में स्वीकार किए जाने के लिए, किसी को सहज पारस्परिक संबंधों की आवश्यकता होती है जिसके लिए पर्याप्त भाषा और संचार कौशल की आवश्यकता होती है। अक्सर बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चे समूहों के साथ स्वीकार्य तरीके से सार्थक रूप से बातचीत करने में विफल रहते हैं। यह देखा गया है कि बौद्धिक अक्षमता वाले अधिकांश बच्चों की शब्दावली सीमित होती है और उन्हें वाक्यों में बोलने, निर्देशों को समझने और उनका पालन करने और घटनाओं को क्रम से बताने में कठिनाई होती है। माध्यमिक स्तर पर इन कौशलों को विकसित करने के लिए विभिन्न गतिविधियों की योजना बनाई जानी चाहिए।

इस अवस्था में सामाजिक स्थिति के दौरान विपरीत लिंग के व्यक्तियों के प्रति स्वीकार्य व्यवहार को सूक्ष्म और लगातार सिखाया जाना चाहिए। शर्मिंदगी से बचने के लिए क्या करें और क्या न करें स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट किया जाना चाहिए।

- आम तौर पर विकासशील साथियों के साथ सीखने और मेलजोल करने के लिए छात्रों को लगातार अवसर प्रदान करें।
- समूह गतिविधियों और क्लबों में छात्र को शामिल करें।
- दैनिक सामाजिक कौशल निर्देश प्रदान करें। .
- सामाजिक कौशलों को प्रत्यक्ष रूप से सिखाएं, जैसे कि टर्न–टेकिंग, सामाजिक दूरी, पारस्परिक बातचीत आदि।
- सामाजिक कौशल को गैर–मौखिक और मौखिक घटकों में विभाजित करें।
- सामाजिक आदान–प्रदान के पीछे के नियमोंध्तकों की व्याख्या करता है।
- भूमिका निभाने वाली स्थितियों में कौशल का अभ्यास करने के लिए लगातार अवसर प्रदान करें।
- कई अलग–अलग वातावरण में कौशल का अभ्यास करने के अवसर प्रदान करें।
- छात्रों के साथ बातचीत के लिए एक मॉडल के रूप में कार्य करें।
- प्रत्येक छात्र के प्रयासों को महत्व दें और स्वीकार करें।
- छात्रों को एक दूसरे के साथ सीधे बातचीत करने के कई अवसर प्रदान करें।
- सामाजिक रूप से मध्यस्थता वाले पुनर्बलकों के छोटे बच्चे के प्रदर्शनों की सूची का विस्तार करने के लिए कार्य करें।
- छात्रों से यह कल्पना करने के लिए कहें कि उनका व्यवहार दूसरों को कैसे प्रभावित कर सकता है।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY SPECIAL EDUCATION

➢ विशेष रूप से टिप्पणी करें और बताएं कि छात्र क्या कर रहा है।
➢ मॉडल सहिष्णुता और स्वीकृति।

'सामाजिक कहानियों का उपयोग ऑटिज्म या बौद्धिक अक्षमता जैसे विकलांग बच्चों को सामाजिक कौशल सिखाने के लिए किया जा सकता है। एक स्थिति, जो विद्यार्थी के लिए कठिन या भ्रमित करने वाली हो सकती है, का संक्षिप्त वर्णन किया गया है। कहानी सामाजिक संकेतों, घटनाओं और प्रतिक्रियाओं पर प्रकाश डालती है जो स्थिति में हो सकती हैं, कार्यों और प्रतिक्रियाओं की उम्मीद की जा सकती है, और क्यों। सामाजिक कहानियों का उपयोग छात्र की स्थिति की समझ को बढ़ाने, छात्र को अधिक सहज महसूस कराने और स्थिति के लिए उपयुक्त प्रतिक्रिया प्रदान करने के लिए किया जा सकता है। हम अनुशंसा करते हैं कि आप कहानियों में दृश्यों को भी शामिल करें।

Unit :- 4.2.Strategies for teaching functional academics. Methods of curricular content and process adaptations for students with intellectual disabilities (कार्यात्मक शिक्षाविदों को पढ़ाने की रणनीतियाँ। पाठ्यचर्या सामग्री और प्रक्रिया के तरीके बौद्धिक विकलांग छात्रों के लिए अनुकूलन) :– यह जानना महत्वपूर्ण है कि सीखने के माहौल में कठिनाइयों के बावजूद बौद्धिक अक्षमता वाले छात्र नई जानकारी प्राप्त करने और उपयोग करने की क्षमता रखते हैं और कर सकते हैं। ऐसी कई समावेशी शिक्षण रणनीतियाँ हैं जो सभी छात्रों को सीखने में सहायता कर सकती हैं लेकिन कुछ विशिष्ट रणनीतियाँ हैं जो एक ऐसे समूह को पढ़ाने में उपयोगी हैं जिसमें बौद्धिक अक्षमता वाले छात्र शामिल हैं:

क्या पढ़ाया जाएगा इसकी एक रूपरेखा प्रदान करें –.

➢ प्रमुख अवधारणाओं को उजागर करें और नए कौशल और अवधारणाओं का अभ्यास करने के अवसर प्रदान करें।
➢ पाठ्यक्रम शुरू होने से पहले पठन सूचियां उपलब्ध कराएं ताकि पठन जल्दी शुरू हो सके।
➢ पठन सूचियों को तैयार करने पर विचार करें और प्रमुख पाठों को मार्गदर्शन प्रदान करें।
➢ कई ग्रंथों के व्यापक अध्ययन के बजाय कुछ ग्रंथों के गहन अध्ययन पर काम पूरा करने की अनुमति दें।
➢ जब भी आप प्रक्रियाओं को शुरू कर रहे हों या निर्देश दे रहे हों, उदाहरण के लिए प्रयोगशाला या कंप्यूटिंग अभ्यास में, सुनिश्चित करें कि चरणों या अनुक्रमों को स्पष्ट किया गया है और मौखिक और लिखित रूप में समझाया गया है।
➢ छात्रों को सहायक तकनीक का उपयोग करने से लाभ हो सकता है।
➢ ब्लैकबोर्ड या ओवरहेड पर प्रस्तुत सामग्री को पूरक करने के लिए यथासंभव अधिक से अधिक मौखिक विवरणों का उपयोग करें।
➢ चार्ट, अवधारणा मानचित्र आरेखों को अव्यवस्थित रखें
➢ भेद करने और हाइलाइट करने के लिए जहां उपयुक्त हो वहां रंग का उपयोग करें।
➢ सुनिश्चित करें कि तकनीकी शब्दजाल की सूचियां जिन्हें छात्रों को सीखने की आवश्यकता होगी, पाठ्यक्रम के आरंभ में उपलब्ध हैं।

व्यक्तिगत बौद्धिक अक्षमता (आईडी, पूर्व में बौद्धिक अक्षमता) उसी शिक्षण रणनीतियों से लाभान्वित होती है जिसका उपयोग अन्य सीखने की चुनौतियों वाले लोगों को पढ़ाने के लिए किया जाता है। इसमें बौद्धिक अक्षमता, अटेंशन डेफिसिटध्हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर और ऑटिज्म शामिल हैं। ऐसी ही एक रणनीति है सीखने के कार्यों को छोटे–छोटे चरणों में तोड़ना। प्रत्येक सीखने का कार्य पेश किया जाता है, एक समय में एक कदम। यह छात्र को भारी पड़ने से बचाता है। एक बार जब छात्र एक कदम में महारत हासिल कर लेता है, तो अगला कदम पेश किया जाता है। यह एक प्रगतिशील, चरणबद्ध, सीखने का दृष्टिकोण है। यह कई सीखने के मॉडल की विशेषता है। अनुक्रमिक चरणों की संख्या और आकार में एकमात्र अंतर है।

दूसरी रणनीति शिक्षण दृष्टिकोण को संशोधित करना है। अधिकांश दर्शकों के लिए लंबे मौखिक निर्देश और अमूर्त व्याख्यान अप्रभावी शिक्षण विधियां हैं। अधिकांश लोग गतिज सीखने वाले होते हैं। इसका मतलब है कि वे ''हाथों पर'' कार्य करके सबसे अच्छा सीखते हैं। यह अमूर्त में प्रदर्शन करने के बारे में सोचने के विपरीत है। आईडी वाले छात्रों के लिए एक व्यावहारिक दृष्टिकोण विशेष रूप से सहायक होता है। जब जानकारी ठोस और देखी जाती है तो वे सबसे अच्छा सीखते हैं। उदाहरण के लिए, गुरुत्वाकर्षण की अवधारणा को सिखाने के कई तरीके हैं। शिक्षक अमूर्त में गुरुत्वाकर्षण के बारे में बात कर सकते

हैं। वे गुरुत्वाकर्षण खिंचाव के बल का वर्णन कर सकते हैं। दूसरा, शिक्षक यह प्रदर्शित कर सकते हैं कि किसी वस्तु को गिराकर गुरुत्वाकर्षण कैसे कार्य करता है। तीसरा, शिक्षक व्यायाम करके छात्रों से सीधे गुरुत्वाकर्षण का अनुभव करने के लिए कह सकते हैं। छात्रों को ऊपर (और बाद में नीचे), या एक कलम गिराने के लिए कहा जा सकता है। अधिकांश छात्र पहले गुरुत्वाकर्षण का अनुभव करने से अधिक जानकारी रखते हैं। गुरुत्वाकर्षण के इस ठोस अनुभव को अमूर्त व्याख्याओं की तुलना में समझना आसान है।

तीसरा, आईडी वाले लोग सीखने के माहौल में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं जहां दृश्य एड्स का उपयोग किया जाता है। इसमें चार्ट, चित्र और ग्राफ शामिल हो सकते हैं। ये दृश्य उपकरण छात्रों को यह समझने में मदद करने के लिए भी उपयोगी हैं कि उनसे कौन से व्यवहार की अपेक्षा की जाती है। उदाहरण के लिए, छात्रों की प्रगति का मानचित्रण करने के लिए चार्ट का उपयोग करना बहुत प्रभावी है। चार्ट का उपयोग उपयुक्त, कार्य पर व्यवहार के लिए सकारात्मक सुदृढीकरण प्रदान करने के साधन के रूप में भी किया जा सकता है।

चौथी शिक्षण रणनीति प्रत्यक्ष और तत्काल प्रतिक्रिया प्रदान करना है। आईडी वाले व्यक्तियों को तत्काल प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है। यह उन्हें अपने व्यवहार और शिक्षक की प्रतिक्रिया के बीच संबंध बनाने में सक्षम बनाता है। प्रतिक्रिया देने में देरी से कारण और प्रभाव के बीच संबंध बनाना मुश्किल हो जाता है। नतीजतन, सीखने का बिंदु छूट सकता है।

Unit :- 4.3 Management of challenging behaviours – functional assessment (antecedent, behaviour, consequence), intervention strategies – Token economy, Contingency contracting, Response cost, over correction, restitution and Differential Reinforcement and other behavioural strategies. (चुनौतीपूर्ण व्यवहारों का प्रबंधन – कार्यात्मक मूल्यांकन (पूर्ववर्ती, व्यवहार,परिणाम), हस्तक्षेप रणनीतियाँ – टोकन अर्थव्यवस्था, आकस्मिक अनुबंध, प्रतिक्रिया लागत, सुधार, बहाली और विभेदक सुदृढीकरण और अन्य से अधिक व्यवहार रणनीतियाँ।) :– एक कार्यात्मक व्यवहार मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जो एक विशिष्ट या लक्षित व्यवहार की पहचान करती है जो छात्र की शिक्षा में हस्तक्षेप करती है। मूल्यांकन विशेष व्यवहार को निर्दिष्ट करने, व्यवहार का समर्थन करने वाले कारकों की पहचान करने और व्यवहार के उद्देश्य को निर्धारित करने का प्रयास करता है। यह प्रक्रिया एक हस्तक्षेप योजना और कदमों की ओर ले जाती है जिसका परीक्षण छात्र की स्थिति में सुधार के लिए किया जा सकता है। कार्यात्मक व्यवहार मूल्यांकन एक शिक्षण योजना को सूचित करता है जो छात्र के लिए एक स्वीकार्य वैकल्पिक व्यवहार विकसित कर सकता है जो छात्र की शिक्षा में हस्तक्षेप नहीं करेगा।

एबीसी लागू व्यवहार विश्लेषण की छत्रछाया में आता है, जो कि बीएफ स्किनर के काम पर आधारित है, वह व्यक्ति अक्सर हमें व्यवहारवाद के पिता के रूप में संदर्भित करता है। संचालक कंडीशनिंग के अपने सिद्धांत में, स्किनर ने व्यवहार को आकार देने के लिए तीन–अवधि की आकस्मिकता विकसित कीः उत्तेजना, प्रतिक्रिया और सुदृढीकरण, एबीसी, जिसे चुनौतीपूर्ण या कठिन व्यवहार के मूल्यांकन के लिए एक सर्वोत्तम अभ्यास के रूप में स्वीकार किया गया है, लगभग संचालन कंडीशनिंग के समान है, सिवाय इसके कि यह शिक्षा के संदर्भ में रणनीति तैयार करता है। उद्दीपन के स्थान पर पूर्वगामी हैय प्रतिक्रिया के बजाय, एक व्यवहार होता हैः और पुनर्बलन के बजाय, एक परिणाम होता है।

पूर्ववृत्त–व्यवहार–परिणाम (ABC) व्यवहार के कार्य को समझने का एक महत्वपूर्ण घटक है। यदि कोई बच्चा अतिरिक्त व्यवहार समर्थन के लिए एबीए थेरेपी प्रीस्कूल कार्यक्रम में है, तो उनके शिक्षक और चिकित्सक अक्सर व्यवहार के इन घटकों की जांच करेंगे।

पूर्वपद (Antecedent) :– पूर्ववर्ती, जिसका अर्थ है ''कुछ जो पहले आता है,'' कुछ भी हो सकता है जो दिए गए व्यवहार को ट्रिगर करता है। वातावरण, सामाजिक सेटिंग, और यहां तक कि बातचीत के विशिष्ट विषय या शब्द विकल्प किसी को व्यवहार शुरू करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं, शायद इसे महसूस किए बिना भी। यदि आप एक सकारात्मक परिणाम को ट्रिगर करने का प्रयास कर रहे हैं, तो आप इसके बजाय कुछ वांछित व्यवहारों को बढ़ावा देने के लिए स्थिति में पूर्ववृत्त में हेरफेर कर सकते हैं। हालांकि, यदि कोई पूर्ववृत्त अपरिवर्तनीय या अपरिहार्य है, जैसे मौसम का मिजाज या आवश्यक दैनिक कार्य, तो एक अलग दृष्टिकोण की आवश्यकता हो सकती है।

व्यवहार (Behavior) :– व्यवहारों को ''सकारात्मक,'' ''समस्याग्रस्त,'' या ''महत्वपूर्ण'' के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। सकारात्मक व्यवहार वे हैं जो व्यक्ति और उनके आसपास के लोगों को लाभान्वित करते हैं। समस्याग्रस्त व्यवहार विपरीत–कारण वाली समस्याएं करते हैं जो प्रतिउत्पादकता या व्याकुलता से लेकर शारीरिक खतरे तक हो सकती हैं। एक महत्वपूर्ण व्यवहार वह है जो एक अलग समस्याग्रस्त व्यवहार में योगदान देता है। उदाहरण के लिए, ऐसी पार्टी में जाना जहां शराब परोसी जाती है, एक महत्वपूर्ण व्यवहार हो सकता है यदि यह अधिक शराब पीने या नशे में गाड़ी चलाने जैसे समस्याग्रस्त व्यवहार की ओर ले जाता है।

परिणाम (Consequence) :– शब्द ''परिणाम'' में अक्सर एक नकारात्मक अर्थ होता है, लेकिन परिणाम – या वैकल्पिक रूप से, परिणाम – सकारात्मक या नकारात्मक हो सकते हैं। सकारात्मक व्यवहार अक्सर सकारात्मक परिणाम देते हैं, जबकि समस्याग्रस्त व्यवहार नकारात्मक परिणाम दे सकते हैं। एबीसी मॉडल के तीसरे घटक के रूप में, परिणाम आवश्यक है क्योंकि यह किसी व्यक्ति के व्यवहार को जारी रखने या बंद करने के निर्णय लेने को प्रभावित करता है।

इसका परिणाम बच्चों के लिए विशेष रूप से प्रभावशाली होता है, और अक्सर अनजाने में इसका दुरुपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई बच्चा किसी समस्यात्मक व्यवहार में संलग्न है, जैसे कि रोना या टैंट्रम फेंकना, तो माता–पिता खिलौना या दावत देकर उन्हें शांत करने का प्रयास कर सकते हैं। इस क्रिया का उद्देश्य एक समस्यात्मक व्यवहार को रोकना है, लेकिन यह वास्तव में इसे मजबूत करता है – बच्चा सीख सकता है कि यदि वे एक निश्चित तरीके से या लंबे समय तक दुर्व्यवहार करते हैं, तो उनके माता–पिता उन्हें वह देंगे जो वे चाहते हैं। इसके लिए और कई अन्य कारणों से, सभी के लिए परिणामों के प्रभाव को समझना महत्वपूर्ण है।

एबीसी मॉडल का उपयोग क्यों करें?

बहुत से लोग एबीसी मॉडल का उपयोग करते हैं क्योंकि यह अपेक्षाकृत सरल है और उन व्यवहारों में अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है जो अन्यथा भ्रमित हो सकते हैं। आप अपने व्यवहार का मूल्यांकन करने और बदलाव का प्रयास करने के लिए इसका उपयोग स्वयं कर सकते हैं। यह व्यवहार के कार्यात्मक मूल्यांकन के लिए भी आवश्यक हैय दूसरे शब्दों में, यह समस्यात्मक व्यवहार क्यों हो रहा है और इसे कैसे ठीक या परिवर्तित किया जाए, इस बारे में एक परिकल्पना बनाने में पेशेवरों की सहायता कर सकता है।

एबीसी मॉडल भी व्यवहार अवलोकन के सबसे सरल तरीकों में से एक है। यह किसी ऐसे व्यक्ति को अनुमति देता है जो व्यवहार को आसानी से और स्पष्ट रूप से रिकॉर्ड करने के लिए अवलोकन कर रहा है, जो आसानी से उन लोगों को सूचित किया जा सकता है जो मौजूद नहीं हैं। इसके अलावा, यह व्यक्ति के पर्यावरण में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

टोकन अर्थव्यवस्था (Token economy) :– शिक्षार्थियों के साथ दुर्व्यवहार और अनुशासनात्मक समस्याएं प्रत्येक शिक्षक के शिक्षण के अनुभव का एक असंगत और कठिन हिस्सा हैं । कक्षा में विघटनकारी व्यवहार को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए शिक्षकों को कौशल और रणनीतियों के साथ प्रदान करना आवश्यक है क्योंकि कक्षा विशेष रूप से ऐसे व्यवहारों की आवृत्ति और गंभीरता के लिए विघटनकारी व्यवहार की घटना के लिए एक सहायक कारक हो सकती है। ओ'लियरी एंड ड्राबमैन (1971) ने माना कि कक्षा में विघटनकारी भार के प्रबंधन का एक कम संघर्षपूर्ण, आसान और अधिक सकारात्मक साधन सांकेतिक अर्थव्यवस्था है।

टोकन प्रणाली एक ऐसी रणनीति है जहां छात्र को एक निर्दिष्ट शैक्षणिक कार्य पूरा करने पर टोकन प्राप्त होता है, आप अनुचित व्यवहार का उपयोग कर रहे हैं। जो कुछ भी दृश्यमान और गणनीय है उसे टोकन के रूप में उपयोग किया जा सकता है। टोकन ही। का कोई मूल्य नहीं है, लेकिन एक विशिष्ट संख्या में टोकन अर्जित किए जाने के बाद बैकअप रीइन्फोर्सर के लिए कारोबार किया जाता है, बैकअप रीइन्फोर्सर मैकेनिंगफुल आइटम, गतिविधियां, या विशेषाधिकार हैं ।

टोकन सिस्टम उन चुनौतीपूर्ण व्यवहारों को संबोधित कर सकते हैं जिन्हें मांगों से बचकर बनाए रखा जाता है। एक निर्दिष्ट कार्य पूरा करने पर एक टोकन प्रदान किया जाता है। छात्र के आधार पर कार्य एक संपूर्ण कार्यपत्रक या कुछ प्रश्न हो सकता है। एक टोकन प्रणाली का उपयोग करना छात्र को मुश्किल लगने वाली किसी चीज के लिए पुनर्बलन प्रदान करता है।

टोकन सिस्टम चुनौतीपूर्ण हेवियर्स को भी संबोधित कर सकते हैं जिन्हें ध्यान से बनाए रखा जाता है, छात्र को टोकन प्रदान किए जाने पर ध्यान दिया जाता है और जब बकअप गतिविधि के लिए टोकन का आदान–प्रदान किया जाता है। टोकन

Notes For Assum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

सिस्टम को एक सुदृढीकरण प्रणाली के हिस्से के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। विशिष्ट छात्र व्यवहार, जैसे कि एक प्रतिस्थापन हेवियर, उन्होंने उन व्यवहारों को देखने पर एक टोकन प्रदान करके समर्थन और प्रबलित किया।

आकस्मिक अनुबंध (Contingency contracting) :– आकस्मिक शब्द का अर्थ है, जब कोई घटना या स्थिति आकस्मिक होती है, अर्थात यह किसी अन्य घटना या तथ्य पर निर्भर करती है।उदाहरण के लिए, पैसा कमाना एक अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी खोजने पर निर्भर है। अब, 'आकस्मिक अनुबंध' का अर्थ है कि उस अनुबंध की प्रवर्तनीयता (एनफोर्सेबिलिटी), सीधे तौर पर किसी घटना के होने या न होने पर निर्भर करती है।

भारतीय अनुबंध अधिनियम, 1872 की धारा 31 'आकस्मिक अनुबंध' शब्द को निम्नानुसार परिभाषित करती है: 'एक आकस्मिक अनुबंध कुछ करने या न करने के लिए एक अनुबंध है, अगर इस तरह के अनुबंध के लिए कोई घटना संपार्श्विक (कोलैटरल) होती है या नहीं होती है'।

सरल शब्दों में, आकस्मिक अनुबंध, वे होते हैं जहां वचनदाता (प्रोमिसर) अपने दायित्व का पालन तभी करता है जब कुछ शर्तें पूरी होती हैं। बीमा, क्षतिपूर्ति (इन्डेम्निटी) और गारंटी के अनुबंध आकस्मिक अनुबंधों के कुछ उदाहरण हैं।

उदाहरणः– ।, B को रु. 20,000 भुगतान करने का अनुबंध करता है यदि ठ का घर जल जाता है। यह एक आकस्मिकता है।

जबकि लक्ष्य व्यवहार अनुबंध का बड़ा हिस्सा है, कई अन्य घटक हैं जो महत्वपूर्ण हैं:

अनुबंध की शर्तें:– छात्र के साथ, यह तय करें कि अनुबंध किन परिस्थितियों में प्रभावी होगा (समय, कक्षाएं और गतिविधियाँ), उदाहरण के लिए, गणित की कक्षा में खेल का मैदान। अनुबंध पूर्णता

मानदंड :– मानदंड पूरा करने के लिए प्रदर्शन के स्तर का वर्णन करते हैं। क्या व्यवहार को केवल एक बार हासिल करने की आवश्यकता है या इसे समय की अवधि के लिए बनाए रखने की आवश्यकता होगी ।

रीइन्फोर्सर्स :– कॉन्ट्रैक्ट शॉक्ड में एक रीइन्फोर्वर या इनाम शामिल होता है जो छात्र अनुबंध पूरा होने पर करेगा। यह कारण के भीतर, छात्र घरों को समेटना चाहिए। खाद्य पदार्थ, छोटे खिलौने, खाली समय, और ''कोई गृहकार्य नहीं'' पास पुनर्भरणकर्ताओं के उदाहरण हैं जो प्रभावी हो सकते हैं। अनुबंध पूरा होने के तुरंत बाद सकारात्मक परिणाम वितरित किए जाने चाहिए।

समीक्षा और पुनः बातचीत : उन तिथियों को शामिल करें जिन पर छात्र के साथ प्रगति की समीक्षा की जाएगी। आप छात्र को ट्रैक से बाहर रखने और प्रगति का मूल्यांकन करने में मदद करने के लिए साप्ताहिक अनुबंध की समीक्षा करने का विकल्प चुन सकते हैं। यदि आप कुछ समीक्षाओं के बाद कोई प्रगति नहीं देखते हैं, तो मुझे अनुबंध पर फिर से बातचीत करने की आवश्यकता हो सकती है। लक्ष्य अनुचित हो सकते हैं और प्रबलक अनुपयुक्त हो सकते हैं। अनुबंध को पूरा करने के लिए एक लक्ष्य तिथि बताना भी उचित है।

भाषा और हस्ताक्षर : अनुबंध सरल, स्पष्ट भाषा में लिखा जाना चाहिए जिसे छात्र समझ सके। उदाहरण के लिए, ''रीइन्फोर्सर'' के बजाय ''इनाम'' का उपयोग किया जाना चाहिए। यह अनुबंध को छात्र के लिए अधिक प्रासंगिक बना देगा। आप और छात्र दोनों को अनुबंध पर हस्ताक्षर और तारीख करनी चाहिए और यदि माता–पिता के सहयोग से काम कर रहे हैं, तो उन्हें भी इस पर हस्ताक्षर करना चाहिए। जब यह छात्र की गोपनीयता का उल्लंघन नहीं करेगा, तो यह भी उपयुक्त हो सकता है कि किसी बाहरी पार्टी या गवाह के अनुबंध पर हस्ताक्षर करें, जैसे कि छात्र का मित्र या कोई अन्य वयस्क जिस पर छात्र भरोसा करता है।

प्रतिक्रिया लागत (Response cost) :– प्रतिक्रिया लागत वह शब्द है जिसका उपयोग अवांछित या विघटनकारी व्यवहार के लिए सुदृ ढीकरण को हटाने के लिए किया जाता है। एप्लाइड बिहेवियर एनालिसिस के संदर्भ में, यह नकारात्मक सजा का एक रूप है। कुछ हटाकर (एक पसंदीदा वस्तु, सुदृढीकरण तक पहुंच) आप इस संभावना को कम कर देते हैं कि लक्ष्य हेवियर फिर से दिखाई देगा। इसका उपयोग अक्सर एक सांकेतिक अर्थव्यवस्था के साथ किया जाता है और इसका सबसे अच्छा उपयोग तब किया जाता है जब कोई छात्र इसके निहितार्थ को समझता है।

EXAM TRICKY
Notes For Pyssum
SPECIAL EDUCATION

जब प्रतिक्रिया लागत लगाई जाती है, तो अनुचित व्यवहार के लिए एक टोकन हो सकता हैः छात्र को यह जानने की जरूरत है कि वह लक्षित व्यवहार के लिए टोकन खो सकता है। ''क्या आप अच्छी तरह से बैठे हैं जॉन? गुड जॉब'' या ''नहीं, जॉन। हम टेबल के नीचे रेंगते नहीं हैं, मुझे बैठने के लिए टोकन लेना होगा।''

आपको प्रतिक्रिया लागत की प्रभावशीलता का लगातार मूल्यांकन करने की आवश्यकता है, क्या यह वास्तव में अनुचित व्यवहारों की संख्या को कम करता है? या यह सिर्फ अनुचित व्यवहार को भूमिगत कर देता है, या दुर्व्यवहार को बदल देता है? यदि ऐसा होता है, तो आपको प्रतिक्रिया लागत को बंद करने और विभेदित सुदृढीकरण का प्रयास करने की आवश्यकता है।

एक प्रतिक्रिया लागत कार्यक्रम के लाभ (Pros of a Response Cost Program) :–

- संभावना है कि आप उन व्यवहारों में से बहुत कम देखेंगे। उसी समय, आप वांछित व्यवहार को सुदृढ़ कर रहे हैं।

- प्रतिक्रिया लागत को प्रशासित करना आसान है,

- जब छात्र का ऐसा व्यवहार होता है जो उसके साथियों को सीखने से रोकता है, खुद को या दूसरों के लिए खतरा पैदा करता है प्रतिक्रिया लागत वास्तव में कोई प्रतिकूल लागू किए बिना एक त्वरित सजा प्रदान कर सकती है ।

एक प्रतिक्रिया लागत कार्यक्रम के विपक्ष

- यदि सकारात्मक सुदृढीकरण का अनुपात कम से कम 3 से 1 नहीं है, तो आपके छात्र कभी भी बाहर नहीं निकल सकते हैं। यह केवल दंडात्मक होगा, और वास्तव में कभी पकड़ में नहीं आएगा।

- अगर प्रतिक्रिया लागत को लगातार गैर–भावनात्मक तरीके से लागू नहीं किया जाता है, तो यह स्रोत या आरोप बन जाएगा और छात्रों और कर्मचारियों या छात्रों और शिक्षक के बीच भेदभाव होगा ।

- यदि यह सजा पर निर्भरता बनाता है, तो यह प्रतिकूल होगा। अवांछित व्यवहार को बदलने के लिए प्रतिस्थापन हेवियर को फिर से लागू करना अभी भी सबसे प्रभावी तरीका है।

अधिक सुधार(Over correction) :– अतिसुधार एक व्यवहारिक हस्तक्षेप है जिसे अनुप्रयुक्त व्यवहार विश्लेषकों द्वारा विकसित किया गया है और यह इस पर आधारित है कि ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार वाले व्यक्तियों के समस्या व्यवहार सामाजिक कारकों द्वारा बनाए रखा जाता है (जैसे, अन्य लोगों का ध्यान, पलायन, या कम–वरीयता वाली शैक्षणिक गतिविधियों से बचना जैसे कि गणित के रूप में) या गैर–सामाजिक कारक (जैसे, संवेदी सुदृढीकरण)। अतिसुधार एक हस्तक्षेप प्रक्रिया को दिया गया नाम है जिसमें दो घटक (पुनर्स्थापन या सकारात्मक अभ्यास) शामिल हैं।

अतिसुधार एक बेहद शक्तिशाली हस्तक्षेप है क्योंकि यह थोड़ा अतिरिक्त प्रतिकूलता जोड़ता है। समस्या व्यवहार के परिणाम के रूप में – अनुचित व्यवहार के कारण हुए नुकसान को ठीक करने के लिए छात्र को एक प्रयासपूर्ण व्यवहार पूरा करने की आवश्यकता होगी। अति करेक्शन में अतिरिक्त काम भी शामिल हो सकता है, यह बहुत दंडनीय हो सकता है। दंड समस्या व्यवहार की भविष्य की संभावना को कम करेगा। यह काम करने के कुछ अलग तरीके हैं।

पुनर्स्थापनात्मक अतिसुधार (Restitutional Overcorrection) :– एक समस्या व्यवहार के बाद, छात्र को पर्यावरण को उसकी पिछली स्थिति में वापस करना चाहिए और फिर कुछ को। आप एक वर्कशीट को चीरते हैं, आपको सभी प्रतियों का रीमेक बनाने की जरूरत है और सभी टेबलों को साफ करें। यदि आप टैंट्रम में बुकशेल्फ पर दस्तक देते हैं, तो आपको बुक्स को साफ करने और ब्रेक क्षेत्र को साफ करने की आवश्यकता है। इसलिए छात्र को पर्यावरण को जोड़ना चाहिए और इसे बेहतर बनाना चाहिए।

Unit :- 4.4 Group Teaching at various levels – pre-primary,primary levels, development and use of TLM and ICT for ID (विभिन्न स्तरों पर समूह शिक्षण – पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक स्तर, विकास और उपयोग आईडी के लिए टीएलएम

और आईसीटी) :– हालांकि यह महत्वपूर्ण है कि बच्चे विभिन्न प्रकार के कक्षा संगठनात्मक ढांचे का अनुभव करें, सहयोगात्मक रूप से काम करने से सीखने के अवसर मिलते हैं जिनके विशेष फायदे हैं। दूसरों के विचारों को सुनकर और उन पर प्रतिक्रिया करने का अवसर मिलने से बच्चे उत्तेजित होते हैं। सहयोगात्मक कार्य बच्चों को व्यक्तिगत धारणाओं से अवगत कराता है कि दूसरों को समस्या या स्थिति हो सकती है। ये समूह के अन्य सदस्यों के विभिन्न व्यक्तित्वों और विशेष क्षमताओं को प्रतिबिंबित करेंगे और एक इंटरैक्टिव आदान–प्रदान करेंगे जो व्यक्तिगत बच्चों की समझ को व्यापक और गहरा करने में मदद करेगा। इसके अलावा, सहयोगात्मक सीखने का अनुभव बच्चे के सामाजिक और व्यक्तिगत विकास को सुगम बनाता है, और दूसरों के साथ काम करने का अभ्यास बच्चों को सहकारी प्रयासों से प्राप्त होने वाले लाभों के बारे में शुरुआती समझ में लाता है।

शिक्षा आमतौर पर 3 वर्ष की आयु से प्राथमिक विद्यालय की शुरुआत तक के बच्चों के लिए डिजाइन की गई है। पूर्व–प्राथमिक शिक्षा के शैक्षिक गुणों को साथियों और शिक्षकों के साथ बातचीत की विशेषता है, जिसके माध्यम से बच्चे भाषा और सामाजिक कौशल के उपयोग में सुधार करते हैं, और तार्किक और तर्क कौशल विकसित करना शुरू करते हैं। बच्चों को वर्णमाला और गणितीय अवधारणाओं से भी परिचित कराया जाता है, और उन्हें अपने आसपास की दुनिया और पर्यावरण का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। पर्यवेक्षित सकल मोटर गतिविधियों (यानी खेल और अन्य गतिविधियों के माध्यम से शारीरिक व्यायाम) और खेल–आधारित गतिविधियों का उपयोग साथियों के साथ सामाजिक बातचीत को बढ़ावा देने और कौशल, स्वायत्तता और स्कूल की तैयारी विकसित करने के लिए सीखने के अवसरों के रूप में किया जा सकता है।

पूर्व–प्राथमिक वातावरण में 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चे (पूर्वस्कूली और किंडरगार्टन) शामिल हैं। तीन साल का चक्र शिक्षा का एक अनिवार्य हिस्सा है। बच्चे 3 साल तक एक ही शिक्षक और बच्चों के समूह के साथ एक ही कमरे में रहते हैं। तीन साल के चक्र के दौरान, बच्चे विभिन्न भूमिकाओं, जिम्मेदारियों और दृष्टिकोणों का अनुभव करते हैं। छोटे बच्चे बड़े बच्चों को देखकर और उनके साथ बातचीत करके सीखते हैं। बड़े बच्चे अपने छोटे साथियों को इसे सिखाकर अवधारणाओं की सच्ची समझ हासिल करते हैं। प्रत्येक वर्ष, बच्चे अपने तीसरे वर्ष (किंडरगार्टन) तक आगे बढ़ते हुए अधिक स्वतंत्र हो जाते हैं, जहां उनके पास सामुदायिक नेता और रोल मॉडल बनने का अनूठा अवसर होता है।

मिश्रित आयु समूह के लाभः–

- शिक्षकों, माता–पिता और बच्चों के बीच मजबूत संबंध बनाने की अनुमति देता है। बच्चों के नैतिक विकास का समर्थन करता है क्योंकि वे सीखते हैं और दूसरों का सम्मान करने का अभ्यास करते हैं,
- दूसरों की जरूरतों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करते हैं, और एक ऐसे समुदाय का निर्माण करते हैं जो सीखना पसंद करते हैं।

ईसीसीई केंद्र में ऐसे शिक्षक हो सकते हैं जो अपनी कक्षाओं में सभी शिक्षार्थियों की जरूरतों को पूरा करने के तरीकों के साथ संघर्ष करते हैं। वैकल्पिक रूप से कुछ बच्चे ऐसे भी हो सकते हैं जो सीखने में संघर्ष करते हैं, अन्य जो अपने विकासात्मक कार्यों पर अच्छा प्रदर्शन करते हैं, और बाकी बीच में कहीं फिट होते हैं। प्रत्येक बच्चे की सीखने की अपनी गति होती है। बच्चों की इन श्रेणियों में से प्रत्येक के भीतर, व्यक्ति भी विभिन्न तरीकों से सीखते हैं और उनकी अलग–अलग रुचियां होती हैं। हालांकि इस्तेमाल किया जाने वाला पाठ्यक्रम अक्सर 'एक आकार सभी फिट बैठता है' दृष्टिकोण से प्रेरित होता है और उम्मीद है कि सभी बच्चे शैक्षणिक वर्ष के अंत तक मानकों को प्राप्त करेंगे। इस स्थिति के जवाब में अक्सर ईसीसीई शिक्षक और देखभाल करने वाले अपने शिक्षार्थियों की बदलती जरूरतों को पूरा करने के लिए 'विभेदन' की अवधारणा का उपयोग करेंगे। एक ईसीसीई शिक्षक अपने सबसे बुनियादी स्तर पर, भेदभाव में कक्षा में शिक्षार्थियों के बीच भिन्नता का जवाब देने के लिए ईसीसीई शिक्षक/देखभालकर्ता के प्रयास शामिल हैं।

(1) सामग्री–बच्चे को क्या सीखने की जरूरत है या बच्चे को जानकारी तक कैसे पहुंचना है, के आधार पर भेदभाव के लिए संपर्क कर सकते हैं ।

(2) प्रक्रिया–गतिविधियाँ जिसमें बच्चा सामग्री को समझने या उसमें महारत हासिल करने के लिए संलग्न होता है।

(3) उत्पाद– चरम परियोजनाएं जो बच्चे को किसी विषय में सीखी गई बातों का पूर्वाभ्यास करने, लागू करने और विस्तार करने में सक्षम बनाती हैं।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

(4) सीखने का माहौल– जिस तरह से कक्षाध्ईसीसीई केंद्र काम करता है और महसूस करता है।

इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि बच्चे स्कूल में अधिक सफल होते हैं और यदि उन्हें ऐसे तरीके से पढ़ाया जाता है जो उनकी तैयारी के स्तर, रुचियों और सीखने के प्रोफाइल के लिए उत्तरदायी होते हैं तो यह अधिक संतोषजनक लगता है। यह बच्चों के लिए कभी–कभी समान–तैयार साथियों के साथ काम करने में मददगार हो सकता है, कभी–कभी मिश्रित–तैयार समूहों के साथ, कभी–कभी समान रुचियों वाले बच्चों के साथ, कभी–कभी अलग–अलग रुचियों वाले बच्चों के साथ, कभी–कभी साथियों के साथ जो सीखते हैं, कभी–कभी बेतरतीब ढंग से, और अक्सर पूरी कक्षा के साथ।

उपरोक्त संदर्भ में, बहु–आयु समूहीकरण ''एक वर्ग समूह को संदर्भित करता है जिसमें प्रभावी निर्देश प्रदान करने के उद्देश्य से विभिन्न आयु और पहचाने गए आयु स्तरों के छात्रों को एक ही कक्षा में एक साथ समूहीकृत किया जाता है''। बहु–आयु का वातावरण जानबूझकर बच्चों के लाभ के लिए बनाया गया है, न कि आर्थिक जरूरतों या घटते नामांकन के कारण। इरादा विभिन्न उम्र और क्षमताओं के बच्चों को एक विशेष ग्रेड स्तर के लिए निर्दिष्ट उद्देश्यों के बजाय अपनी व्यक्तिगत गति से प्रगति करने की अनुमति देना है।

अनुसंधान से पता चलता है कि बहु–आयु समूह कक्षा में छोटे और बड़े दोनों छात्रों को लाभान्वित करते हैं। प्राथमिक कक्षाओं में, बच्चों के लिए समूहबद्ध तालिकाओं के आसपास बैठना मानक अभ्यास है – आमतौर पर प्रत्येक समूह में चार से छह बच्चे होते हैं। डॉ. लिलियन कात्ज के अनुसार, ''मिश्रित–आयु समूह परिवार और पड़ोस के समूहों से मिलता–जुलता है, जिसने पूरे इतिहास में अनौपचारिक रूप से बच्चों के समाजीकरण और शिक्षा को प्रदान किया है। प्रारंभिक बचपन की सेटिंग में मिश्रित–आयु समूह का इरादा समूह की विविधता को बढ़ाना है। ताकि बच्चों के अनुभव, ज्ञान और क्षमताओं में अंतर का फायदा उठाया जा सके।'' इसके अलावा, बच्चे एक–दूसरे से और बड़े बच्चों से सीखते हैं– जिससे सहकारी सीखने के कौशल में सुविधा होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में बहु–आयु समूह अक्सर समुदायों की जरूरतों के लिए एक व्यावहारिक प्रतिक्रिया होती है, जहां एक गांव या बस्ती के लिए एक आंगनवाड़ी/ईसीसीई केंद्र स्थापित करना व्यावहारिक होता है। विभिन्न कारण जैसे समान आयु के अपर्याप्त छात्र, सीमित भौतिक या मानव संसाधन वाले स्थान ईसीसीई केंद्रों में एक म्यूटी–आयु समूह होने के लिए व्यवहार्य लग सकते हैं।

सहकारी शिक्षा के लाभों को संक्षेप में निम्नानुसार किया जा सकता है :–

1. यह सभी छात्रों की उपलब्धि बढ़ाने में मदद करता है ।

2. यह छात्रों के बीच सकारात्मक संबंध बनाने में मदद करता है, इस प्रकार एक सीखने वाले समुदाय का निर्माण करता है जिसमें विविधता को महत्व दिया जाता है ।

3. यह देता है छात्रों को स्वस्थ सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और संज्ञानात्मक विकास के लिए आवश्यक अनुभव ।

प्राथमिक विद्यालय स्तर पर छात्र काफी प्रभावशाली होते हैं और उनके लिए समूह में काम करने वाली बहुत मूल्यवान क्षमताएं विकसित करने का इससे बेहतर समय नहीं हो सकता है। प्राथमिक विद्यालय स्तर पर वे इतने परिपक्व होते हैं कि उन्हें यह समझ हो जाती है कि समूह कार्य के लिए क्या आवश्यक है। किए गए कई अध्ययन बचपन के विकास के आसपास केंद्रीकृत थे। जो छात्र प्राथमिक विद्यालय स्तर से समूहों में सफलतापूर्वक काम कर सकते हैं, वे आमतौर पर उच्च स्तर के शिक्षण संस्थानों में प्रवेश करने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होते हैं। उन्होंने साथियों और वयस्कों के साथ सहजता से संबंध बनाना सीखा होगा, जैसे कि शिक्षक या अन्य प्राधिकरण के आंकड़े, उन्होंने आत्म–अभिव्यक्ति और आत्म–व्याख्या के मूल्य को सीखा होगा, सक्रिय रूप से दूसरों के विचारों को सुनना और उनका सम्मान करना होगा। इन छात्रों को एहसास होता है कि व्यक्तियों के रूप में हमारे पास अलग–अलग पृष्ठभूमि, अनुभव और परंपराएं हैं और इस तरह एक ही प्रोबीम के लिए अलग–अलग दृष्टिकोण हो सकते हैं। ये छात्र सहयोगात्मक रूप से काम करने की आवश्यकता और प्रतिस्पर्धात्मक रूप से काम करने की आवश्यकता के बीच अंतर करने में भी सक्षम होंगे और ऐसा करने से संबंधित दृष्टिकोणों को सर्वोत्तम रूप से लागू करने के बारे में पता चल जाएगा।

सहयोगात्मक अधिगम की सफलता में शिक्षक और छात्र दोनों ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षकों से यह अपेक्षा नहीं की जाती है कि वे केवल कार्य सौंपें और जब तक विद्यार्थी स्वयं कार्य करें, तब तक वे बैठ जाएँ। पूरी प्रक्रिया में शिक्षकों को सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। उन्हें स्पष्ट रूप से संरचित कार्यों के साथ असाइनमेंट की योजना बनानी चाहिए जो

सहयोगी बातचीत को बढ़ावा देगी, अन्योन्याश्रयता को बढ़ावा देगी और छात्रों के बीच संज्ञानात्मक सोच को प्रोत्साहित करेगी। शिक्षक को चल रही प्रतिक्रिया प्रदान करने वाली प्रक्रिया की निगरानी करनी चाहिए और यदि कोई विरोध उत्पन्न होता है तो उसे आसानी से हल करने में सक्षम होना चाहिए। शिक्षकों को अपने छात्रों को सक्रिय रूप से यह जानने में सक्षम होना चाहिए कि उनके समर्थन की आवश्यकता कब है और इसे धीरे–धीरे वापस लेना चाहिए।

छात्रों को समूहों में अपने उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करने के लिए समूह कार्य के लाभों की सराहना करनी चाहिए। उन्हें वांछित उद्देश्य को सफलतापूर्वक प्राप्त करने के लिए उप–कार्य की आवश्यकता की स्पष्ट समझ होनी चाहिए। उन्हें सक्रिय रूप से और चिंतनशील रूप से एक–दूसरे को सुनने और रचनात्मकता और निष्पक्षता का उपयोग सकारात्मक रूप से एक साथ काम करने में सक्षम होना चाहिए। ऐसा करने से वे दूसरों के साथ सकारात्मक कार्य दृष्टिकोण को बढ़ावा देना सीखेंगे, जिससे उनके पारस्परिक कौशल में सुधार होगा क्योंकि वे काम की दुनिया की तैयारी करते हैं।

बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के लिए शिक्षण सामग्री (TEACHING LEARNING MATERIALS FOR CHILDREN WITH INTELLECTUAL DISABILITY) :–

- बौद्धिक दुर्बलता वाले व्यक्ति उसी शिक्षण से लाभान्वित होते हैं जो बौद्धिक अक्षमताओं, अटेंशन डेफिसिट अतिसक्रियता विकार(ि्भ्क्), और ऑटिज्म वाले व्यक्तियों को सिखाने के लिए उपयोग की जाने वाली रणनीतियाँ हैं।
- कार्यों को छोटे–छोटे चरणों में तोड़ना और उस कार्य का परिचय देना सहायक होता है जो व्यक्ति पर भारी पड़ता है। एक बार जब छात्र एक कदम से बचने के लिए एक बार में महारत हासिल कर लेता है, तो अगला पेश किया जाता है।
- वे ऐसे वातावरण में बेहतर प्रदर्शन करते हैं जहां चार्ट, चित्र और ग्राफ जैसे दृश्य सहायकों का यथासंभव उपयोग किया जाता है। ऐसे दृश्य घटक विद्यार्थियों को यह समझने में मदद करने के लिए उपयोगी होते हैं कि उनसे क्या अपेक्षित है। उदाहरण के लिए, छात्रों की प्रगति को मैप करने के लिए चार्ट का उपयोग करना बहुत प्रभावी है।
- चार्ट का उपयोग उचित, कार्य पर व्यवहार के लिए सकारात्मक सुदृढीकरण प्रदान करने के साधन के रूप में भी किया जा सकता है।
- अधिकांश लोग गतिज सीखने वाले होते हैं जो व्यावहारिक कार्यों को पूरा करके और परिणामों की सराहना करके सीखते हैं। यह मानसिक रूप से मंद छात्रों के लिए विशेष रूप से सच है ।
- जो छात्र अमूर्त व्याख्यानों को बहुत आसानी से समझ नहीं पाते हैं।
- उदाहरण के लिए, एक शिक्षिका जो गुरुत्वाकर्षण की अवधारणा को पढ़ाना चाहती है उसके पास कई विकल्प हैंः वह छात्रों को बता सकती है कि गुरुत्वाकर्षण के रूप में ज्ञात बल द्वारा चीजें पृथ्वी की ओर खींची जाती हैं। वह छात्रों को दिखा सकती है कि किसी चीज को गिराकर गुरुत्वाकर्षण कैसे काम करता हैय या वह छात्रों को अवधारणा पढ़ाते समय कुछ छोड़ने का निर्देश दे सकती है।
- संभावना है कि छात्र प्रदर्शन के दौरान किसी वस्तु को गिराने से या किसी चीज को गिराने की क्रिया का अनुभव करने से अधिक जानकारी बनाए रखेंगे, बजाय इसके कि केवल यह बताया जाए कि ड्रॉपिंग (गुरुत्वाकर्षण) कैसे काम करता है।
- किसी प्रश्न का सही उत्तर सुनिश्चित करने के लिए संकेतों का प्रयोग।
- व्यवहार संशोधन तकनीकों के लिए पुरस्कारों का उपयोग बच्चे को कुछ कार्यात्मक सीखने में उपयोगी होगा ।

बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (INFORMATION AND COMMUNICATION TECHNOLOGY FOR CHILDREN WITH INTELLECTUAL DISABILITY) :– विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर कन्वेंशन (ब्त्च्क्) जीवन के सभी क्षेत्रों में विकलांग व्यक्तियों के पूर्ण और प्रभावी समावेश की वकालत करता है। अनुच्छेद 9 इस बात पर जोर देता है कि व्यक्तियों को इंटरनेट सहित सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों (आईसीटीएस) और प्रणालियों तक समान पहुंच के साथ, दूसरों के साथ समान आधार पर जीवन के सभी पहलुओं में पूरी तरह से भाग लेने का अधिकार है। सहायक प्रौद्योगिकी कंप्यूटर से जुड़े इतिहास के साथ सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) का व्युत्पन्न है।

शिक्षा के सभी स्तरों पर शिक्षार्थियों के लिए सहायक प्रौद्योगिकी जितना ही महत्वपूर्ण रहा है, कंप्यूटर और अन्य तकनीकों का उपयोग, जैसा कि बौद्धिक विकलांग बच्चों के लिए किया गया है, ने लाभान्वित किया है और जीवन को बढ़ाया है और कई

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY SPECIAL EDUCATION

बौद्धिक विकलांग बच्चों को उनके विभिन्न में हस्तक्षेप करने के विकल्प दिए हैं। उपलब्ध संसाधनों के साथ शैक्षिक और संज्ञानात्मक समस्याएं, शिक्षकों और शिक्षार्थियों दोनों को कक्षा शिक्षण सीखने की चुनौतियों से उबरने में सहायता करती हैं।

बौद्धिक विकलांग बच्चों के सीखने में सुधार लाने में इस प्रशंसनीय उपलब्धि को प्राप्त करने के लिए, एलन (2015) ने शिक्षण सीखने की प्रक्रिया में इस तकनीक की शुरूआत के पीछे के सिद्धांतों की पहचान की। उन्होंने पहचाना कि सहायक तकनीक केवल बुनियादी कौशल को बढ़ा सकती है, न कि उन्हें प्रतिस्थापित कर सकती है। इसका उपयोग शैक्षिक प्रक्रिया के हिस्से के रूप में किया जाना चाहिए, और इसका उपयोग बुनियादी कौशल सिखाने के लिए किया जा सकता है।

- विकलांग बच्चों के लिए सहायक तकनीक एक शैक्षिक उपकरण से कहीं अधिक हैय यह एक मौलिक कार्य उपकरण है जो गैर–विकलांग बच्चों के लिए पेंसिल और कागज के बराबर है।
- विकलांग बच्चे मानक उपकरणों तक पहुँचने और उनका उपयोग करने, शैक्षिक कार्यों को पूरा करने और नियमित शैक्षिक वातावरण में अपने विकासशील साथियों के साथ समान आधार पर भाग लेने के लिए सहायक तकनीक का उपयोग करते हैं।
- सहायक प्रौद्योगिकी के उपयोग से शैक्षिक और वाणिज्यिक सॉफ्टवेयरध्उपकरणों को स्वचालित रूप से सुलभ या प्रयोग करने योग्य नहीं बनाया जाता है। यह निर्धारित करने के लिए कि क्या बच्चे को सहायक प्रौद्योगिकी उपकरणों और सेवाओं की आवश्यकता है या नहीं, यह निर्धारित करने के लिए एक पेशेवर, नियमित और सहायक प्रौद्योगिकी के जानकार द्वारा आयोजित एक सहायक प्रौद्योगिकी मूल्यांकन की आवश्यकता है। बच्चों की निर्देशात्मक योजनाओं में निर्दिष्ट किया जाना चाहिए।
- सहायक प्रौद्योगिकी मूल्यांकन में वैकल्पिक और संवर्द्धनात्मक संचार आवश्यकताओं को संबोधित किया जाना चाहिए, अर्थात विकलांग बच्चों के लिए जरूरतों को संप्रेषित करने और पर्यावरण को बदलने की क्षमता।
- प्रभावी होने के लिए, एक सहायक प्रौद्योगिकी मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया होनी चाहिए।

यह सुनिश्चित किया गया था कि इन सिद्धांतों से चिपके हुए, सहायक तकनीक बौद्धिक विकलांग बच्चों की स्वतंत्रता को बढ़ाने में सहायता करती है, क्योंकि अक्सर, ये बच्चे सहायता के लिए माता–पिता, भाई–बहन, दोस्तों और शिक्षकों पर निर्भर होते हैं । दूसरों पर भरोसा करने से वयस्कता में संक्रमण धीमा हो सकता है, और आत्म–सम्मान भी कम हो सकता है, क्योंकि यह बौद्धिक विकलांग बच्चों को किसी समस्या को हल करने के लिए खुद के बजाय दूसरों पर निर्भर रहने की मांग करता है। इसके अलावा, सहायक तकनीक बौद्धिक विकलांग बच्चों को अपने दम पर विशिष्ट कार्यों को प्राप्त करने का एक तरीका प्रदान करती है।

विकलांग व्यक्ति (पीडब्ल्यूडी) अधिनियम, 1995 के अनुसार, बौद्धिक अक्षमता का अर्थ है किसी व्यक्ति के दिमाग के गिरफ्तार या अपूर्ण विकास की स्थिति जो विशेष रूप से बुद्धि की उप सामान्यता की विशेषता है। यह स्थिति सीमावर्ती बौद्धिक अक्षमताओं, हल्के बौद्धिक अक्षमताओं, मध्यम बौद्धिक अक्षमताओं, गंभीर बौद्धिक अक्षमताओं और गहन बौद्धिक अक्षमताओं के रूप में हो सकती है। बौद्धिक विकलांग व्यक्तियों के लिए सहायक उपकरणों में वर्कशीट, वर्कबुक, पिक्चर बोर्ड, चार्ट, लेखन कौशल में सहायता के लिए पेंसिल ग्रिप, शैक्षिक खिलौने और खेल, ब्लॉक, सामान्य वस्तुओं के मॉडल, अक्षर, अंक आदि शामिल हैं। दैनिक जीवन (एडीएलएस) और शैक्षिक सामग्री की गतिविधियों का प्रदर्शन करना। सहायक उपकरण पुनर्वास पेशेवर या उपचार करने वाले चिकित्सक द्वारा सलाह दी गई कोई भी वस्तु हो सकती है।

Unit :- 4.5 Various types of Evaluation: Entry level, Formative and Summative, Continuous and Comprehensive Evaluation (CCE) in the Indian educational system विभिन्न प्रकार के मूल्यांकनः प्रवेश स्तर, रचनात्मक और योगात्मक, सतत और भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) प्रवेश स्तर (Entry level) :– प्रवेश स्तर का मूल्यांकन सभी नए छात्रों की स्कूल की तैयारी का विश्लेषण करता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनके पास अपने शैक्षणिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफलता का सर्वोत्तम संभव मौका है। मूल्यांकन परिणामों का उपयोग प्लेसमेंट और सलाह देने की प्रक्रिया में किया जाता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि छात्रों को उनके कौशल स्तर के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रमों में नामांकित किया गया है। जैसे ही छात्र अपने शैक्षणिक कार्यक्रमों के माध्यम से मैट्रिक पास करते हैं, उनकी प्रगति पर नजर रखी जाती है और प्राप्त जानकारी का उपयोग कार्यक्रमों और सेवाओं के मूल्यांकन और उन्हें मजबूत करने के लिए किया जाता है। प्रवेश

Notes For Pyssum EXAM TRICKY SPECIAL EDUCATION

स्तर के मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण घटक छात्र सहायता गतिविधियों का प्रावधान है। इसके लिए यूएसी, सामान्य शिक्षा समिति (जीईसी), विश्वविद्यालय पाठ्यचर्या समिति (यूसीसी), नामांकन प्रबंधन समिति और छात्र मामलों के कार्यालय के बीच सहयोग की आवश्यकता है। प्रवेश स्तर के मूल्यांकन के लिए विशिष्ट प्राथमिकताएं हैं:

- सुनिश्चित करें कि प्रवेश करने वाले छात्रों में स्कूल में सफल होने के लिए पर्याप्त बुनियादी कौशल हैं।
- सिस्टम के माध्यम से मैट्रिक पास करने वाले छात्रों में प्रवेश की अवधारण दर में सुधार करें।
- प्रवेश करने वाले छात्रों को ऐसे अनुभव प्रदान करें जो उन्हें अपने शैक्षिक और व्यक्तिगत लक्ष्यों को स्पष्ट करने में मदद करें।
- प्रवेश स्तर के मूल्यांकन , नियुक्ति प्रक्रिया की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करें।
- विश्वविद्यालय–व्यापी छात्र सहायता सेवाएँ, गतिविधियाँ और संसाधन प्रदान करें जो शैक्षणिक कार्यक्रमों के पूरक हों।
- जोखिम वाले छात्रों पर जोर देने के साथ मूल्यांकन और गतिविधियों के एकीकरण के माध्यम से पहुंच, प्लेसमेंट और सलाह में सुधार के लिए छात्र सेवाओं के वितरण को मजबूत करना।
- संस्थागत निर्णय लेने में उपयोग के लिए उपयोग करने योग्य केंद्रीकृत, गुणात्मक और मात्रात्मक जानकारी का उत्पादन करें।

रचनात्मक और योगात्मक (Formative and Summative) :–

निर्माणात्मक मूल्यांकन (Formative Evaluation) :–

1. सीखने की प्रक्रिया की निगरानी के लिए शिक्षण सीखने की प्रक्रिया के दौरान रचनात्मक मूल्यांकन का उपयोग किया जाता है।

2. रचनात्मक मूल्यांकन विकासात्मक प्रकृति का होता है। इस मूल्यांकन का उद्देश्य छात्रों के सीखने और शिक्षक के शिक्षण में सुधार करना है।

3. आमतौर पर इस उद्देश्य के लिए शिक्षक निर्मित परीक्षणों का उपयोग किया जाता है।

4. परीक्षण आइटम सीमित सामग्री क्षेत्र के लिए तैयार किए जाते हैं।

5. यह जानने में मदद करता है कि निर्देशात्मक उद्देश्यों को किस हद तक हासिल किया गया है।

6. यह शिक्षक को विधियों को संशोधित करने और उपचारात्मक कार्यों को निर्धारित करने के लिए फीडबैक प्रदान करता है।

7. इस मूल्यांकन में केवल कुछ कौशल का परीक्षण किया जा सकता है।

8. यह एक सतत और नियमित प्रक्रिया है।

9. यह मूल्यांकन को एक प्रक्रिया के रूप में मानता है।

योगात्मक मूल्यांकन (Summative Evaluation) :– पाठ्यक्रम पूरा होने के बाद ग्रेड आवंटित करने के लिए योगात्मक मूल्यांकन का उपयोग किया जाता है।

1.योगात्मक मूल्यांकन अंतिम प्रकृति का है। इसका उद्देश्य छात्र की उपलब्धि का मूल्यांकन करना है।

2.आम तौर पर मानकीकृत परीक्षणों का उपयोग इस उद्देश्य के लिए किया जाता है।

3. परीक्षण आइटम पूरे सामग्री क्षेत्र से तैयार किए जाते हैं।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

4. यह निर्देशात्मक उद्देश्यों की उपयुक्तता का न्याय करने में मदद करता है।

5. यह शिक्षक को निर्देशात्मक प्रक्रिया की प्रभावशीलता को जानने में मदद करता है।

6. इस मूल्यांकन में बड़ी संख्या में कौशल का परीक्षण किया जा सकता है।

7. यह नियमित और सतत प्रक्रिया नहीं है।

8. यह मूल्यांकन को एक उत्पाद के रूप में मानता है।

9. यह उस प्रश्न का उत्तर देता है, जिस डिग्री तक छात्रों ने पाठ्यक्रम सामग्री में महारत हासिल की है।

Continuous and Comprehensive Evaluation सतत और व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) :– सतत और व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) 2009 में भारत के शिक्षा का अधिकार अधिनियम द्वारा निर्देशित मूल्यांकन की एक प्रक्रिया थी। यह मूल्यांकन प्रस्ताव भारत में राज्य सरकारों के साथ–साथ भारत में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा पेश किया गया था। कुछ स्कूलों में छठी से दसवीं और बारहवीं के छात्रों के लिए। सीसीई पैटर्न में छात्र के समग्र विकास पर नजर रखने के लिए रचनात्मक और योगात्मक आकलन शामिल हैं। डिजिटल स्कूलिंग हो या भौतिक स्कूल संरचना, इस आवधिक और संपूर्ण मूल्यांकन प्रक्रिया के बिना, एक शिक्षक छात्रों को रचनात्मक प्रतिक्रिया नहीं दे सकता है। इसलिए, निरंतर और व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया रचनात्मक उपचारात्मक कार्रवाई के लिए एक छात्र की ताकत को उजागर करती है ।

सतत और व्यापक मूल्यांकन का उद्देश्य Aim of Continuous and Comprehensive Evaluation (CCE) :–

- शिक्षा के सभी पहलुओं में छात्रों का मूल्यांकन और मार्गदर्शन करें।
- छात्रों के कौशल और संज्ञानात्मक क्षमताओं पर ध्यान केंद्रित करके सीखने के परिणामों में सुधार करें।
- नियमित मूल्यांकन और रचनात्मक आलोचना को प्रोत्साहित करें ।
- छात्रों पर तनाव और दबाव कम करें।
- शानदार शिक्षण के साथ प्रशिक्षकों को सक्षम करें।

सतत और व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) की विशेषताएं :–

- प्रभावी शिक्षण को सक्षम बनाता है ।
- छात्र प्रगति का निरंतर मूल्यांकन करता है ।
- भविष्य के लिए शिक्षण–अधिगम योजना बनाने में मदद करता है।
- अच्छा रवैया बनाता है और छात्रों में अच्छे मूल्यों को आत्मसात करता है।
- शैक्षिक और सह–शैक्षिक विकास में सुधार करने में मदद करता है।
- छात्रों के सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित करता है।

सतत और व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) के पहलू :– प्रदर्शन के आकलन में शैक्षिक और सह–शैक्षिक गतिविधियां दोनों शामिल हैं। पाठ्यचर्या और मुख्य विषयों से संबंधित क्षेत्रों को शैक्षिक गतिविधियों में शामिल किया गया है जबकि जीवन कौशल, दृष्टिकोण और मूल्यों को सह–शैक्षिक गतिविधियों में शामिल किया गया है।

(।) शैक्षिक मूल्यांकन (Scholastic Assessment) :– शैक्षिक क्षेत्रों में वे सभी गतिविधियाँ शामिल हैं जो शैक्षणिक पाठ्यक्रम के भीतर विभिन्न विषयों से संबंधित हैंय शिक्षक का उद्देश्य विभिन्न विषयों के साथ संज्ञानात्मक डोमेन उद्देश्यों को संरेखित करना है। इसे बेहतर ढंग से समझने के लिए वे ब्लूम की टैक्सोनॉमी का उल्लेख कर सकते हैं जो सीखने के उद्देश्यों को वर्गीकृत करने के लिए एक ढांचा है।

• **ज्ञान (Knowledge)** – यह विषय वस्तु से जुड़े विस्तृत विवरण को इंगित करता है, इसमें संरचना, पैटर्न और सेटिंग के बारे में किसी भी जानकारी को याद करने की क्षमता भी शामिल है।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

• **समझ (Comprehension)** :– यह वह जो कुछ भी सुन रहा है उसे समझने की क्षमता को इंगित करता है और आवश्यकता पड़ने पर इसे लागू करता है।

• **अनुप्रयोग (Application)** :– यह किसी समस्या को हल करने के लिए किसी सिद्धांत या सिद्धांत को लागू करने की क्षमता को इंगित करता है।

• **विश्लेषण (Analysis)** :– दोषों और भ्रांतियों की पहचान करने की क्षमता।

• **संश्लेषण (Synthesis)** :– यह अलग–अलग संस्थाओं और तत्वों को समग्र रूप से संयोजित करने से संबंधित है।

• **मूल्यांकन (Evaluation)** :– के विचारशील विश्लेषण के बाद कुछ निष्कर्ष निकालने की क्षमता दिए गए चर ।

शिक्षकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि छात्र सभी विषय क्षेत्रों में विभिन्न गतिविधियों में भाग लें, यदि छात्र कहीं भी लड़खड़ाता है तो शिक्षक को उसके अनुसार उसका मार्गदर्शन करना चाहिए। सीखने के उद्देश्यों को केवल ऑनलाइन मूल्यांकन और शिक्षकों से उत्पादक प्रतिक्रिया और मार्गदर्शन के साथ मिलकर छात्रों से सक्रिय जुड़ाव के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, यहीं पर सतत और व्यापक मूल्यांकन का महत्व है।

(ठ) सह–शैक्षिक मूल्यांकन (Co & Scholastic Assessment) :– अधिकांश विद्यालयों में सह–शैक्षिक गतिविधियों की उपेक्षा करते हुए शैक्षिक गतिविधियों पर अधिक ध्यान केंद्रित करना एक लंबी और दोहराव वाली प्रथा रही है। पिछले कुछ वर्षों में शुरू किए गए प्रमुख शैक्षिक सुधारों के साथ, स्कूलों और कॉलेजों ने समान रूप से सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों पर जोर दिया है। इन गतिविधियों में शामिल हैं:

• जीवन कौशल (Life Skills)

• मनोवृत्ति (Attitude)

• सामाजिक मूल्य (Social Values)

जीवन कौशल (Life Skills) :– वे आवश्यक योग्यताएं जो किसी व्यक्ति को किसी भी स्थिति से चतुराई से और प्रभावी ढंग से निपटने में सक्षम बनाती हैं, जीवन कौशल कहलाती हैं। दूसरे शब्दों में, ये मनो–सामाजिक और पारस्परिक कौशल हैं जो लोगों को निर्णय लेने, उचित निर्णय लेने, किसी समस्या के अभिनव और रचनात्मक समाधान के साथ आने और किसी की उत्पादकता बढ़ाने में मदद करते हैं। यूनिसेफ, यूनेस्को और डब्ल्यूएचओ ने दस मुख्य जीवन कौशलों को सूचीबद्ध किया है जो दैनिक चुनौतियों से निपटने और कठिनाइयों पर काबू पाने में सहायक हैं। मुख्य कौशल इस प्रकार हैं:–

• आत्म–जागरूकता (Self - awareness)

• सहानुभूति (Empathy)

• आलोचनात्मक सोच (Critical thinking)

• रचनात्मक सोच (Creative thinking)

• निर्णय लेना (Decision making)

• समस्या–समाधान (Problem - solving)

• पारस्परिक संबंध कौशल (Interpersonal relationship skills)

• प्रभावी संचार (Effective communication)

Notes For Pyssun
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

• तनाव से मुकाबला करना (Coping with stress)

• भावनाओं से मुकाबला करना (Coping with emotions)

जीवन कौशल का आकलन कैसे करें?

• **व्यक्तिगत मूल्यांकन (Individual assessment)** :– इसमें कोई भी गतिविधि या कार्य शामिल है जो किसी भी छात्र द्वारा व्यक्तिगत रूप से किया जाता है।

• **समूह मूल्यांकन(Group assessment)** :– इसमें कोई एकल परियोजना या असाइनमेंट शामिल है जो छात्रों के एक समूह को सौंपा जाता है जिसमें वे सहयोग करते हैं और कार्य को पूरा करते हैं।

• स्व–मूल्यांकन (Self - assessment) :– दिए गए मानदंडों के आधार पर छात्रों से उनकी प्रगति, विषयों की समझ, ज्ञान और कौशल आदि का मूल्यांकन करने की अपेक्षा की जाती है।

• **सहकर्मी–मूल्यांकन (Peer - assessment)** :– इस विशेष मूल्यांकन में छात्रों को एक समूह में जोड़ा जाता है जिसमें एक छात्र काम का आकलन करता है। दूसरे का।

रवैया (Attitude) :– एक छात्र के दृष्टिकोण और मन की स्थिति की पहचान करने के सबसे सुनिश्चित तरीकों में से एक कक्षा में उसके व्यवहार और दृष्टिकोण के माध्यम से है। शिक्षकों को अपने शिक्षकों, साथियों, सहपाठियों, स्कूल के कार्यक्रमों और पूरे स्कूल के वातावरण के प्रति स्वस्थ व्यवहार और दृष्टिकोण के विकास पर ध्यान देना चाहिए। संस्थान में छात्र के व्यवहार का पूरा ट्रैक रिकॉर्ड प्राप्त करने के लिए संस्थान छात्र ट्रैकिंग प्रणाली का उपयोग कर सकते हैं।

छात्रों के दृष्टिकोण का आकलन कैसे करें?

छात्र के व्यवहार का आकलन करने के लिए प्रभावी ढंग से उपयोग की जा सकने वाली विभिन्न तकनीकें इस प्रकार हैं:–

• Self - report inventories

• Attitude scales

• Survey

• Interview

• The biographical and essay methods

• Projective tests

• Error - choice technique

• Indirect observation

सह पाठ्यक्रम गतिविधियां (Co - Curricular Activities) :– छात्रों के समग्र विकास के लिए बढ़ती चिंता ने स्कूलों से सह–पाठयक्रम गतिविधियों पर समान जोर देने का आग्रह किया है जिसमें विभिन्न मनोरंजक खेल शामिल हैं। यह पता चला है कि खेल और कोई भी अन्य गतिविधियाँ लाभकारी शारीरिक विकास, चरित्र शिक्षा और सामाजिक कौशल में योगदान करती हैं। कुछ उल्लेखनीय सह–पाठयक्रम गतिविधियों में शामिल हैं:–

• वाद–विवाख्द (Debates)

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

- खेलकूद प्रतियोगिता (Sports competition)
- सांस्कृतिक कार्यक्रम (Cultural programs)
- कहानी लेखन (Story writing)
- नाटक क्लब (Drama club)
- योग (Yoga)
- ड्राइंग (Drawing)

सतत और व्यापक मूल्यांकन के कार्य (Functions of Continuous and Comprehensive Evaluation (CCE) :–

- नई और प्रभावी शिक्षण रणनीतियों के विकास में मदद करता है ।
- छात्र की प्रगति को समझने के लिए नियमित मूल्यांकन में सहायता करता है।
- छात्रों की कमजोरियों और ताकत को समझने में मदद करता है ।
- शिक्षक को छात्रों के सामने आने वाली समस्याओं को समझने और शिक्षण तकनीकों में बदलाव करने में सक्षम बनाता है।
- छात्रों के बीच आत्म–मूल्यांकन को प्रोत्साहित करता है ।
- छात्रों को अच्छी आदतें विकसित करने, उनकी कमजोरियों पर काम करने और त्रुटियों को ठीक करने में मदद करता है।
- यह छात्र के दृष्टिकोण और मूल्यों में बदलाव के बारे में एक विचार देता है ।
- यह समय की अवधि में छात्र की प्रगति के बारे में रिपोर्ट देता है।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

सतत और व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) के प्रमुख लाभ :–

1. छात्रों के बीच एक बहुत ही सामान्य घटना यह है कि वे परीक्षा के कारण अत्यधिक तनावग्रस्त हो जाते हैंय कुछ तो रात भर जागते हैं ताकि उस एक अध्याय को संशोधित कर सकें जिसमें उसे कोई समस्या है। सीसीई एक उपयोगी उपकरण है जिसका उपयोग उस चिंता या भय को कम करने के लिए किया जा सकता है जो परीक्षा के नजदीक आने पर उनके दिमाग में होता जाता है।

2. सीसीई छात्रों की सीखने की जरूरतों और क्षमताओं का मूल्यांकन करता है। सीसीई के साथ, छात्र लगातार अपनी क्षमताओं का परीक्षण कर सकते हैं और अपना सर्वश्रेष्ठ पैर आगे बढ़ा सकते हैं। सीसीई शिक्षकों और छात्रों को उन क्षेत्रों की पहचान करने की अनुमति देता है जहां छात्रों को अधिक सहायता की आवश्यकता होती है।

3. सीसीई शिक्षकों को प्रभावी शिक्षण के लिए उनकी रणनीतियों को व्यवस्थित करने में मदद करता है। निरंतर मूल्यांकन शिक्षक को कमजोरियों का पता लगाने और कुछ छात्रों की सीखने की शैलियों की पहचान करने की अनुमति देता है। नियमित रूप से एक छात्र की सीखने की कठिनाइयों की पहचान करके, यह छात्र के प्रदर्शन को बेहतर बनाने में मदद करता है।

4. सीसीई बाल केंद्रित है और प्रत्येक छात्र को एक व्यक्ति के रूप में मानता है। इसका उद्देश्य प्रत्येक बच्चे की अद्वितीय क्षमताओं, शक्तियों और विकास का निर्माण करना है।

5. सतत और व्यापक मूल्यांकन जो इस मूल्यांकन संरचना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, छात्रों की प्रगति का आकलन करने में मदद करता है।

6. सीसीई शिक्षकों को विभिन्न मूल्यांकन गतिविधियों के साथ प्रदान करता है जो उन्हें छात्रों के दोषों का निदान करने की अनुमति देता है। जब एक शिक्षक मूल्यांकन गतिविधियों की प्रतिक्रिया देता है, तो वह छात्रों को समस्या क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करता है और उनके प्रदर्शन को बेहतर बनाने में मदद करने के लिए प्रतिक्रिया और सहायता प्रदान करता है।

Unit 5: Teaching strategies for students with SLD (SLD वाले छात्रों के लिए शिक्षण रणनीतियाँ)

Unit :- 5.1 Strategies for teaching reading and comprehension: Multisensory teaching (e.g., Orton - Gillingham method, Fernald method), spelling rules, error analysis (पठन और समझ सिखाने की रणनीतियाँः बहुसंवेदी शिक्षण (जैसे, ऑर्टन – गिलिंगम विधि, फर्नाल्ड विधि), वर्तनी नियम, त्रुटि विश्लेषण)

साक्षरता शिक्षण और सीखना शिक्षकों और स्कूलों की मुख्य जिम्मेदारियां हैं। फिर भी पढ़ना और लिखना पढ़ाना एक जटिल और अत्यधिक कुशल व्यावसायिक गतिविधि है। बहुत से युवा शिक्षार्थी पढ़ने और लिखने के तरीके के बारे में बहुत कम ज्ञान के साथ स्कूल शुरू करते हैं। शिक्षकों को बच्चों की लिखित और बोली जाने वाली भाषा को जोड़ने के बीच महत्वपूर्ण अंतर को पाटने में मदद करने का काम सौंपा गया है। पढ़ना सीखना महत्वपूर्ण है, अनुसंधान से पता चलता है कि आनंद के लिए पढ़ना निम्न हो सकता हैः–

- बेहतर स्वास्थ्य और भलाई को बढ़ावा देना ।
- सामाजिक संपर्क और संबंध बनाने में मदद करना।
- सामाजिक गतिशीलता की संभावना बढ़ाना।

पठन–पाठन एक विकसित और गैर–रेखीय प्रक्रिया है जो प्रत्येक युवा छात्र के लिए अलग तरह से काम करती है। प्रमुख चरणों 1 और 2 पर पढ़ने के लिए अध्ययन के कार्यक्रमों में शब्द पढ़ना और समझना (सुनना और पढ़ना दोनों) शामिल हैं। प्रारंभिक प्राथमिक शिक्षकों को दोनों आयामों में क्षमता विकसित करने का काम सौंपा गया है। शिक्षण पठन में अक्षर, ध्वनियाँ और शब्दावली पढ़ाना शामिल होगा, लेकिन इसके अलावा, इसमें निर्देशित पठन और पृष्ठभूमि ज्ञान के निर्माण जैसी रणनीतियाँ भी शामिल होंगी।

बहुसंवेदी शिक्षण (उदा. ऑर्टन–गिलिंघम विधि। फर्नाल्ड विधि):–

ऑर्टन–गिलिंघम विधि ऑर्टन–ग्लंघम दृष्टिकोण :– साक्षरता सिखाने के लिए एक प्रत्यक्ष, स्पष्ट, बहुसंवेदी, संरचित, अनुक्रमिक, नैदानिक, और निर्देशात्मक तरीका जब पढ़ना, लिखना और वर्तनी व्यक्तियों को आसानी से नहीं आती है, जैसे कि डिस्लेक्सिया वाले लोग। यह एक विधि, कार्यक्रम या प्रणाली के बजाय एक दृष्टिकोण के रूप में सबसे अच्छी तरह से समझा और अभ्यास किया जाता है। एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित और अनुभवी प्रशिक्षक के हाथों में, यह असाधारण चौड़ाई, गहराई और लचीलेपन का एक शक्तिशाली उपकरण है।

आवश्यक पाठ्यचर्या सामग्री और निर्देशात्मक अभ्यास जो ऑर्टन–गिलिंगम दृष्टिकोण की विशेषता रखते हैं, दो स्रोतों से प्राप्त होते हैंः पहला समय–परीक्षणित ज्ञान और अभ्यास के एक निकाय से जिसे पिछले 80 वर्षों में मान्य किया गया है, और दूसरा वैज्ञानिक साक्ष्य से कि कैसे व्यक्ति सीखते हैं पढ़ना और लिखनाय एक महत्वपूर्ण संख्या को ऐसा करने में कठिनाई क्यों होती हैय कैसे डिस्लेक्सिया होने से साक्षरता कौशल प्राप्त करना अधिक कठिन हो जाता हैय और ऐसे व्यक्तियों को पढ़ने और लिखने के लिए कौन सी शिक्षण पद्धतियां सबसे उपयुक्त हैं।

इस दृष्टिकोण का नाम सैमुअल टी. ऑर्टन और अन्ना गिलिंगम के मूलभूत और मौलिक योगदान के कारण रखा गया है। सैमुअल टॉरे ऑर्टन (1879–1948) एक न्यूरोसाइकियाट्रिस्ट और पैथोलॉजिस्ट थे। वह पढ़ने की विफलता और संबंधित भाषा

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

प्रसंस्करण कठिनाइयों पर ध्यान केंद्रित करने में अग्रणी थे। उन्होंने तंत्रिका वैज्ञानिक जानकारी और उपचार के सिद्धांतों को एक साथ लाया। 1925 की शुरुआत में उन्होंने डिस्लेक्सिया के सिंड्रोम को एक शैक्षिक समस्या के रूप में पहचाना था। एना गिलिंगम (1878–1963) एक प्रतिभाशाली शिक्षक और मनोवैज्ञानिक थीं, जिनके पास भाषा की शानदार महारत थी। डॉ. ऑर्टन से प्रोत्साहित होकर, उन्होंने 1930 के दशक की शुरुआत में ही निर्देशात्मक सामग्री का संकलन और प्रकाशन किया, जिसने छात्र निर्देश और शिक्षक प्रशिक्षण की नींव प्रदान की, जिसे ऑर्टन–गिलिंगम दृष्टिकोण के रूप में जाना जाने लगा।

ऑर्टन–गिलिंघम दृष्टिकोण अक्सर एक–पर–एक शिक्षक–छात्र निर्देशात्मक मॉडल से जुड़ा होता है। छोटे समूह निर्देश में इसका उपयोग असामान्य नहीं है। उपागम के एक सफल अनुकूलन ने कक्षा निर्देश के लिए इसके मूल्य का प्रदर्शन किया है। पढ़ने, वर्तनी और लिखने की कठिनाइयाँ इस दृष्टिकोण का प्रमुख केंद्र रही हैं, हालाँकि इसे उन छात्रों के उपयोग के लिए सफलतापूर्वक अनुकूलित किया गया है जो गणित में कठिनाई प्रदर्शित करते हैं।

ऑर्टन–गिलिंघम दृष्टिकोण हमेशा व्यक्तिगत छात्र की सीखने की जरूरतों पर केंद्रित होता है। ऑर्टन–गिलिंगम (ओजी) के प्रैक्टिशनर छात्रों के साथ काम करने के लिए पाठ और सामग्री को उस स्तर पर डिजाइन करते हैं जो वे पेसिंग निर्देश और अपनी व्यक्तिगत ताकत और कमजोरियों के लिए नई सामग्री की शुरूआत के द्वारा प्रस्तुत करते हैं। डिस्लेक्सिया से पीड़ित छात्रों को भाषा और हमारी लेखन प्रणाली के साथ इसके संबंध के बारे में उसी बुनियादी ज्ञान में महारत हासिल करने की जरूरत है, जो सक्षम पाठक और लेखक बनना चाहते हैं। हालाँकि, उनके डिस्लेक्सिया के कारण, उन्हें सोचने और उपयोग करने के लिए भाषा के कच्चे माल को छाँटने, पहचानने और व्यवस्थित करने में अधिकांश लोगों की तुलना में अधिक सहायता की आवश्यकता होती है। गैर–डिस्लेक्सिक शिक्षार्थियों को आसानी से प्राप्त होने वाले भाषा तत्वों को सीधे और व्यवस्थित रूप से पढ़ाया जाना चाहिए।

ऑर्टन–गिलिंघम दृष्टिकोण के सिद्धांत (The Principles of the Orton&Gillingham Approach) :–

संरचित (Structured) :– ऑर्टन–गिलिंघम में हर पाठ रणनीतियों, गतिविधियों और पैटर्न के एक सुसंगत सेट के आसपास आयोजित किया जाता है। छात्र हमेशा जानता है कि प्रत्येक पाठ में क्या उम्मीद करनी है। छात्र आसानी से गतिविधि में बदल जाते हैं क्योंकि वे दिनचर्या से परिचित होते हैं और यह छात्र और शिक्षक दोनों के लिए चिंता मुक्त वातावरण बनाता है।

अनुक्रमिक (Sequential) :– प्रत्येक कौशल को तार्किक क्रम में पढ़ाया जाता है। छात्र सरल शब्द पैटर्न (ब्टब) सीखना शुरू करता है और फिर धीरे–धीरे और अधिक कठिन और जटिल विचारों की ओर बढ़ता है जिसमें स्वर पैटर्न, बहु–अक्षर वाले शब्द, वर्तनी नियम, प्रत्यय शामिल हैं। चूंकि सभी शिक्षण कौशल जमीनी स्तर से सिखाए जाते हैं, इसलिए ऑर्टन–गिलिंघम में छात्र के पास कभी भी पढ़ने या वर्तनी में कोई अंतर नहीं होगा।

संचयी (Cumulative) :– प्रत्येक ऑर्टन–गिलिंघम पाठ स्वयं पर निर्मित होता है। छात्र को एक कौशल सिखाया जाता है और वर्तमान पाठ में महारत हासिल होने तक अगले कौशल में प्रगति नहीं करता है। जैसे–जैसे छात्र नई सामग्री सीखते हैं, वे पुरानी सामग्री की समीक्षा तब तक करते रहते हैं जब तक कि यह छात्र की दीर्घकालिक स्मृति में संग्रहीत न हो जाए।

स्पष्ट (Eplicit) :– शिक्षक ऑर्टन–गिलिंघम पाठ में शिक्षा के केंद्र में है। प्रशिक्षक छात्र को ठीक वही सिखाता है जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है और वह कभी भी यह नहीं मानता या अनुमान नहीं लगाता कि छात्र पहले से क्या जानता है। ऑर्टन–गिलिंघम प्रत्येक पाठ में निरंतर छात्र–शिक्षक बातचीत का उपयोग करता है।

बहुसंवेदी (Multisensory) :– ऑर्टन–गिलिंघम पाठ में, शिक्षक छात्र के संवेदी मार्गों का उपयोग करता हैः श्रवण, दृश्य और स्पर्शनीय। उदाहरण के लिए, स्वर 'ए' सीखते समय, छात्र पहले एक ऐप्पल की तस्वीर देख सकता है, फिर अपनी आंखें बंद कर सकता है और ध्वनि सुन सकता है, फिर जोर से बोलते हुए हवा में अक्षर का पता लगा सकता है। सुनने, देखने और इधर–उधर घूमने का यह संयोजन छात्र के लिए एक स्थायी प्रभाव पैदा करता है।

व्यवस्थित ध्वन्यात्मकता (Systematic Phonics) :– ऑर्टन–गिलिंगम में व्यवस्थित ध्वन्यात्मकता शामिल है, विकास पढ़ने के प्रारंभिक चरणों में वर्णमाला सिद्धांतों से शुरू होता है और छात्रों की प्रगति के रूप में अधिक जटिल सिद्धांतों को आगे बढ़ाता है। छात्र सीखते हैं कि शब्द अलग–अलग भाषण ध्वनियों से बने होते हैं, और लिखित शब्दों के अक्षर ग्राफिक रूप से इनमें से प्रत्येक भाषण ध्वनि का प्रतिनिधित्व करते हैं।

Notes For Byssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

फर्नाल्ड विधि (Fernald method) :– ग्रेस फर्नाल्ड एक विशेष शिक्षक थीं जिन्होंने संघर्षरत शिक्षार्थियों के साथ काम किया। उन्होंने VAKT तकनीक नामक वर्तनी सिखाने के लिए एक नए, बहुसंवेदी दृष्टिकोण का बीड़ा उठाया, जो दृश्य–श्रवण–काइनेस्टेटिक–स्पर्श के लिए खड़ा है। यह। छात्रों को उनकी सभी इंद्रियों के माध्यम से नए शब्द प्रस्तुत करता है, जिससे उनके लिए समझना और याद रखना आसान हो जाता है। फर्नाल्ड के दृष्टिकोण के लिए व्यक्तिगत ध्यान देने की आवश्यकता है, लेकिन यह वर्तनी और पढ़ने में सुधार करने में प्रभावी है, और यह संघर्षरत शिक्षार्थियों को अपने सहपाठियों के साथ बने रहने में मदद करता है। फर्नाल्ड विधि एक व्यवस्थित, बहुसंवेदी निर्देशात्मक दृष्टिकोण है जिसमें दृश्य, श्रवण, गतिज, और स्पर्श (ट।झज) तौर–तरीकों का एक साथ उपयोग शामिल है। संवेदी और अवधारणात्मक संकेतों का जुड़ाव शब्दों की मानसिक छवि के साथ–साथ मुद्रित शब्दों और उनके मौखिक अभ्यावेदन के बीच संबंध को पुष्ट करता है। इस दृष्टिकोण का उपयोग मुद्रित शब्दों और शब्द भागों के लिए स्मृति में भी सुधार करता है। फर्नाल्ड विधि व्यक्तिगत छोटे–समूह निर्देश के लिए अभिप्रेत है।

उद्देश्य (Purpose) :– फर्नाल्ड विधि उन छात्रों में दृष्टि शब्द अधिग्रहण और शब्द पहचान कौशल में सुधार करती है जो अन्य शिक्षण विधियों के माध्यम से पढ़ना सीखने में विफल रहे हैं या जिन्हें अपवाद या ध्वन्यात्मक रूप से अनियमित शब्द सीखने में विशेष कठिनाई है । इस पद्धति का उपयोग करते हुए, छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे सीखे गए शब्दों की पठन पहचान को बनाए रखें। लंबी अवधि की पुनर्प्राप्ति के लिए शब्दों की लिखित वर्तनी सिखाने के लिए एक अलग प्रक्रिया का उपयोग किया जाता है।

वर्तनी नियम (Spelling rules) :– वर्तनी एक शब्द का दृश्य प्रतिनिधित्व करने की क्षमता है। वर्तनी के लिए, हमें एक शब्द (स्वनिम) में ध्वनि की अलग–अलग इकाइयों के बारे में सोचना होगा और फिर उन अक्षरों को लिखना होगा जो उन ध्वनियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि आप इस सूची को नीचे देखते हैं। तो आप इन आवर्ती वर्तनी समस्याओं को देखेंगेः–

• **Homophones** :– भ्वउवचीवदमे–शब्द जो समान लगते हैं लेकिन अलग–अलग वर्तनी वाले होते हैं–गलत वर्तनी वाले शब्दों का लगभग 20 प्रतिशत ।

• **एपोस्ट्रोफ (Apostrophes)** :– जिन शब्दों में एपॉस्ट्रॉफ होता है, उनमें लगभग 10 प्रतिशत गलत वर्तनी वाले शब्द होते हैं, जिनमें से कुछ होमोफोन भी होते हैं ।

• **जॉइनिंग एरर (Joining Errors)** :– एक और अत्यधिक अनुमानित वर्तनी समस्या में ऐसे शब्द शामिल हैं जो खुद को अनुचित अलगाव या शामिल होने के लिए उधार देते हैं ।

मिश्रित शब्दों में त्रुटियाँ (Errors in Compound Words) :– एक अन्य सामान्य वर्तनी समस्या मिश्रित शब्दों की गलत वर्तनी है, उन्हें गलत तरीके से अलग करना, या कम सामान्यतः, एक खुले परिसर में गलत तरीके से जुड़ना या एक हाइफन के साथ एक यौगिक में शामिल होना (जैसे, वर्तनी के बाहर की ओर, आइसक्रीम की वर्तनी वाली आइसक्रीम, बेबी–सिट वर्तनी दाई, आदि)।

जिन शब्दों की प्राथमिक कक्षा के छात्र गलत स्पेलिंग करते हैं, कई मामलों में वही शब्द इंटरमीडिएट और मिडिल स्कूल के छात्र गलत स्पेलिंग जारी रखते हैं। जब शोधकर्ताओं ने प्रत्येक ग्रेड स्तर पर 25 सबसे अधिक बार गलत वर्तनी वाले शब्दों की बारीकी से जांच की, तो उन्होंने एक से आठ तक ग्रेड स्तरों में ओवरलैप की एक चौंकाने वाली मात्रा का उल्लेख किया। उसी समय, एक विशिष्ट वर्तनी पाठ्यक्रम की एक परीक्षा से पता चलता है कि इनमें से कई अक्सर गलत वर्तनी वाले शब्दों को वर्तनी पाठ्यक्रम में काफी पहले पढ़ाया जाता है। दुर्भाग्य से, इनमें से कई शब्द आठ साल के वर्तनी पाठ्यक्रम की अवधि के भीतर केवल एक बार पढ़ाए जाते हैं।

छह या आठ ग्रेड स्तरों को कवर करने वाली वर्तनी श्रृंखला में इन शब्दों को एक बार पढ़ाना कई छात्रों के लिए इन शब्दों को सीखने के लिए पर्याप्त नहीं है। शिक्षकों को इन शब्दों की समीक्षा और पुनर्चक्रण के लिए एक प्रणाली लागू करनी चाहिए जब तक कि छात्र महारत का प्रदर्शन न करें। छात्रों को अपने दैनिक कार्य में इन शब्दों की सही वर्तनी के लिए निगरानी की जानी चाहिए और उन्हें जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। जिन शब्दों की वर्तनी अभी भी गलत है, उन्हें अगले वर्तनी पाठ में पुनर्चक्रित किया जाना चाहिए।

त्रुटि विश्लेषण (Error analysis) :– त्रुटि को स्वयं–सुधार करने से पहले और अधिक प्रासंगिक सीखने की आवश्यकता होती है। लक्ष्य भाषा के बारे में ज्ञान की कमी के कारण शिक्षार्थी को गलतियाँ करने की जानकारी नहीं होती है। लेखक उस तार्किक को

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

शिक्षार्थी के लिए परिभाषित करता है लेकिन देशी वक्ता के लिए सामान्य नहीं है। एलिस (1985) का दावा है कि त्रुटियों और गलतियों के बीच का अंतर व्यवहार में देखने योग्य नहीं है। त्रुटि विश्लेषण शिक्षार्थी की त्रुटियों का अध्ययन करने का प्रयास है। तथ्य यह है कि शिक्षार्थी कई त्रुटियां करते हैं और शिक्षार्थी के भीतर चल रही प्रणाली के बारे में कुछ प्रकट करने के लिए त्रुटियों को देखा, विश्लेषण और वर्गीकृत किया जा सकता है, और इसे त्रुटि विश्लेषण कहा जाता है। कार्ल जेम्स (1998) के अनुसार ''त्रुटि विश्लेषण प्रश्न के दूसरी तरफ है, भाषाई अज्ञानता का अध्ययन होने के नाते, जांच, भाषाई अज्ञान का अध्ययन होने के नाते जो लोग नहीं जानते हैं उसकी जांच और उनकी अज्ञानता से निपटने का प्रयास कैसे किया जाता है।''

त्रुटि विश्लेषण एक विधि है जिसका उपयोग शिक्षार्थी की भाषा में दिखाई देने वाली त्रुटियों का दस्तावेजीकरण करने तथा यह निर्धारित करने के लिए किया जाता है कि क्या वे त्रुटियां व्यवस्थित हैं, और बताएं कि उनके कारण क्या हुआ। लक्ष्य भाषा के मूल वक्ता जो सीखने वाली भाषा सुनते हैं, शायद शिक्षार्थियों की त्रुटियों को बहुत ध्यान देने योग्य पाते हैं, हालांकि, जैसा कि हम देखेंगे, सटीकता सीखने वाली भाषा की केवल एक विशेषता है।

जबकि देशी वक्ता समय–समय पर अव्यवस्थित 'प्रदर्शन' त्रुटियाँ करते हैं, दूसरी भाषा सीखने वाले अधिक त्रुटियाँ करते हैं, और अक्सर ऐसी त्रुटियाँ जो कोई भी देशी वक्ता कभी नहीं करता है। एक त्रुटि विश्लेषण को उन त्रुटियों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो उस इनपुट में पैटर्न के व्यवस्थित उल्लंघन हैं जिनसे शिक्षार्थियों को अवगत कराया गया है। ऐसी त्रुटियां हमें सीखने वाले की अंतर्भाषा या सीखी जा रही भाषा के नियमों के अंतर्निहित ज्ञान के बारे में कुछ बताती हैं।

त्रुटि विश्लेषण का सैद्धांतिक पहलू भाषा सीखने की प्रक्रिया की जांच में उपयोग की जाने वाली विधि का हिस्सा है। त्रुटि विश्लेषण का व्यावहारिक पहलू कार्रवाई का मार्गदर्शन करने में इसका कार्य है कि हमें छात्रों या शिक्षक के लिए एक असंतोषजनक स्थिति को ठीक करना चाहिए।

कोर्डर के अनुसार ''त्रुटि विश्लेषण के दो कार्य थेय पहला सैद्धांतिक है और दूसरा व्यावहारिक है। त्रुटि विश्लेषण का सैद्धांतिक पहलू भाषा सीखने की प्रक्रिया की जांच में उपयोग की जाने वाली विधि का हिस्सा है, हमारे पास है वह जो शिक्षण प्राप्त कर रहा है, उसके लिए छात्र के ज्ञान का वर्णन करने का एक साधन। त्रुटि विश्लेषण का व्यावहारिक पहलू कार्रवाई का मार्गदर्शन करने में इसका कार्य है, हमें छात्रों या शिक्षकों के लिए सही कोई संतोषजनक स्थिति नहीं लेनी चाहिए।

लेखक परिभाषित करता है कि एक त्रुटि विश्लेषण एक व्यवस्थित विवरण और शिक्षार्थियों या उपयोगकर्ता द्वारा लक्षित भाषा में उनके मौखिक और लिखित उत्पादन में की गई त्रुटियों के स्पष्टीकरण के रूप में परिभाषित किया गया है। ऐसा लगता है कि त्रुटि विश्लेषण यह पता लगाने के लिए किया जा सकता है कि कोई व्यक्ति किसी भाषा को कितनी अच्छी तरह जानता है, यह पता लगाने के लिए कि व्यक्ति भाषा कैसे सीखता है, सामान्य कठिनाइयों पर या शिक्षण सामग्री की तैयारी में जानकारी प्राप्त करता है।

Notes For Byssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

त्रुटि के प्रकार (Types of Error) :–

अंग्रेजी का अध्ययन करने और विदेशी भाषा के रूप में उपयोग करने में छात्रों द्वारा कुछ प्रकार की त्रुटियाँ होती हैं। दुले (1982) पुस्तक ''त्रुटियों को मुख्य श्रेणियों में विभाजित करती है, वे हैः–omission, substitution, addition, ordering-''

1. चूक की त्रुटियां पहली प्रकार की त्रुटियां हैं चूक की त्रुटि तब होती है जब वाक्य के एक या अधिक तत्व छोड़े जाते हैं। वाक्य के तत्वों को प्रस्तुत किया जाना चाहिए, लेकिन शिक्षार्थी उन्हें प्रस्तुत नहीं करता है। हॉर्नबी के अनुसार ''ओमिशन उन चीजों को पूर्ववत छोड़ रहा है जिन्हें किया जाना चाहिए।

2. प्रतिस्थापन की त्रुटि दूसरी प्रकार की त्रुटि है प्रतिस्थापन की त्रुटि का अर्थ है कि गलत वस्तुओं को सही के स्थान पर चुना गया है। प्रतिस्थापन की त्रुटि तब होती है जब एक वाक्य में कुछ तत्वों को दूसरे द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है। हॉर्नबी के अनुसार ''प्रतिस्थापन दूसरे के लिए कार्य कर रहा है या सेवा कर रहा है।''

3. जोड़ की त्रुटि तीसरे प्रकार की जोड़ की त्रुटि का अर्थ है कि कुछ तत्व पेसेंट हैं जो नहीं होने चाहिए। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि शिक्षार्थी और वाक्य के कुछ तत्वों को वहां नहीं जोड़ा जाना चाहिए। हॉर्नबी के अनुसार ''जोड़ जोड़ने की प्रक्रिया है''

4. आदेश देने में त्रुटि चौथे प्रकार की त्रुटियाँ हैं आदेश देने की त्रुटि वह त्रुटि है जहाँ प्रस्तुत तत्वों को सही ढंग से लेकिन गलत तरीके से अनुक्रमित किया जाता है। हॉर्नबी के अनुसार ''आदेश वह तरीका है जिसमें चीजों को एक दूसरे के संबंध में रखा जाता है।''

यद्यपि कुछ शिक्षार्थी त्रुटियां प्रमुख देशी वक्ता हैं, अन्य, भले ही वे व्यवस्थित हों, उन पर किसी का ध्यान नहीं जा सकता। इस कारण से, सीखने वाले की भाषा में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए अधिक गहन त्रुटि विश्लेषण करना, सभी व्यवस्थित त्रुटियों की पहचान करने का प्रयास करना मूल्यवान है। यह शोधकर्ताओं को सीखने के द्वारा उपयोग की जा रही संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को समझने में मदद कर सकता है, और शिक्षकों को यह तय करने में मदद कर सकता है कि सुधार के लिए किसे लक्षित किया जा सकता है।

Unit :- 5.2 Strategies for teaching handwriting (adaptations), spelling (phonics and spelling rules) and written expression (grammar, ideation, language usage) हस्तलेखन (रूपांतरण), वर्तनी (ध्वन्यात्मकता और वर्तनी नियम) सिखाने की रणनीतियाँ और लिखित अभिव्यक्ति (व्याकरण, विचार, भाषा उपयोग) :– इस विचार के विपरीत कि लिखावट एक तुच्छ कौशल है, हस्तलेखन वास्तव में कई कारणों से महत्वपूर्ण है।

एक में मानसिक संसाधनों की अवधारणा शामिल है, जिसका उल्लेख कई अन्य स्तंभों में किया है, पढ़ने और गणित के साथ–साथ लेखन के संबंध में भी। जिस तरह से शब्द डिकोडिंग से पढ़ने की समझ खराब हो सकती है, या स्वचालित रिकॉल की कमी गणित में उन्नत कम्प्यूटेशनल एल्गोरिदम सीखने के लिए उपलब्ध मानसिक संसाधनों को कम कर सकती है, मेहनती लिखावट लेखन के उच्च–स्तरीय पहलुओं के लिए आवश्यक मानसिक संसाधनों पर , जैसे कि ध्यान देना सामग्री, विवरण का विस्तार, और विचारों का संगठन।

इसके अलावा, जब लिखावट को कठिन और समय लेने वाला माना जाता है, तो लिखने की प्रेरणा बहुत कम हो सकती है, जिससे अभ्यास की कमी हो सकती है जो लेखन के साथ कठिनाइयों को और बढ़ा सकती है।

अंत में, प्रारंभिक ग्रेड में हस्तलेखन बुनियादी पढ़ने और वर्तनी उपलब्धि से जुड़ा हुआ हैय उदाहरण के लिए, जब बच्चे उ अक्षर बनाना सीखते हैं, तो वे उसकी ध्वनि भी सीख सकते हैं। हस्तलेखन, पढ़ने और वर्तनी कौशल के बीच संबंधों पर ध्यान इन क्षेत्रों में प्रारंभिक उपलब्धि को सुदृढ़ करने में मदद कर सकता है।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

हस्तलेखन निर्देश के चार मुख्य पहलू हैंः पेंसिल ग्रैस्प, फॉर्मेशन, सुपाठ्यता और पेसिंग। (pencil grasp, formation, legibility, and pacing.)

पेंसिल ग्रैस्प :– जब बात आती है कि कोई बच्चा पेंसिल कैसे पकड़ता है, तो ग्रैस्प सही और गलत होते हैं। सही ग्रैस्प्स–जिसमें तर्जनी और अंगूठा पेंसिल को मध्यमा उंगली से पकड़ते हैं–परिणामस्वरूप आरामदायक और कुशल लिखावट होती है, जबकि गलत ग्रैप्स खराब अक्षर निर्माण और थकान का कारण बन सकते हैं। एक कमजोर पेंसिल पकड़ वाले छात्र को पेंसिल ग्रिप जैसे उपकरणों का उपयोग करने से या अनामिका के चारों ओर एक रबर बैंड लपेटने से लाभ हो सकता है–बहुत कसकर नहीं!–उन्हें हाथ से मोड़ने के लिए। आप ''पिंच एंड फ्लिप'' ट्रिक भी सिखा सकते हैंः छात्र पेंसिल को लेखन के अंत के साथ रखता है, अंगूठे और तर्जनी के बीच पेंसिल को पिन करता है, और पेंसिल को सही स्थिति में फ्लिप करता है।

गठन (Formation) :– यह दर्शाता है कि एक छात्र पत्र बनाने के बारे में कैसे जाता है। छात्रों के लिए घुमावदार रेखाओं की तुलना में सीधी रेखाएँ लिखना आसान होता है, इसलिए छात्रों को छोटे अक्षरों में जाने से पहले बड़े अक्षरों को लिखना सिखाना विकास की दृष्टि से उपयुक्त है। यह महत्वपूर्ण है कि हस्तलेखन निर्देश को ध्वन्यात्मक निर्देश के साथ एकीकृत किया जाएः जैसे–जैसे छात्र अक्षर लिखना सीखते हैं, उन्हें अक्षरों से बनने वाली ध्वनियों को सीखना और उनका अभ्यास करना चाहिए। हस्तलेखन और श्रुतलेख गतिविधियाँ किसी भी बहुसंवेदी ध्वन्यात्मक निर्देश कार्यक्रम की आधारशिला हैं, क्योंकि छात्रों को ध्वनियों से जोड़ने के दौरान अक्षरों को बनाने का लगातार अभ्यास करने की आवश्यकता होती है, जो मस्तिष्क में बेहतर ध्वन्यात्मक अवधारणाओं को एम्बेड करने का काम करेगा।

सुपाठ्यता (Legibility) :– सुपाठ्यता को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक शब्दों के बीच अंतर है। छात्रों को शब्दों के बीच ''उंगली की जगह'' का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना सहायक होता है– दाएं हाथ के छात्र अगले एक को लिखने से पहले एक शब्द के बाद तर्जनी को लाइन पर रख सकते हैं। यह तकनीक बाएं हाथ के छात्रों के लिए काम नहीं करती है ।

पेसिंग (Pacing) :– यदि छात्र एक उपयुक्त पेंसिल ग्रैस्प का उपयोग कर रहे हैं और अक्षरों को सही ढंग से बना रहे हैं, तो यह अक्सर किसी भी पेसिंग चुनौतियों का समाधान करेगा। पेसिंग को देखते समय विचार करने के लिए एक अन्य कारक प्रेस हैः छात्रों को कागज पर पेंसिल को बहुत मुश्किल से नहीं दबाना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से लेखन थकान हो सकती है और पत्र उत्पादन की दर बहुत कम हो सकती है। लेकिन अगर वे बहुत हल्के से दबाते हैं, तो यह कमजोर मांसपेशियों या अनुचित पेंसिल ग्रैस्प का संकेत हो सकता है। छात्रों को विभिन्न प्रकार की सामग्रियों (मार्कर, छोटी पेंसिल, क्रेयॉन, व्हाइटबोर्ड पर इरेजेबल मार्कर) के साथ लिखने के लिए प्रोत्साहित करें ताकि उन्हें यह समायोजित करने में मदद मिल सके कि वे कितनी मेहनत करते हैं।

अनुकूलन (Adaptations) कक्षा सामग्री और दिनचर्या (Classroom materials and routines) :–

• छात्र के लिए सबसे अच्छा क्या काम करता है यह देखने के लिए पेंसिल पकड़ या विभिन्न प्रकार के पेन या पेंसिल प्रदान करें।

• हैंडआउट प्रदान करें ताकि बोर्ड से कॉपी करने के लिए कम हो।

• छात्र को नोट्स लेने में मदद करने के लिए कक्षा के नोट्स या पाठ की रूपरेखा की टाइप की गई प्रतियां प्रदान करें। नोट्स लेने और सामग्री की प्रतिलिपि बनाने के लिए अतिरिक्त समय दें।

• विद्यार्थी को कक्षा में ऑडियो रिकॉर्डर या लैपटॉप का उपयोग करने दें।

• सही जगह पर अक्षरों को बनाने में मदद करने के लिए अलग–अलग रंगों या उभरी हुई रेखाओं के साथ कागज उपलब्ध कराएं।

• गणित की समस्याओं को हल करने में मदद करने के लिए ग्राफ पेपर प्रदान करें।

निर्देश देना (Giving instructions) :–

• पहले से भरे हुए नाम, तिथि, शीर्षक आदि के साथ पेपर असाइनमेंट प्रदान करें।

• जल्दी से असाइनमेंट लिखना शुरू करने के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करें।

• लेखन कार्य को चरणों में विभाजित करने में छात्र की सहायता करें ।

• एक रूब्रिक प्रदान करें और समझाएं कि प्रत्येक चरण को कैसे वर्गीकृत किया जाता है।

• समाप्त किए गए सत्रीय कार्यों के उदाहरण दीजिए।

• लिखित प्रतिक्रियाओं के विकल्प पेश करें, जैसे मौखिक रिपोर्ट देना।

परीक्षण और असाइनमेंट पूरा करना (Completing tests and assignments) :–

• हस्तलेखन में कटौती करने के लिए परीक्षण प्रारूपों को अपनाएं। उदाहरण के लिए, ''उत्तर पर गोला बनाएं'' या ''रिक्त स्थान भरें'' प्रश्नों का उपयोग करें।

• छात्र जो जानता है उसके आधार पर ग्रेड, लिखावट या वर्तनी पर नहीं।

• एक लेखक या भाषण–से–पाठ का उपयोग करें ताकि छात्र परीक्षा के उत्तर और लेखन कार्य लिख सकें।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

• छात्र को हस्तलिखित प्रतिक्रियाओं के लिए या तो प्रिंट करने या कर्सिव का उपयोग करने का विकल्प चुनने दें। त्रुटियों को देखने के लिए ''प्रूफरीडर'' को अनुमति दें।

• परीक्षणों पर विस्तारित समय प्रदान करें।

• यदि आवश्यक हो तो परीक्षण के लिए एक शांत कमरा प्रदान करें।

वर्तनी (ध्वन्यात्मकता और वर्तनी नियम) Spelling (phonics and spelling rules) :– हस्तलेखन में कई परतें होती हैं। उसमें शामिल हैः

• 42 स्वरों (ध्वनियों) के लिए वर्णमाला कोड को जानना और इन अक्षर आकृतियों को सही स्वरों से जोड़ना।

• अपरकेस और लोअरकेस अक्षरों दोनों के लिए ट्राइपॉड ग्रिप का उपयोग करके अक्षर निर्माण सीखना ।

• फोनेम के अनुसार अपर और लोअर केस दोनों को जोड़ना।

• एक पृष्ठ पर पंक्तियों के भीतर इन अक्षर आकृतियों की स्थिति जानना।

अनुसंधान ने लगातार प्रदर्शित किया है कि एक सफल साक्षरता कार्यक्रम सबसे प्रभावी होता है, जब इसमें स्पष्ट निर्देश शामिल होते हैं जो छात्रों को अलग–अलग शब्दों को सही ढंग से पढ़ने और वर्तनी करने की क्षमता और विभिन्न भाषा–आधारित प्रक्रियाओं को समझने और उपयोग करने की उनकी क्षमता में सुधार करने के लिए डिजाइन किया गया है।

प्रभावी पठन और वर्तनी निर्देश के घटकों में शामिल हैं:

- स्पष्ट और व्यवस्थित ध्वन्यात्मक जागरूकता निर्देश।
- व्यवस्थित रूप से अनुक्रमित ध्वन्यात्मक निर्देश।
- पठन प्रवाह में सुधार के लिए उचित त्रुटि सुधार और प्रतिक्रिया के साथ निर्देशित और बार–बार मौखिक पठन ।
- शब्दावली, पढ़ने की समझ और वर्तनी रणनीतियों में प्रत्यक्ष निर्देश।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

पढ़ना और वर्तनी सीखना अनिवार्य रूप से एक कोड सीखना है। हम जिन अक्षरों का उपयोग करते हैं, वे अंग्रेजी की वाक् ध्वनियों के लिए केवल प्रतीक या लिखित कोड हैं। वर्णमाला के अक्षरों और उनके द्वारा प्रतिनिधित्व की जाने वाली भाषण ध्वनियों के बीच संबंधों के बारे में सीखना हमें ''कोड को क्रैक'' करने और पढ़ने (डीकोड) और वर्तनी (एन्कोड) दोनों को सीखने की अनुमति देता है।

सिंथेटिक फोनिक्स बच्चों को पढ़ना और वर्तनी सिखाने का एक तरीका है। इसे यहां और विदेशों में पढ़ने और वर्तनी के शिक्षण के लिए सबसे सफल दृष्टिकोण के रूप में पहचाना गया है। 'सिंथेटिक' घटक 'संश्लेषण', या एक साथ सम्मिश्रण के अभ्यास को दर्शाता है। 'ध्वन्यात्मक' भाग व्यक्तिगत भाषण ध्वनियों (स्वनिम) को लिखित प्रतीकों (ग्राफेम) से जोड़ने की प्रक्रिया को दर्शाता है। अनिवार्य रूप से, जब कोई बच्चा सिंथेटिक फोनिक्स का उपयोग करके पढ़ना सीखता है तो वे अक्षरों को वाक् ध्वनियों से जोड़ना सीखते हैं और फिर शब्दों को पढ़ने के लिए इन ध्वनियों को एक साथ मिलाते हैं। वे शब्दों को अपनी घटक ध्वनियों में अलग करना सीखते हैं और इन ध्वनियों को अक्षरों से जोड़कर उनका उच्चारण करते हैं।

भाषण ध्वनियों को सुनने, अलग करने, मिश्रण करने और हेरफेर करने की क्षमता एक बच्चे की ध्वन्यात्मक और ध्वन्यात्मक जागरूकता क्षमता पर निर्भर है। साक्षरता संबंधी सीखने की कठिनाइयों वाले बच्चों को इन कौशलों को विकसित करने के लिए अक्सर अतिरिक्त सहायता और हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है।

एक अच्छे साक्षरता कार्यक्रम में शब्दावली में स्पष्ट निर्देश, प्रवाह को पढ़ने और समझने की रणनीतियों को पढ़ना शामिल है। इस निर्देश को माध्यमिक विद्यालय के वर्षों में विस्तारित किया जाना चाहिए, विशेष रूप से स्कूल परिवर्तन की

मांगों के रूप में और छात्रों को काफी अधिक जटिल शब्दावली और समझ की रणनीतियों के उपयोग में अधिक रणनीतिक होने की आवश्यकता है।

लिखित अभिव्यक्ति (व्याकरण, विचार, भाषा उपयोग) Written expression (grammar, ideation, language usage) :– प्रारंभिक लेखन निर्देश में इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि लिखित भाषा अर्थ बताती है। जैसे पाठक पढ़ते समय समझ की निगरानी करते हैं, वैसे ही लेखक अपने लेखन की बोधगम्यता की निगरानी करते हैं। शिक्षक को लगातार छात्रों से यह सुनिश्चित करने के लिए अपने लेखन को फिर से पढ़ने के लिए कहना चाहिए कि यह समझ में आता है और वे वही लिख रहे हैं जो वे कहना चाहते हैं। बार–बार पढ़ने से अक्सर संशोधन होता है। लिखित अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक सभी कौशल सीखने के लिए, छात्रों को सीखे गए कौशल का अभ्यास करने और लागू करने के कई अवसरों के साथ एक उच्च संरचित, स्पष्ट, व्यवस्थित शिक्षण दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

छात्रों को पढ़ते समय ग्रंथों की विशेषताओं और संरचनाओं की पहचान करना सिखाया जाना चाहिए और अपनी बोली जाने वाली भाषा को लिखित कार्य में स्थानांतरित करने की दिशा में काम करना चाहिए। छात्रों को उपयुक्त वाक्यों और अनुच्छेदों के निर्माण के लिए संरचना और रणनीतियों के साथ प्रदान करना, और सरल ग्रंथों की संरचना, उन्हें उच्च प्राथमिक और माध्यमिक वर्षों में प्रभावी ढंग से लिखने के लिए आवश्यक आधारभूत कौशल प्रदान करेगी।

लिखित अभिव्यक्ति के प्रभावी शिक्षण के निकट आने पर, एक सशक्त साक्षरता कार्यक्रम में निम्नलिखित शामिल होंगेः–

- लिखित भाषा सम्मेलनों और साहित्यिक तकनीकों का स्पष्ट और संरचित शिक्षण।
- साहित्यिक शैलियों और पाठ संरचनाओं में प्रत्यक्ष और स्पष्ट निर्देश प्रवाह में सुधार के लिए निर्देशित और रचना अभ्यास।
- शब्दावली और शब्द चयन में प्रत्यक्ष और मजबूत निर्देश ।
- बोली जाने वाली व्याकरणिक संरचना का स्पष्ट शिक्षण और लिखित भाषा ।

छात्रों को मिश्रित और जटिल वाक्य लिखना सीखने से पहले सरल, व्याकरणिक रूप से सही वाक्य लिखना सिखाया जाना चाहिए। वाक्य–स्तर की गतिविधियों को बुनियादी संपादन कौशल भी सिखाना चाहिए। व्याकरण को शब्दों के संयोजन और वाक्यों के निर्माण के संदर्भ में पढ़ाया जाना चाहिए, न कि केवल भाषण के कुछ हिस्सों का अलगाव में विश्लेषण करना। विचारों और विचारों को सार्थक रूप से संप्रेषित करने के लिए शब्दों को जोड़ा जाना चाहिए। विचारों के सृजन और संगठन का समर्थन करने के लिए वर्ड बैंक एक उपयोगी उपकरण हो सकता हैय हालाँकि, छात्रों को शब्दों के कार्य और उनके लेखन में उनका उपयोग कैसे करना है, यह भी सिखाया जाना चाहिए।

विचार विचारों या अवधारणाओं का निर्माण है। छात्र लेखन में विचार बहुत महत्वपूर्ण है। छात्र रचनात्मक सोच विधियों और प्रक्रियाओं को प्राप्त करेंगे और निष्पादित करेंगे और प्रश्न और समाधान उत्पन्न करने के लिए डिजाइन सोच की चक्रीय प्रक्रिया की समझ विकसित करेंगे। विभिन्न समस्या–समाधान तकनीकों का उपयोग करके आविष्कारशील अवधारणाओं का विकास करना, जैसे अभिसरण सोच। और दृश्य क्रियाओं, छवियों, वस्तुओं और प्रतीकों, प्राकृतिक के रूप में प्रस्तुत जानकारी की व्याख्या, पहचान, निर्माण, सराहना और बातचीत करने के लिए बुनियादी क्षमताओं का भी विकास करना।

Unit :- 5.3. Strategies for teaching math (number facts, computation, application) गणित पढ़ाने की रणनीतियाँ (संख्या तथ्य, गणना, अनुप्रयोग) :– उच्च–गुणवत्ता वाले साक्षरता निर्देश के सिद्धांतों के समान, संख्यात्मकता के प्रारंभिक शिक्षण को सावधानीपूर्वक अनुक्रमित, उच्च संरचित और स्पष्ट होना चाहिए।

गणित के प्रभावी शिक्षण के निकट आने पर, मजबूत संख्यात्मक कार्यक्रम में निम्नलिखित शामिल होंगेः

- संख्या बोध के निर्माण में स्पष्ट और व्यवस्थित निर्देश ।

EXAM TRICKY Notes For Pyssum SPECIAL EDUCATION

• प्रभावी गणना रणनीतियों का निर्देशित और बार–बार अभ्यास ।

• गणना तकनीकों में प्रत्यक्ष और व्यवस्थित निर्देश (प्रक्रियात्मक ज्ञान) ।

• गणित की भाषा में प्रत्यक्ष निर्देश।

बच्चों के गणित के विकास में देखे गए व्यक्तिगत अंतर अक्सर उनकी अंतर्निहित अनुमानित संख्या प्रणाली के विकास में भिन्नता से संबंधित होते हैं। अंक ज्ञान प्रारंभिक वर्षों में संख्यात्मक कौशल के अधिग्रहण के लिए सबसे महत्वपूर्ण विकासों में से एक है और इसे प्राथमिक विद्यालय में गणितीय दक्षता के सबसे बड़े भविष्यवाणियों में से एक के रूप में देखा जाता है।

संख्या के अर्थ में देरी से न केवल प्रभावी गणना तकनीकों का उपयोग करने की क्षमता कम हो जाती है, बल्कि वे गणित के तर्क कौशल और संख्या तथ्य भंडारण के विकास को भी कम कर देते हैं, जिससे छात्र की रणनीतिक गिनती का उपयोग करने की क्षमता कम हो जाती है, आधार –10 संख्या प्रणाली को समझ सकते हैं और जगह के साथ काम कर सकते हैं। मूल्य, आकलन कौशल का उपयोग उनके उत्तरों की जांच करने के लिए, आवश्यकता पड़ने पर कम्प्यूटेशनल रणनीतियों को बदलने और गणित की भाषा की समझ विकसित करने के लिए हैं। एक अच्छी तरह से गोल संख्यात्मक कार्यक्रम स्पष्ट रूप से इन नींव कौशल को सिखाता है और उच्च क्रम गणितीय कार्यों से निपटने के दौरान नियमित रूप से इन घटक कौशल का पूर्वाभ्यास और समीक्षा करता है। संख्या सरल जोड़, घटाव, गुणा और भाग तथ्य हैं जिन्हें कभी–कभी संख्या बांड के रूप में जाना जाता है।

बच्चे 4 और 10 साल की उम्र के बीच इन बुनियादी तथ्यों को सीखते हैं। अपने प्राथमिक स्कूल के अनुभव के दौरान, उन्हें इन महत्वपूर्ण तथ्यों को पढ़ाया जाएगा और उन्हें अभ्यास और याद रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा जब तक कि उन्हें थोड़ी सी कसरत के साथ तुरंत याद नहीं किया जा सके। आपके बच्चे के सीखने के लिए संख्या तथ्य महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे उच्च–स्तरीय गणित कौशल के लिए बिल्डिंग ब्लॉक बनाते हैं।

बड़ी संख्याओं को जोड़ना और घटाना, लंबा गुणा और भाग करना, समय बताना और पैसे गिनना ये सभी गणित की अवधारणाएँ हैं जिनका सामना बच्चों को अपने जीवन में जल्दी होगा। इसलिए, उन्होंने संख्या तथ्यों में महारत हासिल कर ली है, उन्हें समस्याओं को और अधिक तेजी से हल करना और संख्याओं के बीच संबंध को समझना आसान हो जाएगा, जैसे कि कैसे 4–2=2, 2÷2=4 के कारण।

स्कूल में बच्चों को संख्या तथ्य कैसे पढ़ाया जाता है।

जोड़ और घटाव की अवधारणा को पेश करते समय शिक्षक संख्याओं के ठोस निरूपण के साथ शुरू करते हैं।

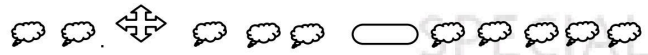

फिर सचित्र निरूपण पर जाएँ (बिंदुओं का उपयोग करके):–

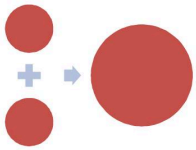

और अंत में अमूर्त प्रतीकों (अंकों) परः 5

3÷5 = 8

एक बार जब वे जोड़, घटाव, गुणा और भाग की अवधारणा से परिचित हो जाते हैं तो बच्चे संख्या तथ्यों को याद करना शुरू कर देते हैं और जल्दी याद करने का अभ्यास करते हैं। फ्लैश कार्ड, फैक्ट ट्राएंगल, फैक्ट फैमिली, गेम्स, आईसीटी गेम्स जैसे तरीकों का इस्तेमाल मजेदार तरीके से त्वरित रिकॉल को बेहतर बनाने के लिए किया जाता है। बच्चों को संख्या तथ्यों को

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

याद रखने में मदद करने के लिए कक्षा में प्रदर्शन भी हो सकते हैं। संख्या तथ्यों का नियमित रूप से अभ्यास करने की आवश्यकता है ताकि कुछ स्कूल साप्ताहिक समय सारिणी परीक्षण चुनौतियां भी कर सकें।

छात्रों को अपनी स्वयं की परिचालन प्रक्रियाओं का आविष्कार करने और साझा करने का अवसर देने से निम्नलिखित लाभ होते है :–

• बच्चे समस्याओं को हल करने के लिए अधिक प्रेरित होते हैं जब उन्हें केवल एक रटने की प्रक्रिया का पालन करने के बजाय अपनी रणनीतियों के साथ आना पड़ता है।

• विभिन्न सीखने की शैलियों वाले बच्चों को समस्या–समाधान के विकल्प दिए जाते हैं। वे समस्याओं का प्रतिनिधित्व करने और उन्हें हल करने के लिए जोड़तोड़, चित्र, मौखिक और लिखित शब्दों, या प्रतीकों का उपयोग करना चुन सकते हैं।

• बच्चे समस्याओं को आसानी से हल होने वाली समान समस्याओं में बदलने में माहिर हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, 30–17, 30–10–7 के बराबर है।

• जब बच्चे अन्य बच्चों के साथ अपने स्वयं के एल्गोरिदम की व्याख्या और चर्चा करते हैं, तो वे संचालन के अर्थ को आंतरिक रूप से समझते हैं और एक दूसरे से सीखते हैं। बच्चों की चर्चाएं मूल्यवान जानकारी भी प्रदान करती हैं जो शिक्षकों को उनकी संख्यात्मक सोच के विकास का आकलन करने में मदद कर सकती हैं।

बच्चों को अपने स्वयं के संचालन प्रक्रियाओं के साथ प्रयोग करने के अवसर मिलने के बाद, उन्हें मानक एल्गोरिदम और कई वैकल्पिक एल्गोरिदम से परिचित कराया जाता है। बहु–अंकीय जोड़ और घटाव एल्गोरिदम औपचारिक रूप से दूसरी कक्षा में पेश किए गए हैं, और अधिकांश बच्चों को चौथी कक्षा की शुरुआत तक प्रत्येक ऑपरेशन के लिए कम से कम एक एल्गोरिदम के उपयोग में कुशल होना चाहिए। डिवीजन एल्गोरिदम को चौथी कक्षा में पेश किया गया है, जिसमें पांचवीं कक्षा में अपेक्षित दक्षता है।

Unit :- 5.4 Strategies to develop Metacognition (मेटाकॉग्निशन विकसित करने की रणनीतियाँ) :– शब्द ''मेटाकॉग्निशन'' ग्रीक मूल शब्द ''मेटा'' से लिया गया है जिसका अर्थ है ''परे'' और लैटिन शब्द ''कॉग्नोसेरे'' जिसका अर्थ है ''जानना''। लेकिन उपसर्ग ''मेटा'' के अधिक आधुनिक उपयोग के साथ, इसे अब आमतौर पर ''सोच के बारे में सोच'' के रूप में परिभाषित किया जाता है। मेटाकॉग्निशन आपके सोचने के तरीके को प्रतिबिंबित करने और गंभीर रूप से विश्लेषण करने की क्षमता है। अनिवार्य रूप से, इसे आत्म–जागरूकता के रूप में सबसे अच्छा माना जाता है जो व्यक्तियों को उनके प्रदर्शन की निगरानी, चिंतन और विश्लेषण करने में सक्षम बनाता है। जो छात्र ऐसा कर सकते हैं, उनके अधिक कुशलता से, अधिक प्रभावी ढंग से सीखने की संभावना अधिक होती है और इसलिए वे अधिक प्रगति करते हैं।

मेटाकॉग्निशन एक शब्द है जिसका उपयोग उन तरीकों के लिए किया जाता है जो शिक्षार्थियों को यह समझने में मदद कर सकते हैं कि वे कैसे सीखते हैं। दूसरे शब्दों में, मेटाकॉग्निशन का अर्थ है शिक्षार्थियों के लिए 'सोचने' के लिए बनाई गई प्रक्रियाएं कि वे कैसे सोचते हैं। मेटाकॉग्निशन शिक्षार्थियों को उनके व्यक्तिगत सीखने के अनुभवों और उन गतिविधियों के बारे में जागरूक होने में मदद करता है जो वे खुद को पेशेवर और व्यक्तिगत विकास की दिशा में अपने पथ में शामिल करते हैं। मेटाकॉग्निटिव गतिविधियों के कुछ उदाहरणों में शामिल हैं: सीखने के कार्य को करने की योजना बनाना, किसी समस्या को हल करने के लिए उपयुक्त रणनीतियों और कौशल को लागू करना, किसी कार्य को पूरा करने की दिशा में अपनी प्रगति का मूल्यांकन करने के परिणामस्वरूप आत्म–मूल्यांकन और आत्म–सुधार।

मेटाकॉग्निशन छात्र सीखने में फायदेमंद होता है क्योंकि यह शिक्षार्थियों को इस बात पर प्रतिबिंबित करने की अनुमति देता है कि वे क्या जानते हैं, वे कौन हैं, वे क्या जानना चाहते हैं, और वे उस बिंदु तक कैसे पहुंच सकते हैं। चिंतन सीखने और सिखाने का एक महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षकों को अपने अभ्यास में चिंतनशील होना चाहिए ताकि वे बढ़ते रह सकें, अपने छात्रों की जरूरतों को पूरा करना जारी रख सकें और अपने स्वयं के विकास और कौशल का मूल्यांकन कर सकें। छात्रों को प्रतिबिंब का अभ्यास करने के लिए प्रेरित करना महत्वपूर्ण है ताकि वे अपनी व्यक्तिगत चिंतनशील प्रथाओं का निर्माण कर सकें और अपने भविष्य की तैयारी के लिए मेटाकोग्निटिव कौशल विकसित कर सकें। स्ट्रक्चरल लर्निंग में, हम तर्क देते हैं कि कक्षा संस्कृति मेटाकॉग्निटिव मानसिकता विकसित करने के लिए एक महत्वपूर्ण चालक है। यदि सीखने के बारे में बात करना आपके दिन–प्रतिदिन के कक्षा अभ्यास का हिस्सा है तो आपके शिष्य आधे रास्ते में हैं। सामग्री ज्ञान और प्रक्रियात्मक ज्ञान दोनों का एक स्वस्थ संतुलन विकसित

करना एक मौलिक कक्षा चुनौती है। हम बच्चों को अनुभूति के बारे में उनके ज्ञान को विकसित करने में मदद कर रहे हैं और वे इसे और अधिक प्रभावी ढंग से कैसे प्रबंधित कर सकते हैं ।

रोजमर्रा के शिक्षण के हिस्से के रूप में, मेटाकोग्निटिव रणनीतियों को एम्बेड करने के लिए उपयोग की जाने वाली कुछ सबसे सामान्य रणनीतियाँ हैं :–

स्पष्ट शिक्षण (Eplicit teaching) :– पूर्व ज्ञान को सक्रिय करने, नए ज्ञान और कौशल का परिचय देने, ज्ञान और कौशल के अनुप्रयोग को मॉडलिंग करने और स्वतंत्र अभ्यास और प्रतिबिंब के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करने पर ध्यान देने के साथ।

छात्रों को उनके काम,सीखने की योजना बनाने, निगरानी करने और मूल्यांकन करने में सहायता करना (Supporting students to plan, monitor, and evaluate their work learning :– इन क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से शिक्षण कौशल, और इन चरणों के आसपास काम की संरचना करना, छात्रों को इन तकनीकों को धीरे–धीरे आंतरिक बनाने और अपने स्वयं के सीखने पर नियंत्रण रखने के लिए उनका उपयोग करने का अवसर देगा।

(रूब्रिक विकसित करना और जहां भी संभव हो उन्हें छात्रों के साथ सह–डिजाइन करना) (Developing rubrics and wherever possible co & designing them with students):– सीखने की निगरानी और विशिष्ट, मापने योग्य, प्राप्त करने योग्य, यथार्थवादी और समय पर (स्मार्ट) व्यक्तिगत सीखने के लक्ष्यों की स्थापना के साथ छात्रों की सहायता करें।

सोच की मॉडलिंग (Modelling of thinking) :– समस्याओं पर विचार करने, विश्लेषण करने और हल करने के लिए उपयोग की जाने वाली विचार प्रक्रियाओं को मौखिक रूप दें। यह 'जोर से सोचने' जितना आसान हो सकता है ।

प्रश्न करना (Questioning) :– छात्रों को संलग्न करने के लिए प्रश्नों का उपयोग करने, उनकी प्रगति की निगरानी करने और उनकी सोच को प्रोत्साहित करने के साथ–साथ फीडबैक के रूप में छात्रों के प्रश्नों का मूल्यांकन करने और सीखने के स्पष्टीकरण विस्तार के अवसर दोनों के संदर्भ में।

Notes For Pyssun
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

Unit :- 5.5 Peer-tutoring, co-operative learning, Co-teaching strategies (पीयर–ट्यूटरिंग, को–ऑपरेटिव लर्निंग, को–टीचिंग स्ट्रैटेजी) :–

Peer Tutoring (सहकर्मी शिक्षण) :– सहकर्मी शिक्षण प्रारूप का उपयोग क्रमिक तौर पर 1975 के प्रारम्भ में किया गया , परन्तु इसकी लोकप्रियता इसके उपयोग के सन्दर्भ में शोध साक्ष्यों के उपरान्त बीसवीं शताब्दी के अन्त में देखी गयी । सहकर्मी शिक्षण का अध्ययन विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन सहित कई क्षेत्रों में किये जाने के साथ – साथ कौशल क्षेत्र जैसे– पढ़ने में भी किया गया है । सहकर्मी शिक्षण को शिक्षण – कक्ष में भी प्रभावी तौर पर कार्यान्वित किया गया है जिसमें विविध अधिगम आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है , जैसे– अक्षमताग्रस्त विद्यार्थी तथा जिन विद्यार्थियों की अंग्रेजी द्वितीयक भाषा है । सहकर्मी शिक्षण एक साधारण शब्द है जो कई शिक्षण प्रारूपों को सम्मिलित करता है । सभी विधियों की संरचना विद्यार्थियों का अभ्यास , प्रतिउत्तर एवं प्रतिपुष्टि बढ़ाने के लिए की गयी है , और प्रायः इसके परिणामतः विद्यार्थी की प्रेरणा एवं उपलब्धि में वृद्धि होती है । ये प्रारूप अलग होते हैं कि कैसे शिक्षण जोड़े तैयार किये गये हैं , कैसे शिक्षण विषय – कार्य विकसित किये गये हैं , तथा कितनी व्यापकता से शिक्षक का उपयोग किया गया है । उदाहरण के लिए– प्रतिकूल उम्र शिक्षण में विशेषज्ञ शिक्षक अधिक उम्र का विद्यार्थी होता है , तथा जबकि पारस्परिक सहकर्मी शिक्षण एवं कक्षा कार्य सहकर्मी शिक्षण में दोनों विद्यार्थी समान उम्र के होते तथा भूमिका बदल भी सकती है । अलग – उम्र एवं पारस्परिक सहकर्मी शिक्षण में आमतौर पर शिक्षक सामग्री की जानकारी करने और फिर दूसरे विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए जिम्मेदार होता है, जबकि शिक्षण कक्ष सहकर्मी शिक्षण में शिक्षक की जिम्मेदारी अधिक होती है।

सहकर्मी सहायक शिक्षण की रणनीतियां एक सहकर्मी शिक्षण क्रिया है जिस पर एल.के.जी से लेकर कक्षा 12 तक शोध किया जा चुका है। शिक्षण कार्यक्रम की संरचना विद्यार्थियों को पठान एवं अन्य शैक्षणिक कौशल क्षेत्रों में सुधार हेतु सहयोग के लिए की गई है। इस शिक्षण कार्यक्रम की संरचना विद्यार्थियों को पठान एवं अन्य शैक्षणिक कौशल क्षेत्रों में सुधार हेतु सहयोग के लिए की गई है। पठन कार्यक्रम के चरण –

(अ) पूर्वानुमान लगाना।

(ब) साझेदारी पठन ।

(स) पुनः बताना ।

(द) संक्षिप्तीकरण।

इस कार्यक्रम में मजबूत पाठक विशेषज्ञ सहकर्मी शिक्षक होता है। विद्यार्थी उसके पूर्वानुमान से प्राप्त करते हैं , विद्यार्थी उसके पूर्वानुमान से प्रारंभ करते हैं जिसे उन्हें पढ़ना है। उसके बाद में सामान अंश को सशक्त पाठक के साथ पढ़ते हैं।

सहकर्मी शिक्षण का अभिप्राय (Purpose of Peer Tutoring) :– सहकर्मी शिक्षण में सक्रिय होने के कई कारण हैं। इसके प्रमुख कारण हैं– सहकर्मी शिक्षक एवं विद्यार्थी। यहां कुछ अत्यंत सहयोगी पहलू दिए जा रहे हैं , जिससे सहकर्मी शिक्षण प्राप्त किया जा सकता है–

- भारतीय संस्कृति तथा कई अन्य संस्कृतियों में, समान आयु वर्ग से सीखने की प्राकृतिक प्रवृत्ति है । अधिकांश लोग समान युग के व्यक्ति के साथ कार्य करना तथा प्रश्न पूछने में अधिक आरामदायक महसूस करते हैं, क्योंकि वहां शक्ति गतिशीलता कम होती है और शिक्षक एवं विद्यार्थी के बीच अंतर होता है।
- सहकर्मी शिक्षण सहकर्मी शिक्षक तथा विद्यार्थी दोनों की जानकारियों को अच्छी तरह से समझने का अवसर प्रदान करता है, जैसे– सहकर्मी शिक्षक एवं विद्यार्थी नियत कार्य को करते एवं अवधारणा का अभ्यास करते हैं , दोनों लोग सामग्री के प्रति व्यापक एवं गहरी समझ विकसित करते हैं।
- सहकर्मी शिक्षक न सिर्फ उपयोगी प्रश्न पूछना सीखता है , बल्कि सामाजिक श्रवण कौशल भी विकसित करता है । जो व्यवसायिक जगत की एक महत्वपूर्ण योग्यता होती है।

सहकर्मी शिक्षण के लाभ (Advantages of Peer Tutoring) :– सहकर्मी शिक्षण विद्यार्थियों को एक दूसरे का सहयोग करने एवं आगे बढ़ने की अपेक्षा करता है। अवधारणा का राष्ट्रीय शिक्षा संघ तथा अमेरिका के राष्ट्रीय शिक्षण संघ द्वारा मजबूती से समर्थन किया गया है। अभिलेख के परिणाम में सम्मिलित है – शैक्षणिक उपलब्धि में लाभ एवं मजबूत सहकर्मी संबंध। दूसरी तरफ सहकर्मी शिक्षण अप्रभावी एवं शिक्षकों के लिए बोझ हो सकता है। यह कार्यक्रम कम प्रतिक्रिया एवं बजट में अधिक कार्य करने का प्रयास है। सहकर्मी शिक्षण गुणवत्ता पूर्वक शिक्षण कक्ष निर्देशन को विकल्प दे सकता है, परंतु हटा नहीं सकता है। सहकर्मी शिक्षण के प्रमुख लाभ निम्नलिखित हो सकते हैं।

शैक्षणिक उपलब्धि :– सहकर्मी शिक्षक अपने सहपाठी या छोटे विद्यार्थी को सामग्री पढ़ाते हुए स्वयं भी सीखता है । शिक्षक द्वारा दी गई नई सामग्री को विद्यार्थी को समझने के लिए सहकर्मी शिक्षक को उनकी क्रियात्मकता एवं महत्वपूर्ण विचार कौशल उपयोग करने की चुनौती होती है। ट्यूशन पढ़ते हुए विद्यार्थी समझना सुनिश्चित करने के लिए प्रश्न पूछ सकते हैं। दोनों विद्यार्थी के लिए दोहराना अवधारणा को सहयोग करती है। राष्ट्रीय शिक्षा संघ सुझाव देता है कि सहकर्मी शिक्षण प्रेरणा को बढ़ाता है तथा कक्षा के संपूर्ण शैक्षणिक प्रदर्शन को सुधारता है ।

व्यक्तिगत वृद्धि :– राष्ट्रीय शिक्षक संघ इंगित करता है सहकर्मी शिक्षण में सम्मिलित विद्यार्थी अधिगम एवं विद्यालय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करते हैं। जो विद्यार्थी सहकर्मी शिक्षा प्राप्त करते हैं वह कुछ वस्तुओं से कम डरते या दूरी बनाते हैं। सहकर्मी शिक्षण यह जानते हुए गर्व की भावना एवं स्वयं को लायक समझते हैं कि वे दूसरे विद्यार्थी के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के योग्य हैं। सहकर्मी शिक्षण में सहकर्मी शिक्षक– एक विद्यार्थी के आत्मविश्वास को बढ़ाता है, जिससे वे बिना शिक्षक के सहयोग के कठिन कार्य एवं अमूर्त अवधारणा को सीखने के योग्य हो जाते हैं।

सहकारी शिक्षा (Co & operative learning) :– सहकारी शिक्षा का उद्देश्य कक्षा गतिविधियों को व्यवस्थित करना है। इसके अलावा, इसका उद्देश्य सामाजिक और शैक्षिक सीखने के अनुभव में है। साथ ही इसमें विद्यार्थी किसी कार्य को करने के लिए समूहों में मिलकर कार्य करते हैं। शिक्षा सुधारक जॉन डेवी ने इस सिद्धांत को पेश किया। समूह का सावधानीपूर्वक चयन करना शिक्षक का उत्तरदायित्व है। प्रत्येक सदस्य सीखने के लिए जिम्मेदार है। और साथ ही, अपने साथियों को जो सिखाया जाता है उसे

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SOCIAL EDUCATION

सिखाने के लिए। सहकारी अधिगम एक गतिविधि है जो छात्रों को समूहों में काम करने में मदद करती है। साथ ही, यह उन्हें समूह के सदस्यों को सीखने और सिखाने में सक्षम बनाता है। साथ ही, प्रत्येक सदस्य की सफलता समूह की सफलता पर निर्भर करती है।

सहकारी शिक्षा के प्रकार (Types of Cooperative Learning) :–

सहकारी शिक्षा को 3 भागों में बांटा गया है:–

· औपचारिक शिक्षा (Formal learning)

· अनौपचारिक शिक्षा (Informal learning)

• सहकारी शिक्षा (Cooperative learning)

1. औपचारिक अधिगम :– औपचारिक समूह कार्यों और परियोजनाओं को नियत करता है। साथ ही, असाइनमेंट पूरा होने तक वे एक साथ रहते हैं। समूह की एक स्पष्ट संरचना है। इसके अलावा, शिक्षक समूहों का चयन करता है। असाइनमेंट के आधार पर, समूह विषम और सजातीय हो सकता है। इसी तरह, तीन से पांच–व्यक्ति समूहों को सबसे अधिक उत्पादक माना जाता है।

2. अनौपचारिक अधिगम :– ये औपचारिक अधिगम के ठीक विपरीत हैं। इसके अलावा, वे बहुत अच्छी तरह से संरचित नहीं हैं। आमतौर पर उनमें ऐसी गतिविधियाँ शामिल होती हैं जिनमें कुछ मिनट लगते हैं। इसके अलावा, उनके पास आमतौर पर दो से तीन सदस्य होते हैं। इनका उपयोग त्वरित गतिविधियों जैसे समझने की जांच, त्वरित समस्या समाधान या समीक्षा आदि के लिए उपयुक्त रूप से किया जाता है। ये व्याख्यान के प्रारूप को बदलने में मदद करते हैं। साथ ही, वे छात्रों को एक अवधारणा के बारे में बात करने के लिए कुछ मिनट देते हैं।

3. सहकारी अधिगम :– वे आमतौर पर दीर्घकालिक सहायता समूह होते हैं। साथ ही, उनकी न्यूनतम अवधि एक सेमेस्टर है लेकिन वे वर्षों तक चल सकते हैं। उनकी अवधि के कारण, वे आम तौर पर दोस्त या परिचित बन जाते हैं। सदस्य समूह के बाहर एक दूसरे का समर्थन और सहयोग करते हैं।

सहकारी शिक्षा के तत्व (Elements of Cooperative Learning) :– सहकारी शिक्षा तब होती है जब छात्र एक सामान्य लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए छोटे समूहों में काम करते हैं। शिक्षक इस पद्धति का उपयोग हर वर्ग में कर सकते हैं। इस सीखने की पद्धति में, छात्र एक दूसरे के साथ बातचीत से कमाई कर सकते हैं। एक साथ काम करके, वे एक दूसरे के विचारों का विश्लेषण कर सकते हैं और अपने विचारों को स्पष्ट कर सकते हैं। प्रभावी होने के लिए, छोटे समूह सीखने के पाँच आवश्यक घटक हैं:–

1. सकारात्मक अन्योन्याश्रयता :– का अर्थ है कि उनके पास स्पष्ट लक्ष्य या लक्ष्य हैं। साथ ही, उनके प्रयास से न केवल खुद को बल्कि समूह को भी मदद मिलती है। सकारात्मक अन्योन्याश्रयता व्यक्तिगत सफलता के लिए प्रतिबद्ध है। साथ ही समूह के प्रत्येक सदस्य की सफलता।

2. व्यक्तिगत और समूह जवाबदेही :– समूह अपने कार्यों के लिए जवाबदेह है। साथ ही, सदस्य अपने उचित योगदान के लिए जवाबदेह हैं। और समूह के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भी। इसके अलावा कोई भी दूसरों के काम की नकल या चोरी नहीं कर सकता है। सभी के प्रदर्शन का आकलन किया जाना चाहिए। और उसका परिणाम समूह को देना चाहिए।

3. छोटा समूह और पारस्परिक कौशल :– छोटे समूह और पारस्परिक कौशल को समूह के हिस्से के रूप में पूरा करने की आवश्यकता होती है। मूल रूप से, वे टीमवर्क कौशल हैं। आत्म–प्रेरणा, कुशल नेतृत्व, निर्णय लेने, विश्वास निर्माण, संचार और संघर्ष प्रबंधन बुनियादी कौशल हैं।

4. प्रोत्साहक आमने–सामने बातचीत :– इसका मतलब है कि छात्र संसाधनों को विभाजित करके एक–दूसरे की सफलता को साझा करते हैं। साथ ही, यह जानने के लिए कि वे मदद करते हैं, आत्मविश्वास देते हैं, समर्थन देते हैं, और एक दूसरे के काम की प्रशंसा करते हैं। शैक्षिक और व्यक्तिगत दोनों इस सामान्य लक्ष्य का हिस्सा हैं।

Notes For Pyscum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

5. समूह प्रसंस्करण :– समूह के सदस्यों को दूसरों के साथ खुलकर संवाद करने के लिए स्वतंत्र अनुभव की आवश्यकता होती है। साथ ही, वे एक–दूसरे की चिंता महसूस करते हैं और उपलब्धियों पर प्रसन्न होते हैं। इसके अलावा, उन्हें लक्ष्य प्राप्त करने और सहायक कार्य संबंध बनाए रखने के बारे में बातचीत करनी चाहिए।

उसी समय, निम्नलिखित विशेषताओं को मौजूद होना चाहिएः–

· सहकारी अधिगम गतिविधियों को डिजाइन करते समय, शिक्षकों को स्पष्ट रूप से छात्रों को उनकी व्यक्तिगत जिम्मेदारी और समूह की जवाबदेही की पहचान करने की आवश्यकता होती है।

· प्रत्येक सदस्य के पास एक कार्य होना चाहिए जिसके लिए वे जिम्मेदार हैं और जिसे अन्य सदस्यों द्वारा पूरा नहीं किया जा सकता है।

साइड–नोट :– यह लेख "सहकारी" और "सहयोगी" शब्दों का परस्पर उपयोग करता है। हालाँकि, कुछ शोधकर्ता इन दो प्रकार के सीखने के बीच अंतर करते हैं, मुख्य अंतर को रेखांकित करते हुए कि सहयोगी शिक्षण मुख्य रूप से गहन शिक्षण पर केंद्रित है।

फ़ायदे (Benefits) :– शिक्षक कई कारणों से समूह कार्य और इस प्रकार सहकारी अधिगम का बार–बार उपयोग करते हैंः–

1. चीजें बदलें :– आपके निर्देश में विविधता होना फायदेमंद है; यह छात्रों को व्यस्त रखता है और आपको बड़ी संख्या में शिक्षार्थियों तक पहुंचने में सक्षम बनाता है। सहकारी शिक्षा छात्रों और शिक्षकों की भूमिकाओं को भी बदल देती है क्योंकि शिक्षक सीखने के सूत्रधार बन जाते हैं, यदि आप चाहें तो मार्गदर्शन करते हैं, और छात्र अपने स्वयं के सीखने के लिए अधिक जिम्मेदारी लेते हैं।

2. जीवन कौशल :– सहयोग महत्वपूर्ण कौशल हैं जिनका उपयोग छात्र अपने स्कूली शिक्षा के वर्षों से बहुत आगे तक करना जारी रखेंगे। कार्यस्थल में प्रमुख तत्वों में से एक सहयोग है, और हमें अपने छात्रों को सहयोग करने, जिम्मेदार और जवाबदेह होने और प्रभावी पेशेवर जीवन के लिए अन्य पारस्परिक कौशल रखने के लिए तैयार करने की आवश्यकता है। सहकारी शिक्षण भी छात्रों के आत्म–सम्मान, प्रेरणा और सहानुभूति को बढ़ावा देने के लिए सिद्ध होता है।

3. गहरी सीख :– दूसरों के साथ सहयोग करने से छात्रों की सोच और सीखने पर एक शक्तिशाली और सकारात्मक प्रभाव पड़ता है– अच्छी तरह से निष्पादित सहकारी शिक्षण कार्यों के माध्यम से, छात्र अक्सर सामग्री की अपनी समझ को गहरा करते हैं। छात्र विचारशील प्रवचन में संलग्न होते हैं, विभिन्न दृष्टिकोणों की जांच करते हैं, और सीखते हैं कि कैसे उत्पादक रूप से असहमत होना चाहिए।

सह–शिक्षण रणनीतियाँ (Co & teaching strategies) :– सभी शैक्षणिक स्तरों पर छात्र वैकल्पिक असाइनमेंट और छोटे समूह की गतिविधियों में अधिक शिक्षक ध्यान से लाभान्वित होते हैं जो सह–शिक्षण संभव बनाता है। सह–शिक्षण सामान्य शिक्षा में अधिक गहन और व्यक्तिगत निर्देश की अनुमति देता है, विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए कलंक को कम करते हुए सामान्य शिक्षा पाठ्यक्रम तक पहुंच बढ़ाता है। छात्रों के पास विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए अपनी समझ और सम्मान बढ़ाने का अवसर है। विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के पास निर्देश की निरंतरता के लिए एक बड़ा अवसर होता है क्योंकि शिक्षक पेशेवर समर्थन और शिक्षण प्रथाओं के आदान–प्रदान से लाभान्वित होते हैं क्योंकि वे सहयोगात्मक रूप से काम करते हैं। सह–शिक्षण में दो या दो से अधिक प्रमाणित पेशेवर शामिल होते हैं जो पारस्परिक स्वामित्व, एकत्रित संसाधनों और संयुक्त जवाबदेही के साथ विशिष्ट सामग्री या उद्देश्यों के लिए प्राथमिक रूप से एकल कक्षा कार्यक्षेत्र में छात्रों के एक समूह के लिए निर्देशात्मक जिम्मेदारी साझा करने के लिए अनुबंध करते हैं।

- उच्च उत्तोलन प्रथाओं को शामिल करें। सह–शिक्षण के हर पहलू में एचएलपीएस पर जोर देना चाहिए।
- सह–योजना मेगा, मैक्रो, और सूक्ष्म स्तर। मेगा–स्तरीय योजना में स्कूल वर्ष के लिए समग्र योजनाएँ (अवधारणाएँ, इकाइयाँ, पुस्तकें/अध्याय) शामिल हैं। मैक्रो–प्लानिंग हर तिमाही, इकाई या अध्याय में होती है। माइक्रो–प्लानिंग दिन–प्रतिदिन की योजना है और यदि मेगा– और मैक्रो–प्लानिंग हुई है तो यह अधिक प्रबंधनीय होगी।

Notes For Pyqsum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION

- अपनी प्रतिक्रियाओं पर विचार करें। आपके सह–शिक्षक क्या करते हैं, आप इसका जवाब कैसे देते हैं, और आपके कार्यों के परिणाम पर प्रतिबिंबित करने के लिए समय निकालें, क्या प्रतिक्रिया देने का कोई अलग तरीका है जो आपकी भावनाओं को संप्रेषित करेगा और बेहतर परिणाम प्राप्त करेगा?
- सीखना जारी रखें। सोचें कि आप एक टीम के रूप में सह–शिक्षण "बेहतर करें" को कैसे लागू करेंगे। सहयोगी रूप से आजीवन सीखने वाले बनने के लिए शिल्प तरीके जो उनकी अनुकूलता, समानता और प्रभावशीलता की प्रतिबिंबित रूप से सराहना करते हैं और उनका विस्तार करते हैं।
- ऐसी रणनीतियों का उपयोग करें जो सभी शिक्षार्थियों को उच्च गुणवत्ता वाले मूल निर्देश प्रदान करें। ऐसे संसाधनों तक पहुंचें जो इस बारे में सोचने में मदद करते हैं कि छात्र क्या करने में सक्षम हो सकते हैं।

बहुत से उपलब्ध शोध सह–शिक्षण के विभिन्न मॉडलों को वर्गीकृत करते हैं।

- एक पढ़ाना, एक अवलोकन करनाः एक सह–शिक्षक की प्राथमिक निर्देशात्मक जिम्मेदारी होती है जबकि दूसरा सह–शिक्षक छात्रों या (निर्देश देने वाले) शिक्षक पर विशिष्ट अवलोकन संबंधी जानकारी एकत्र करता है। इस रणनीति की कुंजी अवलोकन पर ध्यान केंद्रित करना है।
- वन टीच, वन असिस्टः एक सह–शिक्षक की प्राथमिक निर्देशात्मक जिम्मेदारी होती है जबकि दूसरे सह–शिक्षक छात्रों को उनके काम में सहायता करते हैं, व्यवहार की निगरानी करते हैं, या असाइनमेंट को ठीक करते हैं।
- स्टेशन शिक्षणः सह–शिक्षण जोड़ी निर्देशात्मक सामग्री को भागों में और छात्रों को समूहों में विभाजित करती है। समूह प्रत्येक स्टेशन पर एक निर्धारित समय व्यतीत करते हैं। ऑफ टेन एक स्वतंत्र स्टेशन का उपयोग किया जाएगा।
- समानांतर शिक्षणः प्रत्येक सह–शिक्षक आधे छात्रों को निर्देश देता है। दो सह–शिक्षक एक ही शिक्षण सामग्री को संबोधित कर रहे हैं और एक ही शिक्षण रणनीति का उपयोग करके पाठ प्रस्तुत कर रहे हैं। सबसे बड़ा लाभ छात्र–शिक्षक अनुपात में कमी है।
- पूरक शिक्षणः यह रणनीति एक सह–शिक्षक को उनके अपेक्षित ग्रेड स्तर पर छात्रों के साथ काम करने की अनुमति देती है, जबकि दूसरा सह–शिक्षक उन छात्रों के साथ काम करता है, जिन्हें जानकारी या सामग्री को विस्तारित या उपचार की आवश्यकता होती है।
- विभेदित शिक्षणः वैकल्पिक शिक्षण रणनीतियाँ एक ही जानकारी को पढ़ाने के लिए दो अलग–अलग दृष्टिकोण प्रदान करती हैं। सीखने का परिणाम सभी छात्रों के लिए समान है; हालाँकि, शिक्षण पद्धति अलग है।
- टीम टीचिंगः टीम द्वारा पढ़ाए गए पाठ जो सुनियोजित होते हैं, प्राधिकार के निर्धारित विभाजन के साथ निर्देश के अदृश्य प्रवाह को प्रदर्शित करते हैं। एक टीम शिक्षण रणनीति का उपयोग करते हुए, दोनों शिक्षक पाठ में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं। एक छात्र के दृष्टिकोण से, कोई स्पष्ट रूप से परिभाषित नेता नहीं है, क्योंकि दोनों शिक्षक निर्देश साझा करते हैं, गठन में हस्तक्षेप करने के लिए स्वतंत्र हैं, और छात्रों की सहायता करने और सवालों के जवाब देने के लिए उपलब्ध हैं।

Notes For Pyssum
EXAM TRICKY
SPECIAL EDUCATION